नारायण दत्त श्रीमाली

रत्न ज्योतिष

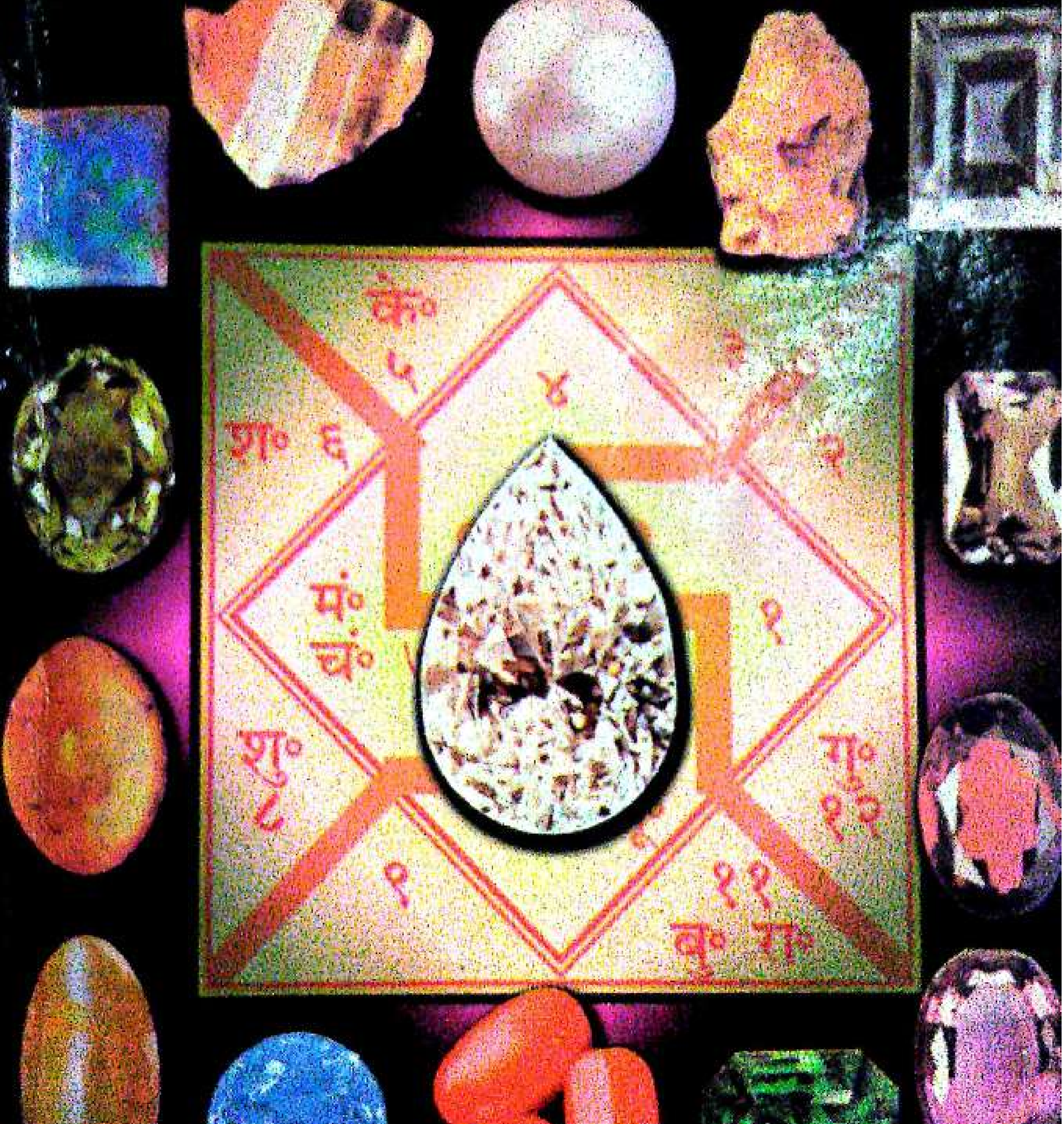

रत्न और ग्रहों का सम्पूर्ण प्रामाणिक विवेचन

धर्मशिक्षक, आदित्य नाथ पाण्डेय, ग्राम-चन्दापुर, पोस्ट-भवानीपुर, तह० व थाना-चुनार, जिला-मिर्जापुर (उ०प्र०) पिन-231304.

ज्योतिष विज्ञान मनुष्य के भाग्य और भविष्य की विवेचना करता है।

जन्मकुण्डली बनाई जाती है तो उसका केवल यही अभिप्राय होता है कि बालक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह किस स्थान पर था और उसका कितना प्रभाव बालक के जन्म-स्थान पर पड़ रहा था।

ऐसी स्थिति में ग्रह की पुष्टता के लिए उससे सम्बन्धित धातु एवं रत्न धारण करना आवश्यक है।

जिस प्रकार एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में विद्युत प्रवाहित की जा सकती है, उसी प्रकार वह रत्न उन विशेष रश्मियों को सोखकर मानव शरीर में प्रवाहित करता है। विशिष्ट रत्नों के माध्यम से विशिष्ट रश्मियों को लेने से मानव-जीवन सुखी एवं सानन्द हो जाता है।

नवग्रह क्या हैं ? किस ग्रह में रत्न पहनें, रत्न किस धातु में पहनें ?

रत्न ज्योतिष और राशि दर्पण पढ़ने एवं समय-समय पर व्यवहार में लाने योग्य पुस्तक है।

रत्न ज्योतिष और राशि दर्पण

हमारे कुछ उपयोगी प्रकाशन :

मंत्र और ज्योतिष
ज्योतिष रहस्य
आपकी राशि
शनि और साढ़ेसाती
कुण्डली दर्पण
स्वप्न संहिता
आपकी भाग्यरेखाएं
सर्वमनोकामना सिद्धि
आइए ज्योतिष सीखें I
आइए ज्योतिष सीखें II
सुखी जीवन
संकल्प-शक्ति
सुख का आधार मेहनत
व्यक्तित्व का विकास
आप क्या नहीं कर सकते
भागो नहीं, दुनिया को बदलो
उठो, महान बनो
उन्नति कैसे करें ?
अपने को पहचानो
अलौकिक शक्तियां
चिन्ता हटाओ, सुख पाओ
जीना सीखो
आगे बढ़ो
सफलता की कुंजी

रत्न ज्योतिष और राशि दर्पण

प्रस्तुति :
डा० नारायण दत्त श्रीमाली

साधना पॉकेट बुक्स
रोशनआरा रोड, दिल्ली-110007

प्रकाशक
न्यू साधना पॉकेट बुक्स
70, रोशनआरा प्लाजा,
रोशनआरा रोड, दिल्ली-11000
दूरभाष: 32536004

एकमात्र वितरक :
साहनी पब्लिकेशन्स
4777, डॉ0 मित्रा गली,
रोशनारा रोड़, दिल्ली-7
दूरभाष : 23982006, 23970751

भारतीय कापीराइट एक्ट के तहत इस पुस्तक में प्रकाशित सामग्री एवं रेखाचित्रों के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं। कोई भी व्यक्ति/संस्था/समूह आदि इस पुस्तक की आंशिक या पूरी सामग्री किसी भी रुप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वाले को कानूनी तौर पर हर्जे-खर्चे व हानि में उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षेत्र दिल्ली रहेगा।

ISBN- 81-8393-129-4

E-mail : sahni@sahnipublications.com
Website : www.sahnipublications.com

मूल्य : 60-00 रुपये

संस्करण : 2011

मुद्रक: ए ए प्रिन्टर्स: फ़ोन: 23911799

रत्न ज्योतिष और राशि दर्पण

विषय सूची

1. प्रवेश ९-१३

ग्रह—ग्रहों का प्रभाव, ग्रहों का बाह्य तथा आंतरिक प्रभाव, ग्रहों—सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु के कारकतत्व व फल।

2. ग्रह और रत्न १४-१८

रत्न—रत्न क्यों पहने जायें ? विशेष ग्रहों के विशेष रत्न ही क्यों ? रत्नों पर सम्बन्धित ग्रहों का प्रभाव। ग्रह, ग्रहों की धातु, ग्रहों से सम्बन्धित रत्न। पंच धातु। रत्न—रत्न के संस्कृत नाम, अंग्रेजी नाम, फारसी नाम। राशियां—राशियों के नाम, राशियों से सम्बन्धित रत्न। अंग्रेजी महीनों में बालक का जन्म, अंग्रेजी महीनों से सम्बन्धित रत्न एवं प्रभाव।

3. रत्नों का इतिहास १९-२२

रत्न—रत्नों का वैदिक इतिहास मत-मतान्तर। स्वर्ग लोक के रत्न, पाताल लोक के रत्न, मृत्यु लोक के रत्न। विविध रत्न व उनकी उत्पत्ति व प्रभाव।

4. माणिक—सूर्य—रत्न २३-३०

माणिक—माणिक के हिन्दी, संस्कृत, फारसी नाम। माणिक के रंग माणिक के गुण। माणिक की परीक्षा करने की विधियाँ। माणिक के ग्यारह दोष। माणिक के उपरत्न, उपरत्नों की परीक्षा, उपरत्नों के गुण, उपरत्नों का प्रभाव, उपरत्नों के दोष। माणिक कौन पहिने, रोगों पर माणिक का प्रभाव। माणिक का प्रयोग। सूर्य-मन्त्र

माणिक रत्न की दान विधि। सूर्य-यंत्र पूजा एवं प्रयोग। मुक्तक वजन। फल, उपसंहार।

५. मोती—चन्द्र-रत्न ३१-४०

मुक्तक—मोती के संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी नाम। मोती के मुख भेद। गज-मुक्तक, सर्प-मुक्तक, वंश-मुक्तक, शंख-मुक्तक, शूकर-मुक्तक, मीन-मुक्तक, आकाश-मुक्तक, मेष-मुक्तक, सीप-मुक्तक भेद व फल। मोती के गुण। शुद्ध मोती की परीक्षा। मोतियों में दोष। मोती के उपरत्न। चन्द्रमणि, चन्द्रमणि के प्रकार। मोती·कौन पहने ? रोगों पर मोती का प्रभाव। मोती का प्रयोग। विधि चन्द्र-मन्त्र। चन्द्र-यन्त्र, पूजा एवं प्रयोग। मुक्तक-वजन, उपसंहार।

६. मूँगा-मंगल-रत्न ४०-४५

मूँगा—संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी नाम। मूँगू के मुख्य गुण। शुद्ध मूँगे की परीक्षा। मूँगे के दोष। मूँगे के उपरत्न। धारण व प्रयोग। गुण। मूँगा कौन पहने ? रोगों पर मूँगे का प्रभाव। मूँगे का प्रयोग मंगल-मन्त्र। मूँगे की दान-विधि। मूँगे का वजन। उपसंहार।

७. पन्ना—बुध रत्न ४६-५०

पन्ना—संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी नाम। पन्ने के मुख्य गुण। शुद्ध पन्ने की परीक्षा। पन्ने के दोष। पन्ने के उपरत्न। धारण व प्रयोग, उपरत्नों के गुण। पन्ना कौन पहने ? रोगों पर पन्ने का प्रभाव, पन्ने का प्रयोग। बुद्ध-मन्त्र। पन्ने की दान-विधि। पन्ने का वजन। उपसंहार।

८. पुखराज—बृहस्पति-रत्न ५१-५५

पुखराज—संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी नाम। पुखराज के मुख्य रंग। पुखराज के गुण। शुद्ध पुखराज की परीक्षा। पुखराज में पाये जाने वाले प्रमुख दोष। पुखराज के उपरत्न। पुखराज कौन पहने ? रोगी पर पुखराज का प्रभाव। पुखराज का प्रयोग। गुरु-मन्त्र। पुखराज-वजन। उपसंहार।

९. हीरा—शुक्र-रत्न ५६-६१

हीरा—संस्कृत, हिन्दी, फारसी, अंग्रेजी नाम। हीरे की विविधता। हीरे के गुण। सच्चे हीरे की परीक्षा। हीरे की विशेषताएँ। हीरे में पाये जाने वाले प्रमुख दोष। हीरे के उपरत्न। हीरे का प्रभाव। हीरा कौन पहने ? रोगों पर हीरे का प्रभाव। हीरे का प्रयोग। शुक्र-मन्त्र। हीरे का वजन। उपसंहार।

१०. नीलम—शनि-रत्न ६२-६६

नीलम—नीलम के हिन्दी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी नाम। नीलम के प्रमुख गुण। सच्चे नीलम की परीक्षा। साढ़ेसाती। साढ़ेसाती में नीलम का प्रयोग एवं प्रभाव। नीलम में पाये जाने वाले प्रमुख दोष। नीलम के उपरत्न। नीलम कौन पहने ? नीलम का प्रयोग। शनि-मंत्र। नीलम-वन। उपसंहार।

११. गोमेदक—राहु रत्न ६७-७०

गोमेदक—गोमेदक के हिन्दी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी नाम। गोमेदक के प्रमुख गुण। सच्चे गोमेदक की परीक्षा। गोमेदक की विशेषतायें। गोमेदक में पाये जाने वाले प्रमुख दोष। गोमेदक के उपरत्न, प्रभाव एवं प्रयोग। गोमेदक कौन पहने ? गोमेदक का प्रयोग। राहु का वेदोक्त मन्त्र। गोमेदक का वजन। उपसंहार।

१२. लहसुनिया—केतु-रत्न ७१-७५

लहसुनिया—लहसुनिया के हिन्दी, फारसी, संस्कृत, अंग्रेजी नाम। लहसुनिया के प्रमुख गुण। सच्चे लहसुनिया की परीक्षा। लहसुनिया की विशेषताएं। लहसुनिया में पाये जाने वाले प्रमुख दोष। रोगों पर लहसुनिया का प्रभाव। लहसुनिया के उपरत्न। प्रभाव एवं प्रयोग। लहसुनिया कौन पहने ? लहसुनिया का प्रयोग। केतु का वेदोक्त मंत्र। लहसुनिया का वजन। उपसंहार।

१३. नवग्रह-यंत्र ७६-७९

सूर्य-यंत्र, सूर्य दान, सूर्य जप संख्या, सूर्य जप मंत्र। चन्द्र-यन्त्र। चन्द्र दान, चन्द्र जप संख्या, चन्द्र जप मन्त्र। मंगल-यंत्र, मंगल दान, मंगल जाप संख्या, मंगल जप मन्त्र। बुध-यन्त्र, बुध-दान, बुध जप संख्या, बुध जप मन्त्र। गुरु-यन्त्र, गुरु-दान, गुरु जप संख्या, गुरु जप मन्त्र। शुक्र-यन्त्र, शुक्र दान, शुक्र जप संख्या, शुक्र जप मन्त्र। शनि-यन्त्र, शनि दान, शनि जप संख्या, शनि जप मन्त्र। राहु-यन्त्र, राहु दान, राहु जप संख्या, राहु जप मन्त्र। केतु-यन्त्र, केतु दान, केतु जप संख्या, केतु जप मन्त्र। उपसंहार।

१४. प्राण-प्रतिष्ठा ८०-८१

संकल्प, प्राण-प्रतिष्ठा विधि, प्राण-प्रतिष्ठा मन्त्र, उपसंहार।

१५. राशि दर्पण ८२-११३

राशि बोधक चक्र, राशि स्पष्ट चक्र, राशि स्वामी बोधक चक्र, मेष राशि, वृष राशि, कर्क राशि, सिंह राशि, तुला राशि, वृश्चिक राशि, धनु राशि, मकर राशि, कुम्भ राशि, मीन राशि।

१६. मोतियों के आभूषण खरीदने से पहले जानिए ११४-११७

१७. रत्नों का ऐतिहासिक विवरण ११८-१२१

१८. मोती एवं स्वर्ण की जानकारी १२२

१९. रत्न, विविध पहलू १२३

२०. रत्नों की उपयोगिता १२४-१२५

१. प्रवेश

प्रत्येक व्यक्ति अपना भावी जीवन, जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएं और घात-प्रतिघात जानने के लिए उत्कंठित रहता है। इस भावी जीवन को पहले से ही जान लेने के लिए भारतीय ऋषियों ने कई सिद्धान्त प्रतिपादित किए हैं, जिनमें सामुद्रिक-शास्त्र ज्योतिष, ताजिक रमल आदि मुख्य हैं। सामुद्रिक और ज्योतिष मनुष्य की वे प्रारम्भिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं जिन्हें आर्य ऋषि सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त कर चुके थे। प्रत्येक विज्ञान का आधार जिज्ञासा रहा है। इस जिज्ञासा के ही कारण असभ्य और बर्बर मानव सभ्यता के पथ पर चलता हुआ आज अणु युग में प्रवेश पा चुका है, जहां खड़ा रहकर वह न केवल पृथ्वी, अपितु आकाश के छोरों तक भी हाथ पहुँचाने लगा है।

भारतीय ज्योतिष पद्धति के अनुसार सात मुख्य ग्रह हैं, जो कि निरन्तर हमारे जीवन को संचालित करते रहते हैं। ये ग्रह हैं—सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि। राहू और केतु दो ऐसे छायाग्रह हैं, जिनका भी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रभाव हमारे जीवन पर देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त पाश्चात्य ज्योतिर्विदों ने हर्सल, प्लूटो और नेपच्यून—इन तीन ग्रहों की नई खोज की है, परन्तु इनकी गति इतनी धीमी है कि मानव-जीवन पर इनका प्रभाव स्पष्टत: देखा नहीं जाता। वस्तुत: नौ ग्रह हैं और उनमें भी प्रथम सात ग्रह मानव-जीवन के बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व का संचालन करते रहते हैं। संक्षेप में ग्रहों के रूप एवं उनके प्रतीक इस प्रकार है—

बाह्य व्यक्तित्व रूप *ग्रह* *प्रभाव*

प्रथम रूप—बृहस्पति—शरीर, धर्म, कानून, सौन्दर्य, प्रेम, शक्ति आदि के रूप में।

द्वितीय रूप—मंगल— इन्द्रिय ज्ञान, आनन्द, इच्छा, साहस, दृढ़ता, आत्मविश्वास आदि के रूप में।

तृतीय रूप—चन्द्रमा— शारीरिक, मस्तिष्क में होने वाले परिवर्तन,

संवेदन-भावना, कल्पना, लाभेच्छा आदि के प्रतीक रूप में ।

आन्तरिक व्यक्तित्व–

प्रथम रूप– शुक्र–निःस्वार्थ प्रेम, भ्रातृत्व-स्नेह, स्वच्छता, कार्यक्षमता, परख, बुद्धि आदि के प्रतीक रूप में।

द्वितीय रूप– बुध–आध्यात्मिक शक्ति, निर्णय, बुद्धि, स्मरण-शक्ति, सूक्ष्म कला प्रेम, तर्क, खण्डन-मण्डन के प्रतीक रूप में।

तृतीय रूप– सूर्य–दैवत्व, सदाचार, इच्छाशक्ति, प्रभुता, ऐश्वर्य, महत्त्वाकांक्षा, आत्मविश्वास, सहृदयता आदि के प्रतीक रूप में।

अन्तःकरण– शनि–तात्विक ज्ञान, नायकत्व, मननशीलता, धैर्य, दृढ़ता, गम्भीरता, सतर्कता, कार्यक्षमता आदि के प्रतीक रूप में।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मानव-जीवन के विभिन्न अवयवों के प्रतीक सौर-मण्डल के सात ग्रह हैं, जिनका प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है।

इसके अतिरिक्त प्रमुखतः सूर्य आत्मा, चन्द्रमा मन, मंगल धैर्य, बुध वाणी, बृहस्पति ज्ञान, शुक्र वीर्य और शनि संवेदना का प्रतिनिधित्व करता है।

नव ग्रहों में से प्रत्येक ग्रह संसार की वस्तुओं, जीवों एवं स्थितियों आदि का कोई न कोई अंश अपने-आपमें सँजोए हुए होता है, अतः प्रत्येक ग्रह किसी न किसी विशेष गुण-दोष का प्रतिनिधित्व करता ही है। पाठकों की जानकारी के लिए प्रत्येक ग्रह किन वस्तुओं एवं स्थितियों का कारक है, इसकी जानकारी दी जा रही है–

सूर्य–

पिता, प्रताप, आरोग्य, मन की शुद्धता, रुचि, ज्ञान, आत्म-प्रभाव, हृदय, पीठ, नाड़ी, कर्म, राज्य-कृपा, ईश्वर, हड्डियाँ, दाहिनी आँख, व्यवहार, शरीर, बड़े भाई का सुख, विद्युत् सम्बन्धी कार्य, व्यवस्थापक, इंजीनियर, वृद्धता, न्याय सम्बन्धी कार्य करने वाले, जवाहरात का कार्य, औषधि, फोटोग्राफी,

ऊनी कपड़ों का व्यापार, राजदूतावास, द्यूत कार्य आदि।

चन्द्रमा–

माता, मन, यश, पुष्टता, बुद्धि, राज्य-कृपा, सम्पति, मातृ चिन्ता, कविकर्म, निद्रा, कीर्ति, कला-प्रेम, व्याधि, दवाइयाँ, अनाज, किराना, वस्तुओं का व्यापार, सिंचाई कार्य, पानी, नमक, आयात-निर्यात, टकसाल, काँच के कारखाने, रेलवे, जहाज, डेयरी, रक्त, बाईं आँख, फेफड़े, छाती, स्मरणशक्ति, आवेग, भावनाएँ, श्वेत रंग, चाँदी, मोती आदि।

मंगल–

वीरता, धैर्य, साहस, युद्ध, लूटमार, रक्त सम्बन्धी बीमारियाँ, प्रदोष, गर्भ, प्रदर, रज, पित्त, वायु, कर्ण रोग, विशूचिका, खुजली, छोटा भाई, रक्षा-विभाग, पुट्ठे, सिर, अण्डकोश, चौर्य कार्य, चतुराई, हड्डी का आन्तरिक तत्व, मज्जा, डाकाजनी, पुलिस विभाग, मिलिटरी विभाग, स्वदेश प्रेम, रक्षा-कार्य आदि।

बुध–

परीक्षा (लिखित, मौखिक), विद्यार्थी, पेट के रोग, वायु-रोग, कोढ़, मंदाग्नि, भूत-बाधा, प्रेत-चिन्ता, आलस्य, सिरदर्द, पागलपन, मस्तिष्क सम्बन्धी रोग, व्यर्थ अभिमान, कल्पनाशक्ति, स्मरणशक्ति की शिथिलता, कर्कश स्वर, श्वास रोग, दमा, कफ की अधिकता, गूँगापन, हकलाहट, गन्दे विचार, डाकतार विभाग, शेयर बाजार, बैंक, बीमा, वाणिज्य कार्य, कम्पनियाँ, फर्में, विज्ञान, गणित कार्य, मातृभाषा, श्वास नली, माया, बुद्धि, चेतना, खेलकूद, नपुंसकत्व, कलई, मानसशास्त्र, भाषण, कला, टाइपिस्ट, ज्योतिष कार्य, हस्तरेखा विशेषज्ञ, एकाउन्टेन्ट आदि।

बृहस्पति–

मांगलिक कार्य, धार्मिक कार्य, तीर्थयात्रा, शिक्षा, वेद पठन, शास्त्र चर्चा, स्वर्ण धान्य, पुत्र, चिन्तन, ज्ञान, वित्त, शरीर-यष्टि, शोक, वात रोग, यज्ञ-पूजन, मित्र सुख, तन्त्र-मन्त्र, गंज, तुरंग, जीवन उपाय, आजीविका, सिंहासन, वाक्पटुता, व्याख्याता, लेखक, प्रकाशक, काव्य, राज्यकृपा, महत्त्वपूर्ण पद, गजेटेड अधिकारी, सचिव, आचार्य, स्मृति, उन्नति, भक्ति, मोह, सम्मान, भाग्य, कीर्ति, विधान सभा, लोक सभा की सदस्यता, वकील, न्यायाधीश, जाँघें, पैर, दाहिना कान, सर्व सुख, राज्याधिकार, तीव्र बुद्धि, क्षमता, संकट में धीरता, सहायता भावना, विवेक, निर्भयता, सादा रहन-सहन आदि।

शुक्र–

वस्त्र, रत्न-भूषण, धन, सुगन्धित पदार्थ, पुष्प, इत्र, गीत, काव्य, कवि, कोमलता, यौवन, वैभव, साहित्य चर्चा, वशीकरण, इष्ट सिद्धि, कला प्रेम, मधुरवाणी, गायन-वादन, फर्नीचर, स्त्री, प्रेमिका, प्रेमी। वाहन–कार, मोटर, वायुयान, दान, हंसी-मजाक, सौन्दर्य, क्रीड़ा, नृत्य-विलास, कामाग्नि, कामेच्छा, वीर्य, रमण, शय्या स्थान, विवाह, इन्द्र-जाल, आँख, रक्त, कफ, वात, स्त्री-सुख सम्बन्धी रोग–प्रमेह, मेद वृद्धि, वीर्य-विकार, पुरुषार्थ पसन्द, भागीदारी, जल, नर्स प्रशिक्षण स्त्री-अधिकारी, पुरातत्व प्रेम, पुरातत्वाचार्य, पद, स्वतन्त्र व्यवसाय, प्राचीन संस्कृति का अभिमान, पशुधन, स्टेशनरी, कपड़े का व्यापार, फेंसी स्टोर, सट्टा, जुआ, फिल्म व्यवसाय, रेस, मद्य, स्त्रियों से लाभ, इश्कबाजी में यश, मिष्ठान, दास-दासी, व्यभिचार, शराब का व्यापार, शरीर के ध्वनि सम्बन्धी अवयव, अंडाशय, टाँसिल, स्त्री रोग, पेट की जलन, मासिक धर्म, कन्या सन्तान आदि।

शनि–

ठण्डक, नपुंसकत्व, पत्थरों का व्यापार, नीच कार्य, श्रम उन्माद, वात रोग, भगन्दर, गठिया, स्नायु रोग, अन्धकार, रुकावट, पृथकता तलाक, पति या पत्नी में अनबन, मतभेद, दुष्टता, राजदूत पद, वध, ठग, जेबकतरे, अल्पगति, दीर्घ प्रभाव, निम्न स्तर के लोगों से मुलाकात, समाज कल्याण विभाग, कर्कश वाणी, काला रंग, साधुत्व, संन्यासी, योगी, दार्शनिक, लोहे का व्यापार, तिल आदि का व्यापार, मशीनरी कार्य, मशीनों के पार्टस् का व्यापार, पेट्रोल, चमड़ा आदि।

राहू–

अनिन्द्रा, तर्कशक्ति, तार्किक स्वभाव, छिद्रान्वेषण, स्थानिक स्वायत्त संस्थाएँ–म्युनिसिपैलिटी, जिला परिषद, विधान सभा, लोक सभा, कमीशन एजेंट, विज्ञापन, रबड़, डामर, गाँजा, भाँग, अफीम, उन्मादावस्था, हिस्टीरिया, मेस्मेरिज्म, सर्कस, बकवाद, उच्छृंखलता, भ्रम, भूतबाधा, दादा की स्थिति, अफवाहें, प्रचार विभाग, पूर्वजों का गुणगान, आकस्मिकता, विलक्षणता, चौंकाने वाले कार्य, अस्पष्ट व्यवहार, गबन, विश्व बन्धुत्व, आध्यात्मिक उन्नति, खेल–ताश, कैरम, पहेलियाँ आदि।

केतु–

चर्मरोग, क्षुधा, पिशाच-बाधा, तरंगें, समुद्र जीवन, कठिन कार्य, नीच एवं निम्न स्तर के कार्य, फूहड़ बातें, अव्यवहार, कृशता, दुष्टता, पाप, बलात्कार आदि।

अभी हमने मुख्य ग्रहों एवं उनसे सम्बन्धित कारकत्व पर विचार किया। सम्बन्धित कारकत्व का प्रतिनिधित्व सम्बन्धित ग्रह करते हैं, अत: जन्मकुण्डली में, जो ग्रह कमजोर, नीच राशि में या दुष्ट स्थानों में होगा तो उससे सम्बन्धित पदार्थों पर भी हल्का प्रभाव रहेगा तथा शुभ और बलवान होगा तो उससे सम्बन्धित कारकत्व भी पुष्टता प्राप्त करते हैं।

◆◆◆

२. ग्रह और रत्न

मानव-जीवन निरन्तर पल-प्रतिपल ग्रहों से ही संचालित होता है, और ये समस्त ग्रह आकाशमण्डल में निरन्तर अपनी धुरी पर घूमते हुए निर्दिष्ट समय में पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते रहते हैं।

प्रत्येक ग्रह की स्वयं की किरणें या रश्मियाँ होती हैं। पृथ्वी के चारों ओर घूमते समय न्यूनाधिक रूप में इन ग्रहों की रश्मियाँ पृथ्वी पर पड़ती रहती हैं। उदाहरणार्थ ग्रीष्मकाल में सूर्य ठीक हमारे ऊपर होता है, अतः उसकी किरणें भी सीधी पृथ्वी पर पड़ती हैं। इन सीधी किरणों का पृथ्वीवासियों पर भी प्रभाव पड़ता है। वे गर्मी से व्याकुल हो जाते हैं और गर्मी के कारण जी घबराने लगता है। इसके विपरीत सर्दी की ऋतु में जब सूर्य तिरछा होता है तो उससे उत्पन्न किरणें भी पृथ्वी पर सीधी न पड़कर तिरछी पड़ती हैं, फलस्वरूप उसकी तीव्रता का आभास भी मनुष्यों को कम ही होता है। इसी प्रकार निर्दिष्ट पथ पर चक्कर लगाते प्रत्येक ग्रह की किरणें पृथ्वी पर पड़ती रहती हैं। जो ग्रह ठीक ऊँचा होता है उसकी किरणें भी तीव्रता से मनुष्य पर पड़ती हैं और जो ग्रह तिरछा या दूर होता है उसकी किरणें भी कम उष्ण और न्यून रूप से ही मानव को प्रभावित कर पाती हैं।

इस प्रकार जब बालक माँ के गर्भ से पहले-पहल पृथ्वी के वायुमण्डल में प्रवेश करता है तो उस समय वह निर्विकार और अरश्मियुक्त होता है, परन्तु ज्योंही वह जन्म लेकर पृथ्वी के वायुमण्डल के सम्पर्क में आता है, त्योंही उस समय समस्त ग्रहों की रश्मियां का प्रभाव उसके निर्विकार शरीर पर छा जाता है। उस समय जिस ग्रह की रश्मिशँ घनीभूत होती हैं, उस ग्रह का प्रभाव उस बालक पर सर्वाधिक रूप में होता है और जिस ग्रह की रश्मियाँ विरल या हल्की होती हैं, उस ग्रह का प्रभाव उस बालक पर कम ही होता है। इस प्रकार पहले-पहल बालक का जिन रश्मियों से आच्छादन होता है, वह उसके उम्र-भर रहता है।

जन्मकुण्डली भी एक प्रकार से तात्कालिक आकाशमण्डल का खाका ही तो है जिससे सहज ही ज्ञात किया जा सकता है कि बालक के जन्म के समय कौन-सा ग्रह किस स्थान पर था, और उनकी रश्मियों का कितना प्रभाव बालक के जन्म-स्थल पर पड़ रहा था।

जिस प्रकार शारीरिक स्वस्थता के लिए यह जरूरी है कि खाद्य, जल, लवण, विटामिन आदि का उचित अनुपात शरीर में हो, इसी प्रकार मानव की श्रेष्ठता एवं सफलता के लिए भी यह जरूरी है कि उसके जीवन पर समस्त ग्रहों का उचित प्रतिनिधित्व हो, क्योंकि प्रत्येक ग्रह जीवन के किसी मुख्य आयाम का प्रतिनिधित्व करता है। एक उत्तम जीवन के लिए यह आवश्यक है कि उसका शरीर स्वस्थ हो, भाग्य प्रबल हो, सन्तान एवं पत्नी का पूर्ण सुख हो तथा आय के उचित साधन हों, जिससे ग्रह सुख-सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत कर सके। इस प्रकार, पुत्र, पत्नी, विलासमय जीवन, आय, भाग्योदय आदि के अलग-अलग कारक ग्रह हैं और इन समस्त ग्रहों का उचित अनुपात ही मानव-जीवन की श्रेष्ठता के लिए आवश्यक है, इनमें से एक भी ग्रह की दुर्बलता मानव-जीवन की अपूर्णता ही कही जायेगी।

ऐसी स्थिति में उस दुर्बल ग्रह की पुष्टता के लिए उससे सम्बन्धित धातु एवं रत्न पहिना जाता है। ग्रह से सम्बन्धित रत्न धारण करने से ऐसा समझना चाहिए कि वह कुण्डली में अब अधिक बलवान हो गया है और उससे सम्बन्धित जो वस्तुएँ या कारक हैं, उनकी वृद्धि उसके जीवन में सम्भव होगी। वैज्ञानिक रूप से इसका तात्पर्य यह है कि एक विशिष्ट रत्न में एक विशिष्ट ग्रह की रश्मियों को सोखने की प्रबल शक्ति है और, जिस प्रकार एक पदार्थ से दूसरे पदार्थ में विद्युत प्रवाहित की जा सकती है, उसी प्रकार वह रत्न उन विशेष रश्मियों को सोखकर मानव-शरीर में प्रवाहित कर देता है। यदि किसी के शरीर में विटामिन की कमी हो, और इस वजह से कमजोर हो रहा हो तो विटामिन की गोलियाँ लेने से उस कमी की पूर्ति हो जाती है और व्यक्ति स्वस्थ एवं सबल बन जाता है। इसी प्रकार विशिष्ट रत्नों के माध्यम से विशिष्ट रश्मियों को लेने से मानव-जीवन सुखी एवं सानन्द हो जाता है।

नीचे पाठकों की जानकारी के लिए ग्रह, उनसे सम्बन्धित धातु और रत्न का विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

क्रम संख्या	ग्रह	धातु	रत्न
१	सूर्य	स्वर्ण	माणिक्य
२	चन्द्रमा	चाँदी	मोती
३	मंगल	स्वर्ण	मूँगा
४	बुध	स्वर्ण, काँसा	पन्ना
५	बृहस्पति	चाँदी	पुखराज
६	शुक्र	चाँदी	हीरा
७	शनि	लोहा, शीशा	नीलम
८	राहू	पंचधातु	गोमेदक
९	केतु	पंचधातु	वैदूर्य (लसणिया)

पंचधातु में स्वर्ण, चाँदी, ताँबा, काँसा और लोहा इन पाँच धातुओं का बराबर भाग लेकर जो पदार्थ बनाया जाता है, उसे पंचधातु कहते हैं। इस पंचधातु की अँगूठी भी तैयार की जाती है।

ग्रह, उससे सम्बन्धित धातु और रत्न का ज्ञान होने के पश्चात् यह आवश्यक है कि रत्नों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की जाय तथा इसके अंग्रेजी, फारसी आदि नामों का भी ज्ञान हो।

क्र. सं.	रत्न	संस्कृत नाम	अंग्रेजी नाम	फारसी नाम
१	माणिक	पद्मराग	रूबी(Ruby)	याकूत
२	मोती	मुक्तक	पर्ल(Perl)	मोतिया
३	मूँगा	विद्रुम प्रवाल	कोरल(Coral)	मिरजान
४	पन्ना	मरकत	एमराल्ड(Emerald)	समूरन
५	पुखराज	पुष्पराग	टोपे (Topay)	जर्द याकूत
६	हीरा	वज्रमणि	डायमण्ड (Diamond)	अलिमास
७	नीलम	इन्द्रनील	सेफायर टुरग्यूज (Sapphire Trguese)	नीलाबिल याकूत
८	गोमेद	गोमेदक	झिरकान (Zircon)	मेदक
९	लहसनिया	वैदूर्य	कैट्स आई स्टोन (Cat's Eye Stone)	वैडूर्य

ज्योतिष मान्य बारह राशियाँ और उनसे प्रभावित रत्नों का ज्ञान भी आवश्यक है। नीचे राशियाँ एवं उनसे सम्बन्धित एवं प्रभावित रत्नों का परिचय दिया जा रहा है—

क्रम संख्या	राशि नाम	सम्बन्धित रत्न–उपरत्न
१	मेष	त्रिकोण प्रवाल
२	वृष	हीरा व षट्कोण पन्ना
३	मिथुन	पंचकोण पन्ना व मोती
४	कर्क	गोल मोती व नीलम
५	सिंह	गोल माणिक
६	कन्या	पन्ना
७	तुला	सफेद पुखराज
८	वृश्चिक	प्रवाल
९	धनु	पीला पुखराज
१०	मकर	नीलम
११	कुंभ	वैदूर्य (फिरोजा)
१२	मीन	गोमेदक

कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जिन्हें अपनी जन्म-तारीख और समय का ज्ञान नहीं होता। हाँ, मास ध्यान होता है। उन्हें अंग्रेजी महीनों से सम्बन्धित रत्न धारण करने चाहिए।

क्रम संख्या	अंग्रेजी महीना	सम्बन्धित रत्न
१	जनवरी	मूँगा
२	फरवरी	एमेथिस्ट
३	मार्च	एक्वामरीन
४	अप्रैल	हीरा
५	मई	पन्ना
६	जून	सुलेमान
७	जुलाई	माणिक
८	अगस्त	गोमेदक

९	सितम्बर	नीलम
१०	अक्तूबर	चन्द्रकान्त
११	नवम्बर	पुखराज
१२	दिसम्बर	वैदूर्य मणि

रत्न सम्बन्धित धातु की अँगूठी में ही पहिने जाएँ तो ज्यादा प्रभावशाली सिद्ध होते हैं। अँगूठी के जिस भाग में रत्न जड़ा जाय, वह स्थान खोखला होना चाहिए और उसमें रत्न इस प्रकार जड़ा जाना चाहिए कि वह रत्न शरीर को भी स्पर्श करता रहे। तभी उस रत्न का स्थायी प्रभाव होता है।

◆◆◆

३. रत्नों का इतिहास

रत्नों की उत्पत्ति के बारे में विविध मत प्रचलित हैं। आचार्य वराहमिहिर ने पुराण-परम्परा का आश्रय लेकर अपनी वृहत्संहिता में रत्नाध्याय में रत्नोत्पत्ति के कारणों का वर्णन किया है—

रत्नानि बलाद्दैत्याद्दधिचितोऽन्ये वदन्ति जातानि।
केचिद्भुव स्वभाववैचित्र्यं प्राहुरूपला नाम्।।

वराहमिहिर के अनुसार बलि दैत्य और दधीचि की हड्डियों से रत्नों की उत्पत्ति हुई है। जब बलि दैत्य की अस्थियाँ इधर-उधर उड़कर गिरीं, तब वे जहाँ गिरी, उस प्रदेश में इन्द्रधनुष को चकाचौंध कर देने वाले विचित्र हीरे उत्पन्न हुए।

उनकी दन्त पंक्तियाँ नक्षत्रों की तरह आकाश में छिटककर जहाँ गिरीं, वे मोतियों के रूप में परिवर्तित हो गयी। उस दैत्य का रक्त धरती पर छिटककर गिरा, वह सूर्य किरणों से सूखकर पद्मराग माणिक्य के रूप में परिवर्तित हुआ, उसके पित्रों को जब नागराज वासुकी लेकर आकाश-पथ से जा रहे थे तो मार्ग में उन पर गरुड़ ने हमला किया। फलस्वरूप नागराज के मुँह से वे मार्ग में ही छिटक पन्नों के रूप में परिवर्तित हुए। सिंहल सुन्दरियों के करपल्लव के अग्रभाग की तरह विस्तार पाने वाले सागर की तटवर्ती भूमि पर असुर के नील नयन गिर गये, जो नीलम में परिवर्तित हुए, और मरने के समय असुर की घनघोर गर्जना से कई रंगों के वैदूर्य(लहसुनिया) उत्पन्न हुए।

चर्म के हिमालय पर गिरने से पुखराज की उत्पत्ति हुई और नाखूनों के कमलवन में पड़ जाने से वेक्रान्त का जन्म हुआ। राक्षस का वीर्य जो हिमपर्वत के उत्तर भाग में गिरा, उससे गोमेदक रत्न का जन्म हुआ और उसके अन्य अंगों के यत्र-पत्र गिरने से गुँजा, सुरमा, मधु, कमलनाल, दिप्रिमय आदि रत्नों की उत्पत्ति हुई। अग्नि ने असुर के रूप को नर्मदा में ले जाकर डाला जिससे रुधिराक्ष (अकोल) पैदा हुआ और अंतड़ियों से प्रवाल विद्रुप (मूँगे) की उत्पत्ति

हुई। असुर की चर्बी जहाँ-जहाँ गिरी वहाँ स्फटिकादि की खानें बन गईं।

रत्नों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में एक अन्य कथा भी प्राप्त होती है। एक बार राजा अम्बरीष ने अपनी राजसभा में उपस्थित पंडितों एवं सभासदों से जिज्ञासा प्रकट की कि ईश्वर ने इन रत्नों को किस प्रकार उत्पन्न किया ? परन्तु उनमें से कोई भी समाधान प्रस्तुत न कर सका। तभी दरबार में महर्षि पाराशर पधारे। राजा द्वारा उपर्युक्त जिज्ञासा करने पर महर्षि ने कहा, राजन् ! रत्नों की महिमा पुराणों एवं वेदों में भली प्रकार वर्णित है, मैं तुम्हें संक्षेप में रत्नों की कथा सुनाता हूँ।

एक बार पार्वती ने शिवजी से प्रश्न किया कि हे प्रभो ! मणिरत्न वगैरह किस प्रकार उत्पन्न हुए तथा इन पर ग्रहों का प्रभाव किस प्रकार से है ? शिवजी ने प्रसन्न होकर पार्वती को जो कथा कही थी, हे राजन् ! वही कथा मैं तुम्हें सुनाता हूँ।

स्वर्ग लोक के रत्न–

स्वर्ग लोक में चार मणियाँ हैं, जो कि निम्नरूपेण हैं—

१. **चिन्तामणि—** यह सफेद रंग की होती है। इसे स्वयं ब्रह्मा धारण करते हैं। यह सभी वांछित कार्य शीघ्र ही सम्पन्न कर देती है।

२. **कौस्तुभ मणि—**इसका रंग पद्म के समान है तथा यह स्वयं में सैकड़ों सूर्यों का प्रकाश लिये हुए है। यह रत्न सागर मंथन के समय लक्ष्मी के साथ ही निकला था, जिसे भगवान् विष्णु स्वयं धारण किए रहते हैं।

३. **रुद्र मणि—** यह स्वर्णवत् प्रकाशमान तीन रेखाओं से युक्त चमकीली मणि है, जिसे स्वयं शिव धारण करते हैं।

४. **स्यमन्तक मणि—**यह नीले रंग की, इन्द्रधनुष के समान चमकीली तथा तेजवान है। इसे सूर्य स्वयं धारण किए रहते हैं।

पाताल लोक के रत्न–

विश्व में प्रमुखतः नौ जाति के सर्प हैं, जिनके रंग भी अलग-अलग हैं। उदाहरणार्थ काला, नीला, पीला, हरा, मटिया, श्वेत, लाल, गुलाबी, दूधिया। इन सर्पों के पास स्वयं के रंग के समान ही मणियाँ हैं, जो कि पाताल लोक में वासुकी नाग के संरक्षण में हैं तथा इन्हीं मणियों के जाज्वल्यमान प्रकाश में सर्प अपना समस्त कार्य करते हैं।

मृत्यु लोक के रत्न–

शिव ने कहा, हे पार्वती ! अब मैं तुम्हें मृत्यु लोक के बारे में बताता हूँ। राजा बलि की कथा से तुम भली-भाँति परिचित हो। भगवान् विष्णु ने वामन अवतार धारण कर उससे साढ़े तीन पैर पृथ्वी माँगी। प्रभु ने तीन पैरों से तीन लोक नाप लिए, तब आधे पैर के लिए उसके शरीर की माँग की। राजा बलि ने अपना पूरा शरीर वामन को समर्पित कर दिया। भगवान् विष्णु के पद-स्पर्श से वह रत्नमय वज्रवत् हो गया। तत्पश्चात् इन्द्र ने उसे अपने वज्र से पृथ्वी पर गिराया। पृथ्वी पर टुकड़े-टुकड़े होकर गिरते ही शरीर के सभी तत्वों से अलग-अलग रंग के रत्न प्रकट हुए, तब मैंने उस शरीर के अंग-प्रत्यंगों को अपने चार त्रिशूलों पर स्थित कर लिया और उस पर नवग्रहों एवं बारह राशियों का प्रभुत्व स्थापित किया। वे ही नवग्रहों के रत्न-उपरत्न आदि पृथ्वी की खानों में पाये जाते हैं तथा ग्रहों के अनुसार मृत्यु लोक में समस्त प्राणियों को शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं।

राजा बलि के शरीर से मुख्यतः इक्कीस रत्न प्रकट हुए जिनका विवरण इस प्रकार से है—

१. **माणिक—**यह बलि के रक्त से उत्पन्न हुआ।

२. **मोती—**यह बलि के मन से प्रकट हुआ।

३. **प्रवाल—**यह बलि के कपाल से शस्त्र-प्रहार से जो रुधिर निकला, वह बहकर समुद्र में गिरा और उससे इस रत्न की उत्पत्ति हुई।

४. **पन्ना—**राजा बलि के पित्त से पृथ्वी पर पन्ने की खानें प्रकट हुईं।

५. **पुखराज—**यह रत्न राजा बलि के माँस से उत्पन्न हुआ।

६. **हीरा—**बलि के सिर के टुकड़ों से यह रत्न बना, जो सभी रत्नों में श्रेष्ठ रत्न कहा जाता है।

७. **नीलम—**इस रत्न का प्रादुर्भाव बलि के नेत्रों से हुआ।

८. **गोमेदक—**बलि के मेदा से यह रत्न बना।

९. **लहसुनिया—**बलि के यज्ञोपवीत के टुकड़े हुए तो वे सूत्र मिलकर इस रत्न के रूप में प्रकट हुए।

१०. **फिरोजा—**बलि की नसों से इस रत्न की उत्पत्ति हुई।

११. **चन्द्रकान्त मणि—**यह बलि के नेत्रों के आकाश से उत्पन्न हुई।

१२. **घृतमणि—**यह असुर की काँख से बनी।

१३. **तैलमणि**—बलि की त्वचा से इनकी उत्पत्ति हुई।

१४. **भीष्मक**—बलि का सिर कटकर जमीन पर गिरने से इस मणि की उत्पत्ति हुई।

१५. **उपलक मणि**—दैत्यराज के कफ से इसका जन्म हुआ।

१६. **स्फटिक मणि**—बलि के पसीने से इसका प्रादुर्भाव हुआ।

१७. **पावस**—बलि के फटे हुए हृदय से इसका जन्म हुआ।

१८. **उलूक मणि**—बलि की जीभ से इसकी उत्पत्ति हुई।

१९. **लाजावर्त मणि**—असुर के केशपुंज से यह मणि बनी।

२०. **मासर मणि**—बलि के मल से इसका जन्म हुआ।

२१. **ईसब संग**—बलि के वीर्य से इस मणि की उत्पत्ति हुई।

इस तरह मृत्यु लोक में २१ रत्न और ८४ मणियों का बलि के शरीरांगों, तत्त्वों आदि से प्रादुर्भाव हुआ।

◆◆◆

४. माणिक : सूर्य रत्न

माणिक, माणक या माणिक्य को संस्कृत में पद्मराग कहते हैं। फारसी में इसे याकूत, उर्दू में चुन्नी और अंग्रेजी में रूबी (Ruby) कहते हैं। यह मुख्यत: तीन प्रकार के पत्थरों से निष्पन्न होता है। सौगन्धिक पत्थर से उत्पन्न माणिक भ्रमर के रंग के समान होता है, जिसकी चमक प्रखर होती है। कुरुविन्द पत्थर से उत्पन्न माणिक शुक्ल-कृष्ण मिश्रित, मन्द कान्ति और अन्य धातुओं से विद्ध होता है। स्फटिक पत्थर से निकलने वाल माणिक विविध वर्णयुक्त, अद्भुत कान्तिवान और विशुद्ध रूप में होता है।

मुख्यत: माणिक कई रंगों में पाया जाता है। यथा लाल, रक्तकमलवत् सिन्दूरी, सिंगरिफ तथा वीरबहूटी आदि। काबुल, लंका के अतिरिक्त भारत में गंगा नदी के किनारे ये रत्न पाये जाते हैं। विन्ध्याचल और हिमालय के अंचलों में भी इसकी खानें पायी जाती हैं।

माणिक के गुण—

मुख्यत: माणिक में पाँच गुण पाये जाते हैं। यह स्निग्ध, कान्तियुक्त अच्छे पानी का, धारदार और चमकीला होता है। हाथ में लेने पर कुछ भारी-सा प्रतीत होता है। तब हल्की-हल्की गर्मी महसूस होती है।

परीक्षा—

इसकी परीक्षा के लिए चार विधियाँ हैं—

१. गौ के दूध में इस रत्न को डालने पर दूध गुलाबी-सा दिखाई देने लगता है।

२. सफेद चाँदी के थाल में इसे रखकर सूर्य के सम्मुख करें, तो यह रजत को भी लाल-सा बना देता है।

३. काँच के पात्र में रखकर देखें तो काँच में से हल्की-हल्की रक्तिम किरणें-सी निकलती दिखाई देती हैं।

४. कमल की कली पर इसे रख दिया जाय, तो कमल तुरन्त खिल जाता है।

माणिक के दोष–

दोषयुक्त मणिक प्रभावशाली नहीं होता, अपितु वह धारण करने वाले के लिए विपरीत फलदाता भी बन जाता है। माणिक में मुख्यत: ग्यारह दोष पाये जाते हैं–

१. **सुन्न**–जो माणिक बिना चमक का होता है, वह सुन्न माणिक कहलाता है। ऐसे माणिक को धारण करने वाला व्यक्ति भाइयों से पीड़ित रहता है।

२. **दूधक**–जिस माणिक का रंग दूध के सदृश हो, वह दूधक माणिक कहलाता है। ऐसा रत्न पशुधन का नाश कर चित्त में बेचैनी बनाए रखता है।

३. **जालक**–जिस माणिक में जाल हो, आड़ी-तिरछी कई रेखाओं से युक्त हो, वह जालक माणिक कहलाता है। ऐसा माणिक घर में कलहपूर्ण वातावरण बनाए रखने में समर्थ होता है।

४. **दुरंगा**–जिस माणिक में दो प्रकार के रंग दिखाई दें, वह दुरंगा माणिक पिता के लिए कष्टकर होता है।

५. **धूम्र**–धुएँ के रंग जैसा माणिक व्यक्ति के लिए दैवी-प्रकोप लाता है।

६. **चीरित**–जिस माणिक में क्रॉस हो, या चीरा लगा हुआ हो, वह चीरित माणिक कहलाता है। ऐसा माणिक शस्त्र से आघात लगने में सहायक होता है।

७. **मटमैला**–मटमैला माणिक अशुभ होता है। इसको धारण करने से उदरविकार रहता है।

८. **त्रिशूल**–जिस माणिक में त्रिभुज, त्रिकोण या त्रिशूल-सा चिह्न हो वह सन्तानोत्पत्ति में बाधक रहता है।

९. **श्वेत**–सफेद रंग का या कालिमायुक्त माणिक व्यक्ति की धनहानि करता है तथा कीर्ति में बाधा पहुँचाता है।

१०. **गड्ढा**–जिस माणिक में गड्ढा हो, ऐसा माणिक धारण करने पर शरीर में व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं।

११. **एकाधिकी**–जिस माणिक में उपर्युक्त एक से अधिक दोष हों, वह मृत्युकारक होता है तथा किसी भी समय असंभावित घटित हो सकता है।

माणिक धारण करने वाले को चाहिए कि वह माणिक खरीदते समय यह ध्यान रखे कि उसमें उपर्युक्त प्रकारेण किसी भी प्रकार का दोष न हो।

माणिक की मणि–

माणिक की मणि को लालड़ी कहते हैं। जो व्यक्ति माणिक नहीं खरीद सकते, उन्हें लालड़ी खरीदनी चाहिए। उसे फारसी में लाल कहते हैं। यह १० प्रकार की होती है–

१. गेरुए रंग की।
२. सिंदूरी रंग की।
३. कनेर के फूल के समान रंग वाली।
४. चैत महीने में फूलने वाले गुलाब के रंग की।
५. अनारकली के रंग के समान।
६. सुर्ख रंग वाली।
७. साफ रक्तिम रंग की।
८. जमे हुए खून के रंग की।
९. मोतिया रंग की।
१०. गुलाबी रंग की।

परीक्षा–

अच्छी सूर्यमणि या लालड़ी वह कहलाती है, जो दोपहर को साफ रुई पर रखकर सूर्य के सम्मुख की जाय, तो कुछ समय पश्चात् रुई में आग लग जाती है।

गुण–

इसमें दस गुण पाए जाते हैं जो निम्नरूपेण होते हैं–

(१) यह चमकदार होती है। (२) यह चिकनी होती है। (३) इसका पानी श्रेष्ठ होता है। (४) इसका रंग शुद्ध होता है। (५) हाथ में लेने पर कुछ वजन-सा प्रतीत होता है जो सामान्य से अधिक होता है। (६) हाथ में कुछ स्मय रखने पर गर्मी-सी प्रतीत होती है। (7) पानी में डालने पर इसमें से रक्तिम किरणें निकलती-सी दिखाई देती हैं। (८) दूध में डालने पर दूध का रंग लाल-सा दिखाई देता है। (९) दिखने में श्रेष्ठ होती है। (१०) यह शीघ्र प्रभावकारी होती है।

प्रभाव–

सूर्यमणि या लालड़ी शीघ्र प्रभाव डालने में समर्थ होती है। इसके पहिनने

से दारिद्र का नाश होता है तथा अन्न-धन का भण्डार भरा रहता है। मन में धार्मिक विचार उत्पन्न होते हैं तथा तीर्थयात्रा के संयोग बनते हैं। घर में यदि प्रेत अथवा भूतबाधा हो तो इसके धारण करने से निश्चत ही ऐसी बाधा शान्त हो जाती है। शरीर में रोग, पीड़ा या व्याधि को मिटाने में प्रबल रूप से सहायक है। जन्मकुण्डली में यदि सूर्य अकारक अथवा दोषी हो तो पहिनने से सूर्यबाधा शान्त होती है।

दोष–

उत्तम सूर्य मणि धारण करने से जहाँ लाभ होता है वहाँ दोषयुक्त लालड़ी धारण करने से नुकसान भी शीघ्र ही हो जाता है। लालड़ी में मुख्यत: ये बारह दोष पाये जाते हैं–

१. जिस मणि में खड़ी लकीर-सी दिखाई दे ऐसी मणि पहिनने से शस्त्रबाधा का सामना करना पड़ता है।
२. कई छोटी लकीरें हों ऐसी मणि स्त्री के लिए घातक कही गई हैं।
३. जिस मणि में छोटे-छोटे काले धब्बे हों तो वह मणि धन का नाश करती है।
४. जो मणि दो रंगों से युक्त हो, वह समाज में विरोधियों की संख्या बढ़ाती है।
५. जिस मणि में जाल हो, वह मणि शरीर के लिए हानिकारक होती है।
६. जिस मणि में कोई गड्ढा दिखाई दे, वह पशुधन के लिए हानिकारक कही गई है।
७. जिस मणि के आर-पार सरलतापूर्वक न देखा जा सके, ऐसी मणि पहिनने से हृदय रोग का शिकार होना पड़ता है।
८. बिन्दुयुक्त या जिस मणि में सफेद बिन्दु दिखाई दे, वह मणि रोगवर्धक होती है।
९. जिस मणि में काले बिन्दु दिखाई दें, वह शस्त्र-भय को बढ़ाने वाली होती है।
१०. शहद के समान बिन्दु वाली भाइयों के लिए मृत्युदायक सिद्ध होती है।
११. जिस मणि में हल्के-हल्के लाल छींटे दिखाई दें, वह सन्तान के लिए बाधाकारक कही गई है।
१२. जो मणि धूमिल या अस्पष्ट हो उसको धारण करने से स्वयं के लिए

कष्ट बढ़ जाता है तथा वह मणि प्राणघातक कही गई है।

मणि कौन पहिने ?

माणिक मुख्यत: सूर्य का रत्न है और सूर्य कालपुरुष की आत्मा कहा जाता है। यह पुरुष ग्रह, ताँबे के रंग के समान दैदीप्यमान, पूर्व दिशा का स्वामी और पापग्रह है। यदि जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति ठीक नहीं हो तो माणिक धारण करना चाहिए।

अपनी जन्मकुण्डली में निम्नप्रकारेण सूर्य की स्थिति रखने वाले को माणिक्य धारण करना चाहिए।

१. लग्न में सूर्य हो तो, क्योंकि लग्नस्थ सूर्य संतान-बाधा, अल्प संतति एवं स्त्री के लिए कष्टप्रद होता है, अत: ऐसे व्यक्ति को माणिक धारण करनी चाहिए।
२. धन स्थान या द्वितीय स्थान का सूर्य धनप्राप्ति में बाधक ही रहता है। नौकरी में वह कई प्रकार से कष्ट सहन करता है, अत: ऐसी स्थिति में सूर्य-रत्न धारण करना श्रेष्ठ कहा गया है।
३. यदि किसी की जन्मकुण्डली में तीसरे भाव में सूर्य हो और उसके छोटे भाई जीवित न रहते हों, तो उसे सूर्य को प्रसन्न करने के लिए माणिक पहिनना चाहिए।
४. चौथे स्थान में स्थित सूर्य आजीविका में बाधाएँ उपस्थित करता है तथा बार-बार राज्यभंग योग बनता रहता है, अत: ऐसे व्यक्ति को माणिक धारण करना चाहिए।
५. यदि सूर्य भाग्येश, धनेश या राज्येश होकर छठे या आठवें स्थान में पड़ा हो तो उसे भी माणिक धारण करना चाहिए।
६. यदि जन्मकुण्डली में सूर्य अष्टमेश या षष्ठेश होकर पंचम अथवा नवम् भाव में पड़ा हो तो उस मनुष्य को अवश्य ही माणिक धारण करना चाहिए।
७. सप्तम् भाव में पड़ा सूर्य स्वयं के स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है, अत: ऐसे जातक को सूर्य-रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।
८. यदि सूर्य जीव नक्षत्र का स्वामी हो, तो सर्वोन्नति के लिए माणिक पहिनना लाभप्रद है।
९. यदि जन्मकाल में सूर्य कहीं पर भी स्थित होकर अपने नक्षत्रों कृत्तिका,

उत्तरा फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो ऐसे व्यक्ति को भी माणिक धारण करना चाहिए।

१०. द्वितीय भाव अथवा द्वादश भाव में सूर्य स्थित हो, तो नेत्रों के लिए कष्टप्रद होता है, अतः नेत्रों की ज्योति कायम रखने के लिए भी माणिक धारण करने से लाभ होगा।

११. एकादश भाव में पड़ा सूर्य पुत्रों के बारे में चिन्ताएं उत्पन्न करता है तथा बड़ें भाई के लिए हानिप्रद सिद्ध होता है, अतः ऐसे व्यक्ति को भी सूर्य का रत्न माणिक धारण करना चाहिए।

१२. यदि सूर्य जन्मकुण्डली में अपने भाव से अष्टम स्थान में स्थित हो, तो ऐसी कुण्डली रखने वाले व्यक्ति को शीघ्र ही माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए।

रोगों पर माणिक का प्रभाव–

रक्त सम्बन्धी विकार होने पर यदि माणिक की भस्म का सेवन किया जाय, तो आश्चर्यजनक लाभ होता है।

१. यदि खून के दस्त लग रहे हों, और उसे माणिक का धोया हुआ जल पिलाया जाय, तो तुरन्त लाभ करता है।
२. यदि किसी को संग्रहणी, अतिसार आदि रोग हों तो अपनी अँगूठी में माणिक जड़वाने से तुरन्त लाभ होता है।
३. अजीर्णावस्था में माणिक-सिंचित जल विशेष लाभ करता है।
४. नामर्दी और खूनी बवासीर में माणिक्य-भस्म रामबाण औषधि है।
५. घर में यदि माणिक पड़ा हो तो उसकी रश्मियों के प्रभाव से कीटाणु नाश होते हैं तथा वातावरण निर्मल रहता है।

माणिक का प्रयोग–

जब तक किसी भी रत्न से सम्बन्धित ग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं हो जाती, तब तक वह रत्न प्रभाव नहीं डालता, अतः जो व्यक्ति धारण करना चाहे उसे निम्न बातों पर सावधानीपूर्वक विचार एवं पालन करना चाहिए।

१. रविवार को पुष्य नक्षत्र हो या रविवार के दिन कृतिका, उत्तराफाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः सूर्योदय से ९ बजे के बीच अँगूठी बनावे और उसमें माणिक्य रत्न जड़े।
२. अँगूठी या तो सोने की हो अथवा ताँबे की हो, इसके अलावा अन्य

धातु का माणिक के साथ संयोग न हो।
३. अँगूठी में माणिक्य इस प्रकार जड़ा जाय कि उस माणिक्य का नीचे का हिस्सा उँगली को छूता रहे।
४. वह अँगूठी दाहिने हाथ की अनामिका उँगली में धारण करे।
५. प्रातः दस बजे के पश्चात् सूर्ययज्ञ करे, सूर्य प्रकोष्ठ बनावे तथा सवा पाँच तोले का चाँदी का सूर्यासन बनाकर उस पर सवा दो मासे की सूर्य की मूर्ति प्रतिष्ठित करे।

तत्पश्चात् अँगूठी एवं सूर्य की षोडशोपचार पूजा करे तथा सूर्य मंत्र से अभिषित करे।

आकृष्णे नरजसा वर्तमानो निवेसयन्न मृत्यंच।
हिरण्यये न सविता रथेनादेवो याति भुवनानि पश्यन्।

यह सूर्य मन्त्र है।

इसके पश्चात् ब्राह्मण से 'ॐ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः' इस मन्त्र से अँगूठी को तथा यजमान को अभिषेक दे।

तत्पश्चात् रत्न में सूर्य प्राण-प्रतिष्ठा करे। प्राण-प्रतिष्ठा विधि आगे परिशिष्ट में दी गई है।

फिर अँगूठी धारण कर हवन करे तथा सूर्यासन, सूर्यमूर्ति एवं अँगूठी अन्य छोटा-सा माणिक ब्राह्मण को दान में दे। माणिक जड़ी अँगूठी स्वयं धारण करे।

इस प्रकार से किया गया प्रयोग ही लाभप्रद एवं सिद्धिदाता होता है।

माणिक रत्न की दानविधि–

यदि सूर्य से प्रभावित व्यक्ति या सिंह लग्न वाले अथवा जिनकी कुंडली में सूर्य बाधाकारक बनकर स्थित हो और उसे अथवा उसकी सन्तान को क्षय, विषम ज्वर, पीड़ा आदि हो तो उसे विधिपूर्वक माणिक दान करना चाहिए। इससे सभी प्रकार की बाधाओं का शमन हो जाता है।

गेहूँ, गुड़, कंमल, स्वर्णपत्र पर अंकित सूर्य की मूर्ति, लाल वस्त्र, रक्त-चंदन और श्रेष्ठ माणिक लेकर संकल्प के साथ किसी योग्य ब्राह्मण को दान करना चाहिए। ब्राह्मण से ७००० सूर्य मन्त्र जप कराकर विधिवत् दक्षिणा देनी चाहिए। यह दान रविवार को प्रातः दस बजे से पूर्व करना चाहिए। इससे सभी प्रकार के अनिष्ट नाश होकर जीवन में सुख एवं सम्पदा बढ़ती है।

सूर्यमन्त्र–पूजा एवं प्रयोग–

यदि सूर्य-बाधा के फलस्वरूप पुत्र सन्तान न होती हो, तो सूर्यमन्त्र का प्रयोग करना चाहिए। सूर्यमन्त्र पीछे में दिया जा चुका है।

सूर्यमंत्र को स्वर्ण-पत्र पर अंकित करे तथा उसके बीच में माणिक जड़वावे, तत्पश्चात् २७ दिनों तक उस मन्त्र का षोडशोपचाररूपेण पूजा करे एवं सूर्यदेव से अभिषेक दे तथा उस जल को चरणामृत रूप में पत्नी एवं पति दोनों लें।

२८वें दिन 'ॐ ह्रीं हंसः सूर्याय नमः स्वाहा' मन्त्र से ११०० आहुतियाँ दे एवं 'पुत्रोत्पत्ति' यज्ञ संपूर्ण विधि से श्रेष्ठ ब्राह्मण से संपन्न करावे। पूर्णाहुति के पश्चात् यह यन्त्र ब्राह्मण को दान दे दे, इसके साथ ही घृत, ऊनी वस्त्र, गेहूँ, तिल एवं गुड़ का भी दान करे।

यज्ञ के पश्चात् दूसरे दिन वही ब्राह्मण 'आकृष्णेति' मंत्र की एक माला उस यज्ञस्थल पर बैठकर पूरी करे एवं उस यज्ञ-भस्म का पति-पत्नी किंचित् सेवन करें। इस प्रकार के प्रयोग से निश्चित ही सुन्दर एवं श्रेष्ठ पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है। मैंने स्वयं इस प्रकार का प्रयोग कई व्यक्तियों एवं गण्यमान्य सज्जनों के साथ किया है एवं उनकी अभीष्ट कामना पूर्णतः फलवती हुई है, इसमें सन्देह नहीं।

माणिक-वजन–

माणिक जितना ही ज्यादा बड़ा हो, वह श्रेष्ठ होता है, पर तीन रत्ती से कम तोल का माणिक प्रभावशाली नहीं होता है। इसी प्रकार पाँच रत्ती से कम वजन की स्वर्ण अँगूठी निरुपयोगी होती है।

माणिक अँगूठी में जड़वाने के दिन से चार वर्ष तक प्रभावशाली रहता है, तत्पश्चात् उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है। अतः चार वर्ष के पश्चात् दूसरा माणिक धारण करना चाहिए।

इस प्रकार माणिक के बारे में विवेचन के पश्चात् आगे के अध्याय में मुक्तक के बारे में विचार किया जा रहा है।

◆◆◆

५. मोती : चन्द्र रत्न

मोती को संस्कृत में मुक्तक कहते हैं। चन्द्रमा इसका स्वामी है। इसके धारण करने से चन्द्रमा सम्बन्धी दोष नष्ट हो जाते हैं।

१. **गजमुक्तक**—यह मोती संसार में सर्वश्रेष्ठ होते हैं तथा कठिनता से प्राप्त होते हैं। जिन हाथियों का जन्म पुष्य या श्रवण नक्षत्र में चन्द्र एवं रविवार को एवं उत्तरायणगत सूर्यकाल में होता है, उनके विशाल मस्तिष्क में यह मोती पाया जाता है। हस्तियों के दन्तकोष अथवा कुम्भस्थलों में से भी मोती प्राप्त होते हैं। ये मोती सुडौल स्निग्ध एवं तेजयुक्त होते हैं, जिन्हें देखते ही आँखों में शीतलता का संचार होता है। ऐसे मोतियों को न तो विंधाना चाहिए और न इनका मूल्य ही लगाना चाहिए। इस प्रकार के महापवित्र, निर्दोष एवं प्रभावपूर्ण मोती को शुभ मुहूर्त में धारण किया जाय, तो जीवन के समस्त क्लेश मिट जाते हैं, मन को अपार शांति मिलती है-तथा घर में चतुर्दिक हर्ष का वातावरण बना रहता है।

२. **सर्पमुक्तक**—श्रेष्ठ वासुकी जाति के भुजंगम के सिर में यह मोती पाया जाता है। ज्यों-ज्यों सर्प की उम्र बढ़ती जाती है, यह मुक्तक हल्के नीले रंग का तेजयुक्त, अत्यन्त प्रभावशाली होता जाता है। यह मोती कठिनाई से प्राप्त होता है और भाग्यशाली पुरुष ही इसे धारण करते हैं। शुभ समय में धारण किया हुआ यह मोती मन की प्रत्येक इच्छा को सम्पन्न करने में समर्थ होता है।

३. **वंश मुक्तक**—जहाँ बाँसों की अधिकायत होती है अथवा बाँसों के जंगल होते हैं, वहाँ उस वन में स्वाति, पुष्य अथवा श्रवण नक्षत्र से एक दिन पहले से इसकी ध्वनि गुँजित होने लग जाती है और सम्बन्धित नक्षत्र के समाप्ति काल तक यह वेद-ध्वनि के समान गूँजता रहता है। ऐसे समय जिस बाँस में यह मोती होता है, उसे बीच

से काट, बाँस के गर्भस्थल में से इसे निकाल लिया जाता है। इसका रंग हल्का हरा और आकृति गोल होती है। इसे बींधा नहीं जा सकता। उत्तम कोटि के भाग्यशाली ही इसे प्राप्त करने में सफल होते हैं। इस मोती के धारण करने से भाग्योदय एवं घर में अटूट संपत्ति बनी रहती है। वे राज्य पक्ष एवं सामाजिक पक्ष में अत्यन्त उच्च पद पर सहज पहुँच जाते हैं।

४. **शंखमुक्ता**—समुद्र में पाँचजन्य शंख में यह पाया जाता है। ज्वार-भाटे के समय उथल-पुथल में यह शंख सरलता से प्राप्त हो जाता है। पाँचजन्य शंख की नाभि में यह मोती स्थित होता है। इसका रंग हल्का नीला, सुडौल और सुन्दर होता है तथा इस पर तीन लकीरें यज्ञोपवीत की तरह धारण की हुई होती हैं। यह मोती आरोग्यवर्धक, स्थिरलक्ष्मी में सहायक और सर्व प्रकार के अभावों को दूर करने में समर्थ होता है।

५. **शूकर मुक्ता**—वाराह वर्ग में उत्पन्न शूकर के यौवनकाल में यह उसके मस्तिष्क से प्राप्त होता है। पीले-पीले से रंग वाला यह मोती गोल, सुन्दर एवं चमकदार होता है। वाक्सिद्धि के लिए यह मोती गुणकारी है। इसके धारण करने से स्मरणशक्ति बढ़ती है तथा वाक्शक्ति में निपुणता आती है। जिसके कन्या सन्तान ही होती हों, पुत्र-सुख न हो तो गर्भिणी स्त्री को यह मोती पहिनाने से निश्चय ही पुत्रलाभ होता है। यह कई व्यक्तियों पर अनुभूत है।

६. **मीन मुक्तक**—यह मोती मछली के उदर से प्राप्त होता है। चने के आकार का यह पाण्डु रंग का चमकदार होता है। इसके पहिनने से पानी में प्रकाश-सा होता है तथा जल में डुबकी लगाने पर पानी में नीचे की वस्तुएँ स्पष्टत: देखी जा सकती हैं। क्षय रोग को मिटाने में अद्‌भुत प्रभावशाली है।

७. **आकाश मुक्तक**—पुष्य नक्षत्र को घटाटोप आकाश के मेघों से कभी-कभी इस मोती की भी वर्षा होती है। पूरी वर्षा में एक या दो मोती नीचे गिरते हैं। भाग्यशाली पुरुषों को ही यह मोती प्राप्त होता है। विद्युत के समान चमकदार एवं गोल आकृति का होता है। इसके धारण करने से व्यक्ति परम तेजस्वी एवं भाग्यशाली बनता है तथा जीवन में कई बार उसे अटूट खजाने प्राप्त होते हैं।

८. **मेघ मुक्तक**—रविवार को पुष्य या श्रवण नक्षत्र हो, तो उस दिन वर्षा में यह मोती एकाध ठौर कहीं गिरता है। इसका रंग मेघ के समान एवं अक्षुण्ण चमकयुक्त होता है। इस मोती के पहिनने से जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

९. **सीप मुक्ता**—अधिकतर मोती सीपों से ही प्राप्त होते हैं, और यही मोती बींधे भी जाते हैं। स्वाति नक्षत्र में गिरी जल की बूँद सीप के धारण करने पर इस मोती का जन्म होता है। इस मोती पर चन्द्रमा का पूर्ण प्रभाव होता है। इनकी आकृति कई प्रकार की होती है। लम्बे, गोल, बेडौल, सुडौल, तीखे और चपटे सभी प्रकार के होते है। यों तो यह मोती विश्व के लगभग सभी समुद्रों में मिल जाता है, पर स्याम और बसरे की खाड़ी में पाया जाने वाला उत्तम कोटि का होता है। चन्द्र प्रभावयुक्त व्यक्तियों को संभवत: बसरे की खाड़ी का ही मोती धारण करना चाहिए। बसरे की खाड़ी का भी गोल मोती श्रेष्ठ कहा गया है। इन मोतियों का रंग हल्का पीला और गंदुमी-सा होता है। इस मोती के धारण करने से धनप्राप्ति, स्वास्थ्यवर्द्धक तथा आनन्द की प्राप्ति होती है।

मोती के गुण—

यद्यपि मोती कई रंगों के होते हैं, पर कुछ गुण ऐसे होते हैं, जो सभी मोतियों में पाये जाते हैं। वे गुण हैं—

(१) चिकना (२) निर्मल (३) कांतियुक्त (४) कोमल और (५) सुडौल। किसी-किसी मोती में बाल के बराबर छिद्र भी पाया जाता है। ऐसा मोती दोषी नहीं कहा जाता।

मोती पहिनने से व्यक्ति की दूषित एवं पापयुक्त बुद्धि समाप्त हो जाती है। मोती ज्ञानवर्धक एवं धनदाता होता है। निर्बलता को दूर कर चेहरे पर कांति लाने में यह प्रबल रूप से सहायक होता है।

मोती की परीक्षा—

मोती की सही परीक्षा के लिए निम्न विधियाँ काम में लानी चाहिए—

१. काँच के गिलास में पानी डालकर उसमें मोती डाल दो। यदि पानी में से किरणें-सी निकलती दिखाई दें, तो मोती सच्चा समझना चाहिए।
२. गाय का मूत्र किसी मिट्टी के बर्तन में लेकर उसमें मोती डाल दें और

उस मोती को रात-भर उसमें रहने दें। प्रातः यदि मोती टूटा हुआ नहीं मिले, तो उस मोती को शुद्ध समझना चाहिए।

३. धान की भूसी में मोती रखकर खूब मलें। यदि मोती नकली होगा, तो उसका चूरा हो जाएगा और यदि असली मोती होगा, तो वह चमककर और निखर आयेगा।

४. घी में शुद्ध मोती रखने से घी पिघल जाए, तो शुद्ध मोती समझना चाहिए।

मोतियों के दोष–

मोती खरीदते समय पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। दोषयुक्त मोती लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक करता है। पाठकों की जानकारी हेतु नीचे मोतियों में पाये जाने वाले प्रमुख दोष और उससे निष्पन्न फल का भी संक्षिप्त विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है।

१. **टूटा मोती–**
टूटा हुआ मोती अशुद्ध, व्यर्थ एवं हानिप्रद होता है। ऐसा मोती पहिनने से कष्ट बढ़ जाता है। चित्त में अस्थिरता एवं विकलता बनी रहती है।

२. **रेखित मोती–**
जिस मोती में लहरदार रेखा दिखाई दे, वह अच्छा मोती नहीं कहा जा सकता। ऐसा मोती धारण करने से आर्थिक हानि एवं मन उद्विग्न बना रहता है।

३. **मेंडा मोती–**
जिस मुक्तक के चारों ओर वृत्ताकार रेखा खिंची हुई दिखाई दे वह मेंडा मोती कहलाता है। ऐसा मोती स्वास्थ्य के लिए हानिकारक एवं हृदय को कमजोर बनाने वाला होता है।

४. **धब्बा मोती–**
जिस मोती में कहीं पर भी छोटा-सा काला धब्बा दिखाई दे, वह मोती अशुभ होता है तथा स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद होता है।

५. **मस्सा मोती–**
जिस मोती में कई रंग के या एक ही रंग के छोटे-छोटे बिन्दु दिखाई दें, ऐसा मोती धारण करने से बल-बुद्धि एवं वीर्य नष्ट हो जाता है।

६. **दुर्बल मोती–**
जो मोती बेडौल, लम्बा या दुर्बल-सा हो तो वह मोती पहिनने से बल-बुद्धि नष्ट होकर चित्त में खिन्नता बनी रहती है।

७. **निस्तेज मोती–**
बिना चमक का मोती अशुभ कहा गया है, और ऐसा मोती दरिद्रता को बढ़ाने वाला होता है।

८. **चोंच मोती–**
जिस मोती के चोंच हो, या एक ओर से नुकीला-सा दिखाई दे, तो ऐसा मोती कुलहानि करने वाला होता है।

९. **चतुर्भुज मोती–**
जो मोती चपटा हो और चार कोणों से युक्त हो, तो ऐसा मोती धारण करने से पत्नी का नाश होता है।

१०. **त्रिकोण मोती–**
तीन कोनों वाला मोती पहिनने वाले को नपुंसक बनाता है तथा बल, वीर्य एवं बुद्धि का नाश करता है।

११. **काक मोती–**
जिस मोती में मोटा-सा काला धब्बा हो, वह काक मोती कहलाता है। ऐसा मोती जातक की संतान के लिए भयंकर कष्टप्रद होता है।

१२. **चपटा मोती–**
जो मोती चपटा हो, वह सुख-सौभाग्य का हरण करने वाला एवं चिन्ताओं को बढ़ाने वाला होता है।

१३. **ताम्रक मोती–**
ताम्बे के रंग का मोती कुल का नाश करने वाला होता है।

१४. **रक्तमुखी मोती–**
लाल रंग का मोती दुःख बढ़ाने वाला एवं लक्ष्मीनाशक होता है।

१५. **रेखक मोती–**
जिस मोती के गर्भ में लम्बी-सी लकीर दिखाई दे, वह मोती अशुद्ध होता है तथा ऐसा मोती श्रीहीन एवं दुःखवर्धक माना गया है।

मोती की मणि (उपरत्न)–

जो व्यक्ति मोती नहीं पहन सकते, उन्हें मोती का उपरत्न पहनना

चाहिए। इसे 'निमरू' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। सीप की मृत्यु पर उसकी पूँछ से छोटा-सा मोती सदृश रत्न मिलता है जो 'निमरू' कहलाता है। यह चन्द्र का उपरत्न कहलाता है। यद्यपि यह मोती के समान प्रभावशाली तो नहीं होता, फिर भी इसके पहिनने से किंचित् लाभ अवश्य होता है। निमरू का रंग चाँदी के समान उज्ज्वल सफेद होता है।

चन्द्रमणि–

सफेद रंग का पुखराज चन्द्रमणि कहलाता है। जिस जातक की जन्मकुण्डली में चन्द्र क्षीण, दुर्बल, अशुभ हो गया हो तो उसे चन्द्रमणि भी पहननी चाहिए। एक ही अँगूठी में मोती और चन्द्रमणि दोनों ही जड़वाकर पहिना जाय तो तुरन्त वांछित फलप्राप्ति होती है तथा विशेष प्रभावशाली बन जाता है।

चन्द्रमणि लंका, नर्मदा के कछार, वैतरणी के किनारों पर विन्ध्य और हिमाचल की उपत्यकाओं में पायी जाती है ।

चन्द्रमणि के प्रकार–

चन्द्रमणि या सफेद पुखराज के तीन भेद होते हैं।

१. **श्वेत संग–**

यह शुभ, चमकदार और अच्छे पानी का होता है तथा इसके शरीर पर किसी प्रकार का धब्बा नहीं दिखाई देता। लंका और रामेश्वरम् की ओर यह अधिकांशत: पाया जाता है। रक्त सम्बन्धी विकार, मानसिक असन्तोष, नामर्दी और पेशाब की तकलीफ को दूर करने में यह रामबाण औषधि है। इसके पहिनने से उपर्युक्त बीमारियाँ नहीं होतीं और हों तो शीघ्र मिट जाती हैं।

२. **नील संग–**

इस पर एक नीले रंग की पतली धारी दिखाई देती है, जो कि चारों ओर लिपटी-सी प्रतीत होती है। इसके पहिनने से शरीर पर विष का असर नहीं होता। जंगलों में घूमने वाले या विषधरों से सुरक्षित रहने के लिए इसका पहिनना परम लाभदायक माना गया है।

३. **गौरी संग–**

इस सफेद पुखराज या चन्द्रकान्त मणि पर गौरीशंकर की मूर्ति गेरुए रंग में बनी दिखाई देती है। हिमालय की खानों में यह कभी-कभी प्राप्त होता है। इसके पहिनने से सर्वतोमुखी कल्याण, धनधान्य की वृद्धि एवं निरोगिता बनी रहती है।

मोती कौन पहिने–

मोती मुख्यत: चन्द्रमा का रत्न है, अत: जिसकी जन्मकुण्डली में चन्द्रमा दूषित हो, उसे अवश्य ही मोती धारण करना चाहिए।

चन्द्र मानव के चित्त का स्वामी है और इसका अधिकार मानव के मन पर रहता है। अपनी जन्मकुण्डली में निम्नप्रकारेण चन्द्र की स्थिति हो, तो उसे मोती अवश्य धारण करना चाहिए।

१. जन्मकुण्डली में चन्द्रमा सूर्य के साथ हो या सूर्य से अगली पाँच राशियों के पहले-पहले स्थित हो, तो चन्द्रमा क्षीण होता है, अत: ऐसे व्यक्ति को अवश्य ही मोती धारण करना चाहिए।
२. धनस्थान का स्वामी (मिथुन लग्न में) होकर कुण्डली में छठे स्थान में चन्द्रमा पड़ा हो, तो मोती पहिनना श्रेयस्कर होता है।
३. केन्द्र में पड़ा चन्द्र हल्का रहता है, अत: ऐसे चन्द्र को रखने वाले व्यक्तियों को भी चाहिए कि वे मोती पहिनें।
४. यदि जन्मकुण्डली में चन्द्रमा पंचमेश होकर १२वें भाव में, सप्तमेश होकर दूसरे भाव में, नवमेश होकर चतुर्थ भाव में, दशमेश होकर पंचम् भाव में तथा एकादश होकर षष्ठ भाव में बैठा हो, तो ऐसे व्यक्तियों को शीघ्रातिशीघ्र मोती धारण करना चाहिए।
५. यदि जन्मकुण्डली में धनेश चन्द्र सप्तम भाव में, चतुर्थेश चन्द्र नवम भाव में, पंचमेश चन्द्र राज्य भाव में, सप्तमेश चन्द्र द्वादश भाव में, नवमेश चन्द्र द्वितीय भाव में, दशमेश तृतीय भाव में और एकादशेश चन्द्र चतुर्थ भाव में बैठा हो, तो उस व्यक्ति को बिना आगा-पीछा सोचे मोती धारण कर लेना चाहिए।
६. यदि किसी की कुण्डली में चन्द्र वृश्चिक राशि का होकर कहीं भी स्थित हो, तो उसे भी मोती धारण करना चाहिए।
७. जिसकी जन्मपत्रिका में चन्द्रमा षष्ठ, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित हो, तो अवश्य मोती धारण करना चाहिए।
८. जिसकी कुण्डली में चन्द्रमा राहु, केतु या शनि इन तीनों में से किसी भी एक ग्रह के साथ बैठा हो, तो मोती पहिनना परम लाभदायक रहता है।
९. यदि चन्द्रमा अपनी राशि से छठे या आठवें भाव में पड़ा हो तो मोती पहिनना परम लाभदायक माना गया है।
१०. चन्द्रमा अपनी राशि से छठे या आठवें भाव में पड़ा हो तो मोती

पहिनना परम लाभदायक माना गया है।

११. चन्द्रमा बीच, वक्री या अस्तंगत अथवा राहू के साथ ग्रहणयोग बना रहा हो, तो चन्द्रमा का रत्न मोती पहिनना परम लाभदायक माना गया है।

१२. विंशोत्तरी पद्धति से जिस जातक को चन्द्रमा की महादशा या अन्तर्दशा चल रही हो, तो ऐसे व्यक्ति को अवश्य ही मोती धारण करना चाहिए।

रोगों पर मोती का प्रभाव–

१. पथरी का रोग हो और मोती की भस्म शहद के साथ ली जाय, तो तुरन्त प्रभाव करती है।

२. पेशाब में जलन होने पर मोती की भस्म केवड़े के जल के साथ लेने से तुरन्त फायदा होता है।

३. शरीर में गर्मी ज्यादा हो तो शुद्ध मोती का पहिनना उत्तम माना गया है।

४ बवासीर और जोड़ों के दर्द में मुक्तक भस्म रामबाण औषधि के समान समझनी चाहिए।

५. जिस स्त्री को पेट सम्बन्धी तकलीफ या व्याधि रहती हो, तो उसे उत्तम मोती पहिनना चाहिए।

मोती का प्रयोग–

सर्वप्रथम उत्तम कोटि का मोती खरीदें जिसमें किसी भी प्रकार का दोष न हो।

गुरुवार या रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन प्रात: ही सूर्योदय से दस बजे के बीच ४ रत्ती या इससे ज्यादा तोल की चाँदी की अँगूठी बनवावे और उसमें मोती जड़वावे। मोती लगभग ४ रत्ती का हो, तभी श्रेष्ठ फल देता है। मोती के साथ सोने या चाँदी की ही धातु काम में लायी जाय, अन्य धातु विपरीत फल देने लगती है।

अँगूठी में मोती इस प्रकार जड़ा जाय कि उसके नीचे का हिस्सा उँगली को छूता रहे।

यह अँगूठी बायें हाथ की कनिष्ठिका उँगली में पहिनी जाय। तर्जनी में भी ऐसी अँगूठी पहिनी जा सकती है।

प्रात: दस बजे के पश्चात् चन्द्रयज्ञ करे, चन्द्रकोष्टक बनावे तथा चार तोला सात रत्ती का चन्द्रासन बनावे और उस पर उस मुक्तक जड़ी अँगूठी को

स्थापित करे।

तत्पश्चात् षोडशोपचार से अँगूठी एवं चन्द्रासन की पूजा करे तथा चन्द्रमन्त्र से उसे अभिषित करे।

चन्द्रमन्त्र इस प्रकार से है–

ॐ इमन्देवाऽअसपत्नधूँ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इममनुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमष्यैपुत्रमष्ये-विशऽएषवोऽमीराजांसामाऽस्माक ब्राह्मणानाधूँ राजा ।।

इसके पश्चात् ओ३म् सौं सोमाय नम: मन्त्र से अग्नि में घृत की ७०० आहुतियाँ दे तथा गुग्गुल, तिलादि से हवन करे। तत्पश्चात् मोती में चन्द्र प्राण-प्रतिष्ठा करे (देखिए प्राण-प्रतिष्ठा अध्याय)।

पूर्णाहुति के पश्चात् वह अभिषित अँगूठी धारण करे और चन्द्रासन तथा उज्ज्वल मोती ब्राह्मण को दान में दे। इसके साथ ही बाँस की छाबड़ी, चावल, श्वेत वस्त्र, चीनी, घृत और कपूर का भी दान करे।

इस प्रकार से प्रयोग करके ही मोती धारण करने से अभीष्ट सिद्धि होती है। मोती पहिनने से पेट के रोग, मुख रोग, त्वचा रोग, ज्वर, पायरिया, दन्त रोग, हृदय व्याधि, ब्लडप्रेशर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

चन्द्रयन्त्र पूजा–पूजा एवं प्रयोग–

यदि चन्द्रबाधा प्रबल हो तो चन्द्रयन्त्र बनाना चाहिए। चाँदी के पाँच तोले के रजतपत्र पर चन्द्रयन्त्र खुदवाना चाहिए (देखिए 'ग्रह यन्त्र' अध्याय), तत्पश्चात् ७ दिनों तक इसकी षोडशोपचार पूजा करनी चाहिए एवं आठवें दिन यह यन्त्र श्रेष्ठ ब्राह्मणों को दान कर देना चाहिए। ऐसा करने से लक्ष्मी स्थायी बनती है तथा भयंकर-से-भयंकर रोग शान्त हो जाता है। चन्द्र जिन-जिन वस्तुओं का कारक है, उन वस्तुओं की वृद्धि के लिए चन्द्रयन्त्र अद्भुत प्रयोग है।

मुक्तक वजन–

मोती का कोई भी वजन हो सकता है, पर लगभग ४ रत्ती का मोती श्रेष्ठ एवं शीघ्र फलदाता माना गया है।

मोती पहिनने के दिन से २ वर्ष १ मास २७ दिन तक प्रभावयुक्त रहता है, तत्पश्चात् उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है, अत: इस अवधि के बाद दूसरा मोती अँगूठी में जड़वाना ही श्रेयस्कर रहता है।

◆◆◆

६. मूंगा : मंगल रत्न

इसे संस्कृत में विद्रुम, फारसी में मिरजान और अंग्रेजी में कोरल (Coral) कहते हैं। इसका स्वामी मंगल है। हिमालय पहाड़ और मान सरोवर के पास यह पाया जाता है।

मूँगा मुख्यतः चार रंग का होता है—लाल, सिन्दूरी, हिंगुले के रंग-सा और गेरुआ।

मूँगे के गुण–

प्रत्येक प्रकार के मूँगे में निम्न गुण प्रमुख रूप में पाए जाते हैं—

१. यह चमकदार होता है।
२. यह चिकना और उँगलियों में लेने पर फिसलने वाला होता है।
३. कोणदार होता है।
४. औसत से अधिक वजनदार प्रतीत होता है।

परीक्षा–

मूँगे की परीक्षा कई प्रकार से की जा सकती है। दो-तीन विधियाँ प्रस्तुत की जा रही हैं—

१. दूध में मूँगा डालने से दूध में से लाल रंग की झाई-सी दिखाई पड़ती है।
२. सूर्य की धूप में यदि कागज या रुई पर रख दिया जाए, तो रुई में अग्नि प्रवेश हो जाती है।
३. खून या रक्त में मूँगा रख दिया जाय तो मूँगे के चारों ओर गाढ़ा खून जम जाता है।

मूँगे के दोष–

जहाँ मूँगा उत्तम फल देने वाला होता हैं, वहाँ त्रुटियुक्त मूँगा पहिनने से अनिष्ट भी शीघ्र ही हो जाता है। मूँगे में मुख्यतः सात दोष पाये जाते हैं।

१. **अंग-भंग–**
यदि मूँगा कटा-छँटा हो, या कहीं से टूट गया हो, तो ऐसा मूँगा हानिकारक होता है। इसके पहिनने से सन्तान नष्ट हो जाती है।

२. **दुरंगा–**
दुरंगा मूँगा या जिस मूँगे में दो रंग मिले हुए हों, ऐसा मूँगा सुख-सम्पत्ति नष्ट करने वाला होता है।

३. **गड्ढेदार–**
जिस मूँगे में गड्ढा हो, वह पत्नी के लिए प्राणघातक होता है। स्त्री यदि पहिने तो पति के लिए मृत्युकारक समझना चाहिए।

४. **स्याह–**
काले धब्बे से युक्त मूँगा पहिनने से स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है तथा एक्सीडेंट होने की सम्भावना होती है।

५. **श्वेत–**
जिस मूँगे में सफेद छींटे पाए जायँ, वह मूँगा धन-धान्य का नाश करने वाला होता है।

६. **लाखी–**
लाख के रंग का मूँगा पहिनने से शस्त्र-भय बनता है।

७. **छेदित–**
छेदयुक्त मूँगा शरीर के स्वास्थ्य को चौपट करने वाला होता है। अतः ऐसा मूँगा कभी भी धारण नहीं करना चाहिए।

मूँगे की मणि (उपरत्न)–

जो व्यक्ति मूँगा नहीं खरीद सकते, उन्हें मूँगे की मणि धारण करनी चाहिए। इसे विद्रुम मणि या संगमूँगी कहते हैं।

वह मूँगी लाल रंग की होती है तथा छेदयुक्त होती है। यह तोल में हल्की होती है। यह चिकनी लाल, गुलाबी या मूँगिया रंग की भी पाई जाती है। इस पर गंदुमी छींटे भी पाए जाते हैं।

गुण–

१. यह साधारणतः चमकदार होती है।
२. यह तोल में हल्की होती है।
३. यह चिकनी होती है।

४. इसके शरीर पर कई रंग के छींटे भी पाए जाते हैं।
५. गर्भिणी के पेट पर यदि इसकी भस्म का लेप कर दिया जाए, तो गर्भ नहीं गिरता।

मूँगा कौन पहिने–

जिस व्यक्ति की कुण्डली में मंगल दूषित, अस्त या प्रभावहीन होता है, उसे मूँगा पहिनना अत्यन्त लाभदायक रहता है।

अपनी जन्मकुण्डली में निम्न प्रकारेण भौम की स्थिति रखने वाले को मूँगा पहिनना चाहिए।

१. यदि जन्मकुण्डली में मंगल, राहू या शनि के साथ कहीं भी स्थित हो, तो मूँगा पहिनना अत्यन्त लाभदायक माना गया है।
२. लग्न में मंगल हो तो मूँगा धारण करना चाहिए।
३. तीसरे भाव में मंगल बन्धुओं में मतभेद बढ़ाने में समर्थ होता है। अतः ऐसे व्यक्ति को भी मूँगा पहिनना श्रेयस्कर रहता है।
४. चतुर्थ भाव में स्थित मंगल पत्नी को रोगिणी बना देता है, अतः जिस व्यक्ति के चौथे भाव में मंगल हो, उसे मूँगा अवश्य धारण करना चाहिए।
५. सप्तम भाव या द्वादश भाव में स्थित मंगल पत्नी के जीवन के लिए शुभ नहीं है, अतः ऐसे व्यक्ति को भी मूँगा धारण करना चाहिए।
६. धनेश मंगल नवम भाव में, पराक्रमेश मंगल दशम में, चतुर्थेश भौम एकादश स्थान में हो, अथवा पंचम भाव का स्वामी भौम द्वादश भाव में हो तो मूँगा अवश्य धारण करना चाहिए।
७. नवमेश भौम चतुर्थ स्थान में, दशमेश मंगल पंचम भाव में या एकादशेश भौम षष्ठ स्थान में हो तो शीघ्र ही मूँगा रत्न धारण करना चाहिए।
८. मंगल कहीं पर भी बैठकर सप्तम, नवम, दशम या एकादश भाव पर दृष्टि डालता हो तो मूँगा रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।
९. लग्नेश भौम छठे भाव में हो, या धनेश भौम सप्तम भाव में हो, चतुर्थेश भौम नवम भाव में हो, पंचमेश भौम दशम भाव में हो, सप्तमेश मंगल द्वादश भाव में हो, नवमेश भौम धन-स्थान में हो, दशमेश मंगल तीसरे भाव में हो या एकादशेश मंगल चौथे भाव में हो तो मूंगा रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

१०. जन्मकुण्डली में मंगल ६, ८, या १२वें भाव में हो तो मूँगा रत्न पहिनना अत्यन्त लाभदायक माना गया है।
११. यदि जन्मकुण्डली में मंगल सूर्य के साथ बैठा हो, या सूर्य से देखा जाता हो तो मूँगा पहिनना परमावश्यक है।
१२. चन्द्र मंगल के साथ में हो तो मूँगा पहिनना आर्थिक दृष्टि से शुभ माना गया है।
१३. यदि जन्मकुण्डली में मंगल अष्टमेश या षष्ठेश के साथ हो या इन ग्रहों से देखा जाता हो, तो मूँगा अवश्य पहिनना चाहिए।
१४. यदि जन्मकुण्डली में मंगल वक्री, अस्त या वेदयुक्त हो तो मूँगा जरूर पहिनना चाहिए।
१५. मंगल शुभ भावों का स्वामी होकर शत्रु ग्रहों में स्थित हो तो मंगल को बलशाली बनाने के लिए मूँगे को धारण करना श्रेयस्कर माना गया है।

रोगों पर मूँगे का प्रभाव–

१. रक्त सम्बन्धी विकारों में मूँगा परम लाभदायक है। यदि किसी को ब्लडप्रेशर की शिकायत हो तो मूँगे की भस्म शहद के साथ चाटने से शीघ्र लाभ होता है।
२. मंदाग्नि मे मूँगे की भस्म गुलाब जल के साथ लेने से लाभ होता है।
३. प्लीहा या पेट का दर्द हो तो मूँगे की भस्म मलाई के साथ दिलानी चाहिए।
४. कमजोरी में भी मूँगे की भस्म गुणकारी मानी गई है।
५. मिर्गी, हृदयरोग या वायुकम्प में मूँगे की भस्म को दूध के साथ देने से रोग जड़ से नष्ट हो जाता है।

मूँगे का प्रयोग–

मंगलवार को मेष या वृश्चिक राशि पर चन्द्रमा या मंगल ग्रह हो, तो उस दिन मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र हो, तो उस दिन प्रातः सूर्योदय से ग्यारह बजे तक के मध्य सोने की अँगूठी बनवाकर मूँगा जड़वावे। यदि मंगल मकर राशि में हो तो उस दिन भी अँगूठी बनवाकर मूँगा जड़वाना श्रेयस्कर माना गया है।

अँगूठी में मूँगा इस प्रकार से जड़वावे कि मूँगे का निचला हिस्सा उँगली को छूता रहे।

यह अँगूठी बाएँ हाथ की मध्यमा उँगली में धारण करनी चाहिए।

प्रातः ग्यारह बजे के बाद भौम-यज्ञ करे। ताम्बे का त्रिकोण बनवाकर उस पर मंगल यन्त्र बनवावे (देखिए ग्रह यन्त्राध्याय), फिर उस यन्त्र पर मूँगे से जड़ित अँगूठी रखकर षोडशोपचार पूजा कर भौम मन्त्र से अभिषित करे। भौम मन्त्र इस प्रकार से है–

ओं अग्निर्मूर्द्धादिव ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम् ।
अपाधूँ रेताधूँसि जिन्वति ।। भौमाय नमः ।।

तत्पश्चात् ब्राह्मण से 'भौं भौमाय नमः' लघु मन्त्र की ७०० आहुतियाँ दे।

हवन के पश्चात पूर्णाहुति दे एवं उस अँगूठी में मंगल की प्राणप्रतिष्ठा करे (देखिए प्राण-प्रतिष्ठा अध्याय)।

तब वह अँगूठी पहिनकर ब्राह्मण को वह भौम-यन्त्र, गेहूँ, गुड़, रक्त, वस्त्र और दक्षिणा दे। इस प्रकार करने से ही अभीष्ट सिद्धि संभव है।

मूँगे की दान विधि–

यदि जन्मकुण्डली में मंगल ज्यादा दूषित या पापी हो तो मूँगे का दान करना चाहिए। ताम्रपत्र पर भौम-यन्त्र बनवाकर सात दिन तक उसका पूजन करावे और 'ओं भूमिसुताय नमः' मन्त्र से जप करे। इस मन्त्र का अट्ठाईस हजार जप करावे। आठवें दिन वह मन्त्र, पीले रंग की गाय और द्रव्य योग्य ब्राह्मण को दान कर दे। इसके साथ मूँगे का गुप्त दान भी करे। इस प्रकार करने से भौम-बाधा शान्त हो जाती है तथा सभी प्रकार के अनिष्ट मिटकर कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है।

मूँगे का वजन–

कम से कम छः रत्ती सोने की अँगूठी बनवावे और उसमें आठ रत्ती के मूँगे को जड़वावे। इस प्रकार से बनी अँगूठी ही प्रभावशाली मानी जाती है। ८ रत्ती से छोटा मूँगा कम फल देने वाला माना गया है।

मूँगा अँगूठी में जड़वाने के दिन से तीन साल तीन दिन तक प्रभाव युक्त रहता है, तत्पश्चात् वह निस्तेज हो जाता है। अतः इस समय के बाद मंगल प्रधान व्यक्तियों को दूसरा मूँगा पहिनना चाहिए।

इस प्रकार मूँगे के बारे में विवेचन करने के पश्चात् आगे के अध्याय में बुध रत्न पन्ने के बारे में विवेचन किया जा रहा है।

◆◆◆

७. पन्ना : बुध रत्न

पन्ना बुध ग्रह का रत्न कहा गया है। इसे संस्कृत में मरकत मणि, फारसी में जमरन, हिन्दी में पन्ना और अंग्रेजी में एमराल्ड (Emerald) कहते हैं। इसका रंग हरा होता है तथा अधिकतर दक्षिण महानदी, हिमालय, गिरनार और सोमनदी के पास पाया जाता है। इस रत्न को धारण करने वाले वस्तुतः सौभाग्यशाली होते हैं।

पन्ना मुख्यतः पाँच रंगों का होता है–

१. तोते के पंख के समान रंग वाला।
२. हरे पानी के रंग जैसा।
३. सरेस के पुष्प के रंग जैसा।
४. मयूर पंख जैसा, और
५. हल्के सेंदुल पुष्प के समान।

पन्ना हृदय से कोमल होता है और इसके अंग-प्रत्यंग नरम होते हैं।

गुण–

पन्ने में मुख्य छः गुण पाये जाते हैं–

१. पन्ना चिकना होता है।
२. यह साफ पारदर्शीवत् होता है।
३. इसकी चमक तेजस्वी होती है।
४. इसका रंग हरा होता है।
४. इसके कोण उत्तम कोटि के होते हैं, और
६. अन्य पत्थरों की अपेक्षा यह कोमल होता है।

सच्चे पन्ने की परीक्षा–

पन्ने को परखने की कई विधियाँ हैं, जिनसे ज्ञात किया जा सकता है कि पन्ना सच्चा है या नहीं । सच्चे पन्ने की परीक्षा निम्न प्रकार से सम्भव है–

१. पन्ने को यदि पानी के गिलास में डाल दिया जाय तो पानी में से हरी किरणें निकलती-सी दिखाई देती हैं।

२. सफेद वस्त्र पर पन्ना थोड़ी ऊँचाई पर रखें, तो वस्त्र हरे रंग का दिखाई देने लगता है।

३. यदि औसत वजन से हल्का प्रतीत हो तो पन्ना शुद्ध समझना चाहिए।

पन्ने से लाभ–

समस्त रत्नों में पन्ने को काफी महत्त्व दिया गया है, क्योंकि इसके पहिनने से चित्त की विकलता मिटती है। विद्यार्थी यदि पन्ना पहिने तो बुद्धि तीक्ष्ण होती है एवं सरस्वती की कृपा बनी रहती है। यह रोगियों के लिए बलवर्द्धक, आरोग्यदायक एवं सुख देने वाला है। जिस घर में यह रत्न होता है, वहाँ अन्न-धन की वृद्धि, सुयोग्य संतानवृद्धि, भूत-प्रेत-बाधा शान्त तथा सर्प-भय का नाश होता है। जिस पुरुष या स्त्री की उँगली में पन्ना पहिना हुआ होता है, उस पर जादू-टोने का कोई असर नहीं होता। यदि प्रातःकाल पन्ने को पाँच मिनट साफ पानी में फिरावे और फिर उस पानी से आँखें छिटकी जायें, तो नेत्र रोग होते ही नहीं हैं, और हों तो ठीक हो जाते हैं। गर्भिणी स्त्री यदि अपनी कमर पर बाँध ले, तो शीघ्र प्रसव होता है।

पन्ने के दोष–

पन्ने में मुख्यतः बारह दोष माने गए हैं। पन्ना खरीदते समय इन दोषों से बचना चाहिए–

१. जाल–
जिस पन्ने में जाल-सा गुँथा हुआ दिखाई दे, वह पन्ना अशुभ होता है तथा इसके पहिनने से अस्वस्थता बढ़ती है।

२. गंजा–
जिस पन्ने में चमक न हो, यह उलटने पर सुन्न-सा दिखाई दे, वह पन्ना व्यर्थ है। ऐसा पन्ना धन-हानि कराने में समर्थ होता है।

३. धुन्ध–
जिस पन्ने में डोरे के समान छोटी-छोटी टूटी हुई धारियाँ दिखाई दें, वह पन्ना वंश-वृद्धि के लिए घातक कहा गया है।

४. रुक्ष–
जो पन्ना खुरदरा हो तथा आकाश में देखने पर रंग फटा हुआ-सा

नजर आवे, तो वह पन्ना धारण करने पर पशु-धन का नाश करता है।

५. गड्ढा–
जिस पन्ने में गड्ढा या खड्डा हो वह पन्ना पहिनने वालों के लिए शस्त्र-भय की बुद्धि करता है।

६. धब्बा–
जिस पन्ने में काला-सा धब्बा या छोटे-छोटे धब्बे दिखाई दें, वह स्त्री के लिए घातक कहा गया है।

७. चीरित–
जिस पन्ने में एक सीधी रेखा या कई पतली-पतली रेखाएँ दिखाई दें, वह लक्ष्मी का नाश करने वाला होता है।

८. दुरंगा–
जिस पन्ने में दो रंग दिखाई दें, वह पन्ना बल, वीर्य, बुद्धि इत्यादि को नष्ट करने वाला होता है।

९. सुन्नी–
जिस पन्ने में पीली बिंदियाँ दिखाई दें, वह पुत्रों का नाश करने वाला माना गया है।

१०. रक्तबिन्दु–
जिस पन्ने में लाल बिन्दु दिखाई दे, वह सुख-सम्पत्ति नष्ट करने वाला होता है।

११. मधुक–
जिस पन्ने का रंग शहद के समान हो, वह माता-पिता के लिए कष्टप्रद होता है।

१२. स्वर्णमुखी–
जिस पन्ने का रंग सोने के समान हो, या उसका मुँह पीला हो तो ऐसा पन्ना मनुष्य के लिए सभी प्रकार के कष्ट बढ़ाता है।

पन्ने के उपरत्न–

पन्ने के तीन उपरत्न है–

१. सगपन्ना–
यह मोटा होता है, इसके किनारे गहरे रंग के होते हैं, पर बीच में सफेद-सा होता हैं।

२. मरगज–

यह चिकना होने के साथ-साथ पूरे का पूरा सफेद होता है और हल्की-सी हरी झाईं मारता है।

३. पीतपनी–

यह चिकना हल्का हरा होता है तथा इस पर पीले या लाल रंग के छींटे लगे हुए होते हैं।

जो व्यक्ति पन्ना नहीं खरीद सकते, वे बुध ग्रह के लिए पन्ने के उपरत्न पहिन सकते हैं। यह पन्ने की अपेक्षा कम प्रभावशाली होता है।

पन्ना कौन पहिने ?–

पन्ने के लिए कहा गया है कि इसे कोई धारण करे तो उसे लाभ ही मिलता है, फिर भी उन व्यक्तियों को तो पन्ना विशेष रूप से पहिनना चाहिए जिनकी जन्मकुंडली में निम्न प्रकारेण स्थितियाँ पाई जाती हों–

१. मिथुन लग्न वाले के लिए पन्ना धारण करना सर्वोत्तम है। ऐसे व्यक्तियों को तो शीघ्र ही इस रत्न को धारण करना चाहिए।

२. कन्या लग्न वालों के लिए भी पन्ना अत्यन्त लाभप्रद माना गया है।

३. जिस कुण्डली में बुध छठे, आठवें या बारहवें भाव में पड़ा हो, उसे पन्ना धारण करना चाहिए।

४. जिस व्यक्ति की जन्मकुण्डली में बुध मीन राशि में स्थित हो उसे पन्ना पहिनना श्रेष्ठ रहता है।

५. यदि बुध धनेश होकर नवम भाव में, पराक्रमेश होकर दशम भाव में, चतुर्थेश होकर आय स्थान में स्थित हो तो पन्ना धारण करना कल्याणकारी माना गया है।

६. यदि बुध सप्तमेश होकर दूसरे भाव में, नवमेश होकर चौथे भाव में, आयेश होकर छठे भाव में हो तो पन्ना शुभ फलप्रद है।

७. यदि बुध श्रेष्ठ भाव का स्वामी होकर अपने भाव से अष्टम स्थान में हो तो पन्ना अवश्य धारण करना चाहिए।

८. यदि बुध की अन्तर्दशा या महादशा चल रही हो, तो पन्ना पहनना शुभ रहता है।

९. यदि बुध जन्मकुण्डली में श्रेष्ठ भाव–२, ३, ४, ५, ७, ९, १०, ११ का स्वामी होकर अपने भाव से छठे स्थान में पड़ा हो तो पन्ना धारण करना श्रेष्ठ माना गया है।

१०. यदि बुध, मंगल, शनि, राहू अथवा केतु के साथ स्थित हो तो पन्ना पहिनना शुभ रहता है।

११. यदि बुध पर शत्रु ग्रहों की दृष्टि हो तो पन्ना अवश्य पहिना जाना चाहिए।

१२. व्यापार, वणिक् कार्य, गणित सम्बन्धी कार्य, (एकाउन्टेन्ट वगैरह) बैंक आदि में काम करने वाले पन्ना पहिनें तो अत्यन्त शुभ फल प्राप्त होता है।

रोगों पर पन्ने का प्रभाव–

१. पन्ने को इक्कीस दिन तक केवड़े के जल में रखें और फिर उसे घिसकर मलाई के साथ खावें, प्रबल बल-बुद्धि एवं वीर्य बढ़ता है।

२. पथरी, बहुमूत्र आदि रोगों में पन्ने की भस्म अचूक औषधि है।

३. आधा सीसी, बवासीर, ज्वर, गुर्दा, रक्त सम्बन्धी बीमारी आदि में पन्ने की भस्म शहद के साथ चाटी जाय तो शीघ्र लाभ मिलता है।

पन्ने का प्रयोग–

बुधवार के दिन आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र हो उस दिन सूर्योदय से १०-३० बजे तक सोने की अँगूठी बनवायें। छः रत्ती से कम सोना प्रभावशाली नहीं होता। इसमें इसी समय के बीच तीन रत्ती का पन्ना जड़वायें। तीन रत्ती से कम वजन का पन्ना कम प्रभावशाली होता है। छः रत्ती या इससे ज्यादा वजन का पन्ना श्रेष्ठ माना गया है।

तत्पश्चात् ११ बजे के बाद से यज्ञ करें, सर्वतोभद्र चक्र बनावें, उस पर चाँदी का कलश रखें और उस कलश की सर्वोपचार पूजा कर उसमें पन्ना जड़ी अँगूठी रख दें तथा 'ओ३म् ह्रां-ह्लीं वुं ग्रहनाथ बुधाय नमः' मंत्र से अभिषित करें।

तत्पश्चात् बुध का बाणवत् स्थंडिल बनावें, उसकी पूजा करें और बुध मंत्र से ४००० आहुतियाँ दें। बुध मंत्र इस प्रकार है–

'ओ३म् उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहित्त्व मिष्टापूर्ते सघूं सृजेथामयंच ।
अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्चसीदतः ।।

आहुतियों के पश्चात् छः तोले के चाँदी के पत्र पर उत्कीर्ण बुध-यन्त्र को बुध-स्थंडिक पर स्थापित करें एवं उस पर कलश में से अँगूठी निकालकर

रखें एवं कलश के जल से उसे अभिषेक दें तथा प्राण-प्रतिष्ठा करें। पूर्णाहुति के पश्चात् बुध-यन्त्र, उत्तम कोटि का पन्ना, स्वर्ण, नील-वस्त्र, काँस्य, कस्तूरी एवं चावल का दान करें।

इस प्रकार करने से स्थायी लक्ष्मी-प्राप्ति एवं विद्या, बुद्धि, बल प्राप्त होता है।

पन्ना का वजन–

पन्ने के साथ स्वर्ण धातु ही प्रभावयुक्त मानी गई है। तीन रत्ती से छोटा पन्ना कम प्रभावशाली, तीन से छः रत्ती का प्रभावशाली एवं छः रत्ती से बड़ा पन्ना श्रेष्ठ प्रभावशाली माना गया है।

अँगूठी में जड़वाने के दिन से तीन वर्ष तक उस पन्ने का प्रभाव रहता है, तत्पश्चात् उसका प्रभाव समाप्त हो जाता है, अतः तीन वर्ष के उपरान्त दूसरा पन्ना धारण करना चाहिए।

आगे के अध्याय में बृहसति-रत्न पुखराज पर विचार प्रस्तुत किया जा रहा है।

◆◆◆

८. पुखराज : बृहस्पति रत्न

संस्कृत में इसे पुष्पराग, हिन्दी में पुखराज या पुषराज, फारसी में जर्द याकूत, अंग्रेजी भाषा में टोपे (Topay) कहते हैं। यह मुख्यतः लंका, उड़ीसा तथा बंगाल के अंचलों में, ब्रह्मपुत्र के आसपास और विन्ध्य तथा हिमालय पहाड़ के अंचल में पाया जाता है।

यह मुख्यतः पाँच रंगों में पाया जाता है–

१. हल्दी के रंग के समान जर्द।
२. केशर के समान केशरिया।
३. नींबू के छिलके के समान।
४. स्वर्ण के रंग के समान।
५. सफेद, पर पीली झाईं लिए हुए।

पुखराज के गुण–

१. यह रत्न चिकना होता है।
२. पुखराज चमकदार होता है।
३. यह पानीदार होता है।
४. किनारे व्यवस्थित होते हैं, और
५. यह लगभग पारदर्शी-सा होता है।

पुखराज की परीक्षा–

पुखराज खरीदते समय पूरी परीक्षा कर लेनी चाहिए। पुखराज की परीक्षा के निम्न तरीके हैं–

१. सफेद कपड़े पर पुखराज रखकर सूर्य की धूप में देखें तो कपड़े पर पीली झाईं-सी दिखाई देगी।
२. दूध में चौबीस घण्टे पुखराज रखने के बाद भी उसकी चमक क्षीण न पड़े तो असली पुखराज समझना चाहिए।
३. जहरीला जानवर जिस स्थान पर काटे, वहाँ पर पुखराज घिसकर

लगावे और तुरन्त जहर मिट जावे तो सच्चा पुखराज समझना चाहिए।

पुखराज के दोष–

जहाँ पुखराज में विशेषताएँ हैं वहाँ उसमें दोष भी पाये जाते हैं। मुख्यतः पुखराज में निम्न दोष पाये जाते हैं–

१. सुन्न–
जिस पुखराज में चमक नहीं होती, उसे सुन्न कहते हैं। ऐसा पुखराज स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

२. चीरी–
जिस पुखराज में खड़ी लकीर दिखाई दे, वह पुखराज बन्धु-बान्धवों में विरोध पैदा करता है।

३. दूधक–
सफेद झक्क पुखराज या दूधिये रंग का पुखराज शरीर में चोट करता है।

४. जाल–
यदि पुखराज में जाल हो, तो वह पुखराज सन्तान पक्ष के लिए हानिकारक होता है।

५. श्याम–
जिस पुखराज में काला धब्बा हो, वह पशुओं के लिए अनिष्टकारक है।

६. श्वेत बिन्दु–
सफेद छोटे-छोटे बिन्दुओं वाला पुखराज मृत्युकारक माना गया है।

७. रक्तिम–
लाल छींटों से युक्त पुखराज धन-धान्य का नाश करने वाला होता है।

८. खड्डा–
जिस पुखराज में खड्डा पाया जाय, वह लक्ष्मी को मिटाने वाला होता है।

९. दुरंगा–
दो रंगों वाला पुखराज रोग-वृद्धि में सहायक होता है।

पुखराज के उपरत्न–

जो व्यक्ति धनाभाव के कारण पुखराज न खरीद सकें, उन्हें पुखराज

के उपरत्न धारण करने चाहिए। पुखराज के उपरत्न पाँच हैं–

१. सोनेला–
यह चमकदार शुभ्र, सफेद रंग का तथा चिकना होता है। तुर्किस्तान तथा हिमालय में यह पाया जाता है।

२. घिया–
यह ईरान में पाया जाता है। इसका रंग हल्का पीला होता है तथा यह जरूरत से ज्यादा हल्का होता है।

३. कैरू–
यह बर्मा, चीन इत्यादि में पाया जाता है। पीतल के समान वर्ण वाला यह उपरत्न टूटने पर कपूर-सी सुगन्ध फैलाता है।

४. सोनल–
इस उपरत्न में से सफेद-पीली मिश्रित किरणें-सी निकलती दिखाई देती हैं। यह लंका, काबुल आदि की ओर अधिकतर पाया जाता है।

५. केसरी–
केसर के समान रंग वाला यह उपरत्न लंका तथा गन्डक नदी के आसपास पाया जाता है। यह वजन में भारी तथा चमक में फीका होता है।

पुखराज कौन पहिने ?–

जो व्यक्ति गुरु द्वारा संचालित हों या जिनकी जन्मकुण्डली में गुरु प्रधान हो, उन्हें पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए।

१. धनु और मीन लग्न रखने वाले व्यक्तियों को पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए।
२. जन्मकुण्डली में गुरु पाँचवें, छठे, आठवें या बारहवें भाव में पड़ा हो तो पुखराज पहिनना चाहिए।
३. यदि गुरु मेष, वृष, सिंह, वृश्चिक, तुला, कुंभ और मकर राशियों पर स्थित हो तो पुखराज धारण करना श्रेष्ठ रहता है।
४. मकर राशि पर गुरु हो तो शीघ्र पुखराज धारण करना चाहिए।
५. यदि गुरु धनेश होकर नवम् भाव में, चतुर्थेश होकर एकादश भाव में, सप्तमेश होकर द्वितीय भाव में, भाग्येश होकर चतुर्थ भाव में, राज्येश होकर पंचम भाव में स्थित हो, तो पुखराज धारण करने से श्रेष्ठ फल

रहता है।

६. यदि गुरु उत्तम भाव का स्वामी होकर अपने भाव से छठे या आठवें स्थान में स्थित हो तो पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए।

७. किसी भी ग्रह की महादशा में बृहस्पति का अन्तर चल रहा हो तो पुखराज धारण करना श्रेष्ठ फल देता है।

८. यदि लड़की का विवाह नहीं हो रहा हो या विवाह होने में अनावश्यक विलम्ब हो रहा हो तो पुखराज धारण करने से शीघ्र ही मन की इच्छा पूरी होती है।

९. पुखराज धारण करने से पाप-विचारों एवं कार्यों में क्षीणता आती है तथा शुभ एवं आध्यात्मिक विचार प्रबल होते हैं, चित्त में शांति बढ़ती है।

रोगों पर पुखराज का प्रभाव–

१. पीलिया, एकान्तिक ज्वर आदि में पुखराज शहद के साथ घिसकर दें, तो लाभ होता है।

२. तिल्ली, गुर्दा आदि रोगों में पुखराज केवड़े के जल में घोटकर दें, तो लाभ होता है।

३. हड्डी का दर्द, बवासीर, खाँसी आदि में पुखराज की भस्म श्रेष्ठ गुणकारी मानी गई है।

४. यदि मात्र पुखराज कुछ समय तक मुँह में रखा जाय तो मुँह की दुर्गन्ध दूर होती है, दाँत मजबूत होते हैं तथा मुँह से सुगन्ध आने लगती है।

पुखराज का प्रयोग–

गुरुवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन प्रातः सूर्योदय के समय पुखराज ले तथा ग्यारह बजे से पहले-पहले अँगूठी बनवावे। पुखराज के साथ केवल सोना ही फलदायी है। सोने की अँगूठी लगभग सात रत्ती या इससे भारी हो। चार रत्ती से हल्का पुखराज कम प्रभावशाली होता है।

पट्टिशाकर गुरु का स्थंदल बना, उस पर नौ चाँदी के पत्र पर गुरु-यंत्र अंकित करे तथा बीच में पुखराज जड़े। यह यंत्र स्थंदल पर रक्खे एवं चने की दाल का अष्टमण्डल बनावे, उस पर कलश स्थापन कर अभिषेक दे एवं गुरु-मन्त्र से उसका जप करे। गुरु मन्त्र यों है–

ॐ बृहस्पते अतियनर्य्योऽअर्हाचि गद्विभतिक्रतुमज्जनेषु ।
यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजा ततदस्मा सुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥

तत्पश्चात् 'ॐ ऐं श्री बृहस्पतये नमः' मंत्र से ४५०० आहुतियाँ दें एवं बाद में उस अँगूठी में गुरु की प्राण-प्रतिष्ठा कर दें (देखिए प्राण-प्रतिष्ठा अध्याय)।

फिर शुभ प्रहर में अँगूठी धारण कर पीला वस्त्र, पीताम्बर, चने की दाल, स्वर्ण, शर्करा, हल्दी, बृहस्पति-यंत्र, पुखराज एवं पीतपुष्प का दान कर दे।

इस प्रकार करने से जीवन के समस्त मनोवांछित कार्य सम्पन्न होते हैं एवं घर में धन-धान्य की वृद्धि होती है। घर में पुण्योदय होता है एवं स्थायी लक्ष्मी का आधार बनता है।

पुखराज-वजन–

चार रत्ती से कम तोल का वजन फलदायी नहीं माना गया है तथा जिस दिन पुखराज धारण करे, उस दिन से उक्त पुखराज का प्रभाव ४ साल ३ महीने १८ दिन रहता है। इसके पश्चात् शुभ मुहूर्त में दूसरा पुखराज धारण करना चाहिए।

◆◆◆

९. हीरा : शुक्र रत्न

संस्कृत में इसे वज्रमणि या इन्द्रमणि, हिन्दी में हीरा, फारसी में अलिमस और अंग्रेजी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं। यह रत्नराज कहलाता है, क्योकि अन्य समस्त रत्नों में यह दुर्लभ और कीमती होता है। समस्त देवतागण इसे धारण करते हैं। भाग्यवान देशों में ही इसकी खानें होती हैं तथा विरले पुरुष ही इस रत्न को धारण करते हैं।

हीरे की विविधता–

हीरे के मुख्यत: ८ भेद पाये जाते हैं–

१. **अत्यन्त सफेद–**
हंस के पंख के समान शुभ्र हीरा हंसपति हीरा कहलाता है। यह अत्यन्त मूल्यवान एवं शुभ होता है।

२. **कमलासन हीरा–**
जो हीरा कमल पुष्प के समान वर्णवाला होता है, वह अत्यन्त तेजस्वी होता है। भगवान् विष्णु स्वयं इसे धारण करते हैं।

३. **वनस्पति हीरा–**
सब्जी के रंग का हीरा वनस्पति हीरा कहलाता है। यह दुर्लभ होता है।

४. **वासन्ती हीरा–**
गेंदे के पुष्प के रंग वाला हीरा वासन्ती हीरा कहलाता है। इसे स्वयं शंकर धारण किये रहते हैं।

५. **नीलक हीरा–**
नीलकंठ के रंग का नीला हीरा मूल्यवान, श्रेष्ठ एवं उत्तम कोटि का होता है। देवपति इन्द्र के गले में यह सुशोभित रहता है।

६. **श्यामल हीरा–**
काला या श्याम रंग का हीरा भाग्य-विधायक होता है। यमराज इस हीरे को धारण किये रहते हैं।

७. **तेलिया हीरा–**
तेल के समान रंग वाला ज़र्द वर्णयुक्त हीरा तेलिया हीरा कहलाता है। यह मनोवाँछि ¨ कार्य सम्पन्न करने वाला माना गया है।

८. **पीत हीरा–**
पीला वासन्ती पुष्प पराग के सदृश हीरा पीत हीरा कहलाता है। स्वयं कामदेव इस हीरे के स्वामी हैं। प्रेमी-प्रेमियों को रिझाने या केलि-क्रीड़ा में यह हीरा परमोपयोगी माना गया है।

हीरे के गुण–

हीरे में मुख्यत: पाँच गुण पाये जाते हैं–

१. यह चमकदारा होता हैं।
२. यह चिकना, हाथों में से फिसलने वाला होता है।
३. इसमें से किरणें निकलती रहती हैं।
४. अँधेरे में यह जुगनू की तरह उजाला करता है।
५. यह अच्छे पानी का तथा अच्छे घाट का होता है।

परीक्षा–

हीरे की परीक्षा करने की कई विधियाँ प्रचलित हैं, जिनमें से कुछ नीचे दी जा रही हैं–

१. एकदम गरम दूध में यदि हीरा डाल दिया जाय और तुरन्त दूध ठंडा हो जाय, तो हीरा सच्चा समझना चाहिए।
२. गरम पिघले हुए घी में हीरा डाल दिया जाय, तो घी तुरन्त जमने लग जाएगा।
३. सूर्य की धूप में हीरा रख दिया जाय तो उसमें से इन्द्रधनुषवत् किरणें निकलती दिखाई देती हैं।
४. यदि तोतले बच्चे के मुँह में हीरा रख दिया जाय और वह धाराप्रवाह बोलने लगे, तो हीरा सच्चा समझना चाहिए।
५. विपरीत लिंगी पहिना हुआ हीरा देखकर वश में होता-सा प्रतीत हो, तो हीरा सच्चा समझा जाना चाहिए।

हीरे की विशेषताएँ–

हीरा चमकदार होता है, साथ ही इसमें वशीकरण करने की अपूर्व क्षमता होती है। इसके पास में रहने से भूत-प्रेत का कतई डर नहीं रहता। हीरा

पहिनकर युद्ध में जाने से विजय प्राप्त होती है। स्त्री के साथ संभोग करते समय दोनों ने हीरा पहिना हुआ हो तो स्थंभन रहता है तथा काम-क्रीड़ा में मादकता छा जाती है। शत्रुओं को वश में करने की इसमें क्षमता होती है तथा इसके पहिनने से वंश-वृद्धि, धन-धान्य-वृद्धि एवं अटूट लक्ष्मी बनी रहती है।

इसके पहिने होने से विद्युत् झटका क्षीण-सा प्रतीत होता है। जादू-टोना नहीं लगता तथा जहर खा लेने पर भी उसका असर नहीं के बराबर होता है। बुद्धि, सम्मान, बल एवं शरीर की पुष्टता हीरा धारण करने से स्वतः ही बढ़ती है।

हीरे के दोष–

१. **रक्तमुखी–**
जिस हीरे का मुँह लाल हो, वह रक्तमुखी हीरा कहलाता है। ऐसा हीरा धन-धान्य का नाश करने वाला होता है।

२. **पीतमुखी–**
पीले मुँह वाला हीरा वंश का नाश करने वाला होता है।

३. **श्याम जवी–**
जिस हीरे में श्याम जो के जैसा चिह हो, वह बल, वीर्य, बुद्धि आदि का नाश करने वाला होता है।

४. **गंदमी–**
जिस हीरे का रंग धूमिल या धुएँ के सदृश हो, वह पशुधन का नाश करने वाला होता है।

५. **गड्ढा–**
जिस हीरे में गड्ढा हो, वह रोग को बढ़ाने वाला माना गया है।

६. **सुन्न–**
जिस हीरे में चमक नहीं हो, वह सुन्नी हीरा कहलाता है। ऐसा हीरा लक्ष्मी का नाश करने वाला होता है।

७. **लकीर–**
जिस हीरे में आड़ी लकीर दिखाई दे, वह हीरा चित्त की अस्थिरता बढ़ाने वाला तथा मनोमालिन्य बढ़ाने वाला होता है।

८. **बिन्दु–**
जिस हीरे में किसी भी रंग का छोटा-सा बिन्दु दिखाई दे, वह मृत्युकारक हीरा माना गया है।

९. **धार–**
जो हीरा कटा हुआ या धारयुक्त होता है, उसे पहिनने से चोर-भय बढ़ता है।

१०. **काकपक्षी–**
जिस हीरे में कौए के पञ्जे जैसा चिह दिखाई दे, वह काकपक्षी हीरा कहलाता है। ऐसा हीरा सभी प्रकार से अनिष्ट करने वाला होता है।

हीरे के उपरत्न–

१. **दतला–**
यह हिमालय, बर्मा तथा श्याम में पाया जाता है। यह दिखने में चमकदार तथा सफेद होता है।

२. **तंकू हीरा–**
यह गुलाबी-सी झाईं रखने वाला होता है। कावेरी और गंगा के कछारों में यह बहुतायत से पाया जाता है।

३. **कंसला–**
यह अधिक चिकना, कोणीय तथा पानीदार होता है एवं नेपाल के आसपास यह मिलता है। यह हीरा हल्की हरी झाईं रखने वाला होता है।

४. **कुरंगी–**
यह वजन में भारी, कम चमकदार तथा पीली-सी झाईं वाला होता है। गंगा के कछार तथा हिमालय में इसका निवासस्थान है।

५. **सिम्मा–**
यह सफेद-काले धब्बों से चमकयुक्त पानीदार होता हैं तथा उत्तर दिशा के पहाड़ों में अधिकतर मिलता है।

प्रभाव–

जो व्यक्ति हीरा खरीदने की सामर्थ्य न रखते हों, उन्हें हीरे के उपरत्न धारण करने चाहिए। यह हीरे की अपेक्षा कम प्रभावशाली होते हैं।

हीरा कौन पहिने ?–

१. जिस पुरुष या स्त्री को भूत-प्रेतादि बाधा हो, उसे तुरन्त हीरा पहिनना

चाहिए।

२. जहर को समाप्त करने में हीरा प्रबल माना गया है, अत: जिस व्यक्ति को जंगलादि में घूमना पड़ता हो या विषधर जन्तुओं से पाला पड़ता रहता हो, उसे हीरा अवश्य धारण करना चाहिए।

३. तुला या वृष लग्न रखने वाले व्यक्तियों को भी हीरा धारण करना चाहिए।

४. जो काम-क्रीड़ा में अशक्त या निर्बल हों या जिनसे पत्नी संतुष्ट न हो, उन्हें हीरा पहिनना चाहिए।

५. घर में पति-पत्नी में कलह या मनमुटाव हो तो हीरा पहिनना श्रेयस्कर है।

६. व्यापारिक एजेंट, जिन्हें कई व्यक्तियों से मिलना पड़ता हो या प्रेमी अथवा प्रेमिका, जो दूसरे को वश में करना चाहते हों, उन्हें भी हीरा धारण करना चाहिए।

७. जिस व्यक्ति की कुण्डली में शुक्र शुभ भावों का स्वामी होकर अपने भाव से अष्टम या षष्ठ हो तो उसे हीरा अवश्य पहिनना चाहिए।

८. जन्मकुण्डली में यदि शुक्र छठे या आठवें भाव में हो तो हीरा पहिनने की सलाह देनी चाहिए।

९. जन्म कुण्डली में यदि शुक्र वक्री, नीच, अस्तंगत या पाप ग्रहों के साथ स्थित हो तो हीरा पहिनना परम लाभकारी रहता है।

१०. किसी भी ग्रह की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा हो तो हीरा अवश्य धारण करना चाहिए।

११. बल, वीर्य, कामेच्छा बढ़ाने के लिए भी हीरा पहिना जाता है।

रोगों पर हीरे का प्रभाव–

१. मंदाग्नि में यदि हीरे की भस्म शहद के साथ ली जाय, तो भूख लगती है और मंदाग्नि नष्ट होती है।

२. जिसका वीर्य नहीं बनता हो, या शीघ्र स्खलित हो जाता हो, या पतला हो, या संतान उत्पन्न करने में अक्षम हो तो हीरे की भस्म मलाई के साथ सेवन करने से शीघ्र लाभ होता है।

३. दुर्बल, अशक्त शरीर, अतिसार, अजीर्ण, वायुप्रकोप आदि रोगों में हीरा पहिनने से लाभ पहुँचता है।

हीरे का प्रयोग–

वृष, तुला या मीन राशि पर शुक्र हो, अथवा शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाफाल्गुनी या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र हो तो शुभ मुहूर्त में हीरा खरीदकर (शुक्रवार को प्रात: सूर्योदय से साढ़े ग्यारह बजे तक) सोने की अँगूठी में हीरा जड़वा ले। तत्पश्चात् यज्ञ-मण्डप बनवावे। पंचकोणाकार शुक्र स्थंडल बनावे, उस पर सात तोले चाँदी के पत्र पर शुक्र यन्त्र को अंकित कर उसमें हीरा जड़वाकर स्थापन करे और उस पर यजमान की हीरा जड़ी अँगूठी रख 'ओ३म् ऐं जं गीं शुक्राय नम: ।।' मन्त्र से अभिषेक करे । उपर्युक्त मन्त्र का ४००० जप करे तथा शुक्र मूल मन्त्र का १६ हजार जप करावे। शुक्र मन्त्र निम्न है–

ओ३म अन्नात्परिश्रुतोरसं ब्रह्मणाव्यपि बत्क्षत्रं पय: । सोमं प्रजापति ऋतेन सत्यमिंद्रियं विपानधूँ शुक्र मंधऽइंद्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतं मधु ।।

तत्पश्चात् अँगूठी में शुक्र की प्राण-प्रतिष्ठा करे, अँगूठी पहिने एवं पूर्णाहुति करे तथा वह शुक्र यन्त्र, कपड़ा, सफेद धोती, गाय, हीरा, चाँदी, चावल, घी एवं कपूर का दान करे।

हीरा-वजन–

सात रत्ती या इससे बड़ी सोने की अँगूठी हो तथा उसमें लगभग एक रत्ती या इससे बड़ा हीरा जड़वावे, तभी हीरा प्रभावशाली होगा। हीरा तोल में जितना ही ज्यादा बड़ा होगा, वह उतना ही अधिक प्रभावशाली होगा। हीरे के साथ स्वर्ण की ही अँगूठी हो।

हीरा पहिनने की तारीख से सात वर्ष तक हीरे का प्रभाव रहता है, तत्पश्चात् वह निष्फल-सा बन जाता है, अत: सात वर्षों के बाद शुभ मुहूर्त में दूसरा हीरा पहिनना चाहिए।

आगे के अध्याय में शनि-रत्न नीलम के बारे में विचार प्रस्तुत किया जा रहा है।

◆◆◆

१०. नीलम : शनि रत्न

नीलम शनिदेव का प्रधान रत्न है। इसे संस्कृत में इन्द्रनीलमणि, हिन्दी में नीलम, फारसी में नीलविल याकूत और अंग्रेजी भाषा में सेफायर टरग्यूज (Sapphire Turguese) कहते हैं।

अधिकतर नीलम हिमालय, विन्ध्य, आबू पर्वतों के अंचल में, लंका, काबुल, जावा आदि की ओर मिलता है। प्रत्येक वर्ण के लिए इस रत्न का धारण करना श्रेष्ठ माना गया है।

नीलम के गुण–

इसके प्रधानतः पाँच गुण हैं–

१. इसका रंग नीला होता है, परन्तु मोर पंख के रंग का नीलम सर्वश्रेष्ठ माना गया है।
२. यह चमकीला होता है तथा पतली-पतली नीली किरणें-सी निकलती दिखाई देती हैं।
३. यह चिकना होता है।
४. यह स्पष्ट साफ होता है तथा पारदर्शीवत् पाया जाता है।
५. इसका पानी श्रेष्ठ होता है तथा इसके कोण सुडौल होते हैं।

नीलम की परीक्षा–

सच्चे नीलम की पहिचान करने के कई तरीके हैं, जिनमें से कुछ ये हैं–

१. धूप में यह प्रखर होता है, तेज किरणें निकलती हैं।
२. पानी के गिलास में नीलम डाल दिया जाय तो पानी में से नीली किरणें निकलती-सी स्पष्ट दिखाई देती हैं।
३. दूध के मध्य खरा नीलम रख दिया जाय, तो दूध का रंग नीला होता है।

साढ़सती–

जन्म लग्न से या चन्द्र से शनि बारहवाँ, जन्म का और दूसरा होता है, तो इस पूरे समय को साढ़सती कहा जाता है। शनि एक राशि पर ढाई वर्ष तक रहता है। इस प्रकार तीन राशियों पर उसका भ्रमण साढ़े सात वर्ष का होता है।

यदि किसी को साढ़सती अनिष्टकर हो तो उसे नीलम अवश्य पहिनना चाहिए।

नीलम का प्रभाव–

समस्त रत्नों में नीलम ही एक ऐसा रत्न है जो शीघ्र ही कुछ ही घंटों में अपना असर दिखाता है, अतः नीलम पहिनने के पश्चात् निम्न घटनायें घटित होती हों तो नीलम नहीं पहिनें, नीलम को उतारकर रख देना चाहिए।

१. रात को यदि भयावने और बुरे स्वप्न आने लगें, तो नीलम उतार दें।
२. नीलम पहिनने के बाद से मुखाकृति में अन्तर आ गया हो, या आँखों की पीड़ा बढ़ गई हो, तो नीलम उतार दें।
३. यदि कोई अनिष्ट हो गया हो, तो भी तुरन्त नीलम रत्न उतारकर रख देना चाहिए।

नीलम के दोष–

नीलम खरीदते समय पूरी सावधानी रखनी चाहिए। इसमें प्रमुखतः निम्न दोष पाये जाते हैं–

१. सफेद डोरिया–
यदि नीलम में सफेद लाइन या डोरा-सा दिखाई दे, तो वह नीलम शस्त्र से मृत्यु कराता है।

२. दूधिया–
दूधिए रंग का नीलम कुल-लक्ष्मी का नाश करने वाला माना गया है।

३. चीरी–
जिस नीलम में कोई चीरी या क्रास दिखाई दे, तो वह नीलम दरिद्रता बढ़ाता है।

४. दुरंगा–
दो रंगों वाला नीलम संतान तथा पत्नी पक्ष के लिए घातक है।

५. जाल—

यदि नीलम में जाल हो, तो वह नीलम रोगवर्धक होता है।

६. खड्डा—

खड्डे वाला नीलम शत्रु-भय को बढ़ाने वाला माना गया है।

७. सुन्न—

बिना चमक का नीलम सुन्न कहलाता है। ऐसा नीलम प्रिय बन्धुओं का नाश करता है।

८. धब्बे—

जिस नीलम में सफेद छोटे-छोटे धब्बे हों, वह विषयुक्त होता है।

९. छींटी—

जिस नीलम में लाल रंग के छोटे-छोटे बिन्दु दिखाई दें, वह पुत्र-सुख नष्ट करने वाला तथा रोगवर्धक होता है।

नीलम के उपरत्न—

नीलम के मुख्यत: दो उपरत्न पाये जाते हैं। जो व्यक्ति धनाभाव से नीलम नहीं खरीद सकते, उन्हें नीलम के उपरत्न खरीदकर धारण करने चाहिए।

१. लीलिया—

यह नीले रंग तथा हल्की रक्तिम ललाई लिए हुए होता है। यह चमकदार भी होता है। विन्ध्य तथा गंगा-यमुना के कछारों में यह मिल जाता है।

२. जमुनिया—

इसका रंग पके जामुन-सा होता है, साथ ही यह हल्का गुलाबी, सफेद रंगों में भी पाया जाता है। यह चिकना, साफ, पारदर्शी होता है। हिमालय प्रदेश में यह अधिकतर पाया जाता है।

नीलम कौन पहिने ?—

नीलम पहिनने का चुनाव अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। नीचे वे बिन्दु स्पष्ट किए जा रहे हैं, जिन्हें नीलम पहिनना श्रेयस्कर रहता है—

१. मेष, वृष, तुला, वृश्चिक लग्न रखने वालों को नीलम पहिनना भाग्यवर्धक रहता है।
२. जन्मकुण्डली में शनि चौथे, पाँचवें, दसवें या ग्यारहवें भाव में बैठा हो

तो नीलम अवश्य पहिनना चाहिए।
३. यदि शनि षष्ठेश या अष्टमेश के साथ बैठा हो तो नीलम पहिनना श्रेष्ठ रहता है।
४. यदि शनि अपने भाव से छठे या आठवें स्थान में स्थित हो तो नीलम जरूर पहिनना चाहिए।
५. शनि मकर तथा कुम्भ राशि का स्वामी है। यदि एक राशि श्रेष्ठ भाव में हो तथा दूसरी अशुभ भाव में हो तो नीलम न पहिनें, अपितु यदि शनि की दोनों राशियाँ जन्मकुण्डली में श्रेष्ठ भावों का प्रतिनिधित्व करती हों तो अवश्य नीलम धारण करना चाहिए।
६. शनि की साढ़सती चल रही हो तो नीलम धारण करना श्रेष्ठ है।
७. किसी भी ग्रह की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही हो तो अवश्य ही नीलम पहिनना चाहिए।
८. यदि शनि सूर्य के साथ हो, सूर्य की राशि में हो या सूर्य से दृष्ट हो तब भी नीलम धारण करना चाहिए।
९. यदि शनि जन्मकुण्डली में मेष राशि पर स्थित हो, तो नीलम पहिनना जरूरी होता है।
१०. जन्मकुण्डली में शनि वक्री, अस्तंगत या दुर्बल हो और शुभ भावों का प्रतिनिधित्व कर रहा हो तो नीलम पहिनना श्रेष्ठ माना गया है।
११. जो शनिग्रह प्रधान व्यक्ति हैं, उन्हें नीलम पहिनना चाहिए।
१२. क्रूर कर्म करने वालों के लिए शनि-रत्न हर समय उपयोगी माना गया है।

रोगों पर नीलम का प्रभाव—

१. आँखों के रोग, धुन्ध, जाला, पानी गिरना, मोतिया आदि में यदि नीलम केवड़े के जल में घोटकर आँखों में डालें, तो शीघ्र लाभ मिलता है।
२. पागलपन की बीमारी में नीलम-भस्म श्रेष्ठोषधि मानी गयी है।
३. इसके धारण करने से स्वत: ही खाँसी, उलटी, रक्त विकार, विषम ज्वर आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

नीलम का प्रयोग—

शनि मकर या कुम्भ राशि में हो, अथवा उत्तराषाढ़ा, श्रवण, घनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, चित्रा, स्वाति और विशाखा नक्षत्र के दिन शनिवार हो

तो ऐसे शुभ दिन को नीलम खरीदकर पंचधातु फौलाद (लोहा) या सोने की अँगूठी में जड़वावे। अँगूठी लगभग ९ रत्ती की हो तथा चार रत्ती से छोटा नीलम न हो। इससे छोटा नीलम कम प्रभावशाली होता है।

तत्पश्चात् शनि-मंडप बनावे, ग्रह-शांति के साथ शनि-यज्ञ करे एवं 'ॐ ह्रीं ऐं श्री शनैश्चराय नमः।।' मंत्र से ६००० आहुतियाँ दे। तत्पश्चात् शनि-स्थण्डल धनुषाकार बनावे, उस पर नौ तोले चाँदी के पत्र पर शनियन्त्र उत्कीर्ण कर स्थापित करे एवं उस पर नीलम जड़वावे। फिर उस शनि-यन्त्र पर नीलम जड़ी अँगूठी रखकर षोडशोपचार पूजा कर प्राण-प्रतिष्ठा कर शनि वेदोक्त मन्त्र का २३ हजार जप करावे। शनि मन्त्र यह है—

ॐ शन्नो देवी रभिष्टम आपो भवंतु पीतये। शंय्यौ रभिश्रवंतुनमः।।

फिर वह अँगूठी धारण करे तथा पूर्णाहुति करे, तत्पश्चात् वह शनियंत्र, तिल-पात्र, तेल, मसूर, भैंस, लौह, काली गाय, श्याम वस्त्र आदि का दान करे। सायँ दीप-बलि, भैरव पूजन एवं दीप दान करे। इस प्रकार करने से शनि से संबधित सभी अनिष्ट शान्त होकर सुख-शान्ति होती है।

नीलम-वजन—

नीलम चार रत्ती या इससे बड़ा ही प्रभावशाली होता है। पंचधातु या लोहे की अँगूठी में यह विशेष फलदायी है। सोने की अँगूठी में भी नीलम पहिना जा सकता है। पाँच वर्षो के पश्चात् पहिने गये नीलम का प्रभाव समाप्त हो जाता है, अतः इसके बाद दूसरा श्रेष्ठ नीलम अँगूठी में धारण करना चाहिए।

◆◆◆

११. गोमेदक : राहू रत्न

गोमेदक प्रमुखतः राहू का रत्न माना गया है। इसे फारसी में मेदक तथा अंग्रेजी में झिरकान (Zircon) कहते हैं। इसका रंग पीला-पीला-सा गोमूत्र के समान होता है, साथ ही इसमें श्यामला मिश्रित मधु की झाईं भी दिखाई दे जाती है। यह अधिकतर चीन, वर्मा, अरब, सिंधु नदी के किनारे पाया जाता है।

गोमेदक के गुण—

अच्छी जाति का गोमेद या गोमेदक चमकदार, सुन्दर, चिकना, अच्छे घाट का तथा उज्ज्वल होता है। यह उल्लू की आँखों के समान लगता है।

परीक्षा—

१. गोमूत्र में गोमेदक रखकर चौबीस घंटे पड़ा रहने दें, तो गोमूत्र का रंग बदल जाता है।
२. लकड़ी के बुरादे से गोमेदक घिसने पर उसमें चमक बढ़ जाती है। नकली गोमेदक घिसने पर उसमें चमक नष्ट हो जाती है।

गोमेदक के फल—

यह रत्न प्रत्येक वर्ण के लिए फलप्रद है। युद्ध में इसे पहिनकर जाने से शत्रु सामने नहीं टिक पाते। इसके पहिनने से कई रोग स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं।

गोमेदक के दोष—

दोषी गोमेदक खरीदना अहितकर होता है। गोमेदक में पाए जाने वाले निम्न दोष हैं—

१. **रक्तिम—**
लाल मुँह वाला या लाल रंग वाला गोमेदक शरीर में नई-नई व्याधियाँ बढ़ाता है।

२. **रुक्ष—**

रूखा-सा गोमेदक समाज में मान-प्रतिष्ठा कम करता है।

३. सुन्न–
विना चमक वाला गोमेदक स्त्री के लिए हानिकारक एवं रोगवर्धक है।

४. अबरी–
कई रंगों का गोमेदक धन-नाश में सहायता देता है।

५. गड्ढा–
जिस गोमेदक में गड्ढा या खड्डा पाया जाय, वह लक्ष्मी की न्यूनता एवं धन-हानि करता है।

६. धब्बा–
जिस गोमेदक में किसी अन्य रंग का धब्बा दिखाई दे, वह पशुधन का नाश करने वाला होता है।

७. श्यामल–
काले बिन्दु वाला गोमेदक सन्तान-हानि एवं बन्धु-हानि करता है।

८. छींटदार–
जिस गोमेदक में लाल या काले छींटे दिखाई दें, वह तेज वाहन से अपघात करता है।

९. चीर वाला–
जिस गोमेदक में चीरा या क्रॉस हो, वह समाज में विरोध उत्पन्न करता है।

१०. दुरंगा–
जो गोमेदक दुरंगा हो, वह घर-बार छोड़ने के लिए विवश कर परदेश में बसाता है।

११. सफेदा–
जिस गोमेदक में सफेद बिंदु दिखाई दें, वह भाग्य-हानि में सहायक होता है।

१२. जाल–
जिस गोमेदक में जाल पाया जाय, वह सर्व प्रकार के सुखों का हरण करने वाला होता है।

गोमेदक के उपरत्न–

गोमेदक के मुख्यत: दो उपरत्न हैं। जो व्यक्ति गोमेदक नहीं खरीद सकते, उन्हें उपरत्न धारण करना चाहिए।

१. तुरसा–
यह चिकना, हल्का-हल्का पीला तथा साफ, चमकदार होता है। यह अधिकतर अरब, ईरान, इराक, मक्का आदि की ओर पाया जाता है। इसके ४ रंग हैं। लाल, हलका पीला, हरा और श्याम।

२. साफी–
यह मटमैला-सा चिकना तथा कम चमकदार होता है। वजन में यह औसतन भारी होता है। यह हिमालय, विन्ध्य आदि पहाड़ों में पाया जाता है।

उपरत्नों का प्रभाव–

गोमेदक की अपेक्षा ये कम प्रभावशाली होते हैं।

गोमेदक कौन पहिने ?–

निम्न व्यक्तियों को गोमेदक धारण करना श्रेयस्कर माना गया है।

१. जिन व्यक्तियों की राशि या लग्न मिथुन, तुला, कुंभ या वृषभ हो उन्हें गोमेदक अवश्य धारण करना चाहिए।
२. लग्न में, केन्द्र स्थानों (१, ४, ९, १०) में या एकादश भाव में राहू स्थित हो, तो गोमेदक पहिनना चाहिए।
३. तीसरे भाव में, नवम् भाव में, एकादश भाव में या द्वितीय भाव में राहू हो तो निश्चय ही गोमेदक धारण करना चाहिए।
४. यदि राहू अपनी राशि से छठे या आठवें भाव में स्थित हो तो गोमेदक पहिनना श्रेयस्कर होता है।
५. शुभ भावों का अधिपति होकर अपने भाव से आठवें या छठे स्थान में राहू हो, तो भी गोमेदक ही शुभ प्रभाव उत्पन्न करता है।
६. यदि राहू नीच राशि का (धनु राशि का) हो, तो गोमेदक अवश्य पहिनना चाहिए।
७. राहू मकर राशि का स्वामी है, अत: मकर लग्न वालों के लिए गोमेदक श्रेष्ठ है।
८. यदि राहू श्रेष्ठ भाव का स्वामी होकर सूर्य से दृष्ट या सूर्य के साथ हो अथवा सिंह राशि में स्थित हो, तो गोमेदक अवश्य धारण करना चाहिए।
९. राहू राजनीति का प्रमुख कारकेश है, अत: जो सक्रिय रूप से राजनीति में हैं या राजनीति में घुसने का प्रयत्न करते हों, उनके लिए गोमेदक सर्वश्रेष्ठ होता है।
१०. शुक्र और बुध के साथ राहू स्थित हो, तो भी गोमेदक ही धारण करना

चाहिए।

११. चोरी, जुआ, स्मगल आदि पापकृत्यों का हेतु भी राहू है, अत: इसके लिए भी गोमेदक रत्न धारण करना ही उपयोगी है।

१२. वकालत, न्याय, राज्यपक्ष आदि की उन्नति के लिए गोमेदक धारण करना श्रेष्ठ माना गया है।

रोगों पर गोमेदक का प्रभाव–

१. गोमेदक की भस्म निरन्तर सेवन करने से बल, बुद्धि एवं वीर्य बढ़ता है।

२. मिर्गी, धुन्ध, वायु, बवासीर आदि रोगों में भी इसकी भस्म दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है।

३. मात्र गोमेदक धारण करने से तिल्ली, गर्मी, ज्वर, प्लीहा आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

गोमेदक का प्रयोग–

स्वाति, शतभिषा या आर्द्रा नक्षत्र के दिन प्रात: पंचधातु या लोहे की सात रत्ती की अँगूठी में लगभग ४ रत्ती या इससे बड़ा गोमेदक जड़वावें। प्रात: साढ़े दस के उपरान्त यज्ञ करें, सूर्पाकार। राहू का स्थंडिल बनावें, उस पर ११ तोले के रजत-पत्र पर राहू-यन्त्र उत्कीर्ण कराकर रक्खें एवं उस पर गोमेदक जड़वावें। तत्पश्चात् राहू-यन्त्र पर उपर्युक्त अँगूठी रक्खें एवं प्राण-प्रतिष्ठा करें तथा 'ॐ क्रो क्रीं हुं हुं टं टंक धारिणै राहवै स्वाहा।।' मन्त्र से १००० आहुतियाँ दें। दोपहर को योगिनी-चक्र बनाकर दीप ज्वलन करें, दीप दान दें एवं इसी दिन राहू वेदोक्त मन्त्र से १८ हजार जप करावें। राहू वेदोक्त मन्त्र निम्नरूपेण है–

ॐ कयानश्चित्र आभुवदुती सदावृध: सखा। कथा शचिष्ठयावृता:।

शाम को साढ़े चार बजे अँगूठी धारण कर पूर्णाहुति करें तथा राहुयन्त्र, गेहूँ, नील-वस्त्र, कंबल, तिल, तेल, लौह, अभ्रक आदि का दान करें। इस प्रकार करने से ही राहू-जन्य दोष मिटकर सुख-शांति होती है।

गोमेदक वजन–

चार रत्ती से कम वजन का गोमेदक तथा सात रत्ती से कम वजन की अँगूठी निष्फल होती है। पहिनने के दिन से तीन वर्षों तक गोमेदक का प्रभाव रहता है। इसके पश्चात् दूसरा गोमेदक धारण करना चाहिए।

◆◆◆

१२. लहसुनिया : केतु-रत्न

केतु-रत्न या लहसुनिया को लहसनिया, संस्कृत में सूत्रमणि अथवा वैदूर्य, फारसी में वैडूर तथा अंग्रेजी में 'कैट्स आई स्टोन' (Cat's Eye Stone) कहते हैं। इस मणि में सफेद धारियाँ पाई जाती हैं। दो, तीन अथवा चार धारियाँ होना साधारण बात है। परन्तु उत्तम कोटि का लहसनिया वह कहलाता है, जिस पर ढाई धारियाँ हों। यह रत्न अधिकतर अटक, विन्ध्याचल के अंचलों में, हिमालय तथा महानदी एवं काबुल, लंका आदि देशों में पाया जाता है। रात्रि में बिल्ली की आँखों के समान चमकने के कारण ही अंग्रेजी में इसे (Cat's Eye Stone) कहा जाता है।

यह रत्न मुख्यत: चार रंगों में पाया जाता है–१. पीला सूखे पत्ते-सा रंग, २. काला, ३. हरा, और ४. सफेद। परन्तु सभी प्रकार के रत्नों पर सफेद धारियाँ अवश्य पाई जाती हैं। कभी-कभी धुएँ के रंग-सी धारियाँ भी देखने को मिलती हैं। ढाई सूत्रवाली मणि सर्वाधिक कीमती एवं श्रेष्ठ मानी गई है।

लहसनिया के गुण–

लहसनिया में मुख्यत: पाँच गुण पाये जाते हैं–

१. यह चमकदार होता है।

२. यह चिकना तथा फिसलने वाला होता है।

३. इस पर यज्ञोपवीत की तरह धारियाँ खिंची रहती हैं।

४. यह अच्छे घाट का होता है।

५. यह औसत से कुछ अधिक वजनदार प्रतीत होता है।

लहसनिया के प्रभाव–

लहसनिया जीवन में उत्तम प्रभाव पैदा करने में समर्थ होता है। इसके पहिनने से सन्तान-वृद्धि, संपत्ति, स्थिर-लक्ष्मी एवं आनन्द की वृद्धि होती है। भूत-प्रेतों का डर इसके पहिनने से जाता रहता है। युद्ध के क्षणों में यह प्रबल शत्रु-संहारक माना गया है।

परीक्षा–

१. सफेद कपड़े से रगड़ने पर यदि चमक में वृद्धि हो जाय, तो लहसनिया अच्छा समझना चाहिए।

२. हड्डी पर इसे रख दिया जाए, तो चौबीस घण्टों में यह हड्डी के आरपार छेद कर देता है।

३. अँधेरे में यदि लहसनिया रख दिया जाए और उसमें से किरणें निकलती-सी दिखाई दें, तो लहसनिया श्रेष्ठ कोटि का समझना चाहिए।

लहसनिया के दोष–

लहसनिया में मुख्यत: दस दोष पाए जाते हैं, जो कि निम्न हैं–

१. **धब्बा–**
यदि इस रत्न में मूल रंग से अन्य रंग का कोई धब्बा दिखाई दे, तो वह रोगकारक माना जाता है।

२. **गड्ढा–**
यदि लहसनिया खंडित हो, या उसमें छेद हो, या गड्ढा हो, तो ऐसा लहसनिया शत्रु-भय बढ़ाता है।

३. **डोरा–**
यदि थरथराती धारी या पंक्ति इसमें दिखाई दे, तो वह लहसनिया नेत्रों को कष्ट पहुँचाता है।

४. **चीरी–**
जिस लहसनिया में चीर या क्रॉस का चिन्ह पाया जाय, वह शस्त्र से हानि पहुँचाता है।

५. **सुन्न–**
जिस लहसनिया में चमक न हो वह लक्ष्मी का नाश करने वाला माना गया है।

६. **जाल–**
जिस लहसनिया में जाल दिखाई दे, वह पत्नी के लिए घातक माना गया है।

७. **रक्तबिन्दु–**
जिस लहसनिया में लाल छींटे पाये जायें, वह कारावास दिलाता है।

८. **श्वेत बिन्दु–**
जिस लहसनिया में सफेद बिन्दु दिखाई दे, वह प्राण-कष्ट देता है।

९. **मधु बिन्दु–**
शहद के समान छींटे जिस लहसनिया में मिलें, वह राज्य-व्यापार में तकलीफ देने वाला होता है।

१०. **पंचाधिका–**
जिस लहसनिया में पाँच या इससे अधिक धारियाँ मिलें, वह हानिकारक होता है।

लहसनिया के उपरत्न–

जो व्यक्ति लहसनिया न खरीद सकें, उन्हें लहसनिया के उपरत्न खरीदकर धारण करने चाहिए। उपरत्न कम प्रभावशाली माने जाते हैं। लहसनिया के तीन उपरत्न होते हैं–

१. **संगी–**
यह लाल, पीला, काला, हरा, मटमैला, सफेद प्रत्येक रंग में मिलता है तथा चिकना एवं चमकदार होता है। हिमालय से निकलने वाली नदियों में यह अधिकतर पाया जाता है।

२. **गोदन्त–**
यदि चिकना, सफेद रंग का तथा चमकीला होता है। अपेक्षाकृत यह वजन में हल्का होता है। विन्ध्य एवं हिमालय के अंचलों में इसका निवासस्थान है।

३. **गोदन्ती–**
यह गाय के दाँत के समान चमकीला होता है। गोमती, गंडक आदि नदियों में यह अधिकतर प्राप्त होता है।

लहसनिया कौन पहिने ?–

लहसनिया मुख्यत: केतु ग्रह का रत्न है, अत: जिसकी जन्मकुण्डली में केतु ग्रह दूषित, दुर्बल या अस्त हो, उसे लहसनिया धारण करना चाहिए।

१. यदि जन्मकुण्डली में केतु द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, नवम् या दशम् भाव में स्थित हो, लहसनिया अवश्य धारण करना चाहिए।

२. यदि जन्मकुण्डली में केतु मंगल, गुरु या शुक्र के साथ बैठा हो, तो केतु-रत्न अवश्य पहिनना चाहिए।

३. यदि केतु सूर्य के साथ या सूर्य से दृष्ट हो, तो भी केतु रत्न ही उपयोगी कहा गया है।
४. शुभ भावों का अधिपति होकर, उस भाव से केतु छठे या आठवें स्थान में स्थित हो, तो लहसनिया धारण करना श्रेष्ठ माना गया है।
५. यदि केतु पंचमेश या भाग्येश के साथ बैठा हो तो भी इस रत्न को धारण करना चाहिए।
६. धनेश, आयेश, राज्येश, भाग्येश या चतुर्थेश ने केतु के साथ युति या दृष्टि सम्बन्ध किया हो, तो यह रत्न धारण करना श्रेयस्कर माना गया है।
७. यदि केतु ग्रह की महादशा या अन्तर्दशा चल रही हो तो लहसनिया धारण करना शुभ फलदायक होता है।
८. केतु से सम्बन्धित जो कारक है, या जिन पदार्थों का केतु ग्रह कारक है, जीवन में उन वस्तुओं की उन्नति करने के लिए लहसनिया धारण करना श्रेष्ठ माना गया है।
९. शुभ अथवा सौम्य ग्रहों के साथ केतु पड़ा हो तो भी लहसनिया ही पहिनना चाहिए।
१०. यदि किसी प्राणी को भूत-प्रेतादि की बाधा या भय हो तो उसे इस रत्न का धारण करना चाहिए।
११. केतुजन्य दोष प्रवृत्ति के लिए केतु-रत्न लहसनिया धारण करना ही श्रेयस्कर है।

रोगों पर लहसनिया का प्रभाव–

१. दूध के साथ लहसनिया की भस्म सेवन करने से गर्मी, सुजाक दूर हो जाता है।
२. घी में लहसनिया की भस्म खाने से नामर्दी दूर हो जाती है तथा वीर्य गाढ़ा बन जाता है।
३. शहद के साथ यह भस्म खाने से खून के दस्त बन्द हो जाते हैं।
४. पीपल की राख के साथ लहसनिया की भस्म सेवन करने से नेत्र-रोग नष्ट हो जाते हैं।
५. मात्र इसके धारण करने से अजीर्ण, आमवात, मधुमेह आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

लहसनिया का प्रयोग–

मेष, मीन या धनु राशि का चन्द्रमा हो, अथवा अश्विनी, मघा, मूल नक्षत्र हो, अथवा बुधवार या शुक्रवार इनमें से किसी भी दिन सायंकाल पाँच बजे से आठ बजे के बीच लोहा या पंचधातु की सात रत्ती की अँगूठी बनवावे और उसमें कम-से-कम चार रत्ती का लहसनिया जड़वावे। लहसनिया मात्र पंचधातु या लोहे के साथ ही प्रभावकारी माना गया है। सात रत्ती से कम की अँगूठी और चार रत्ती से हल्का रत्न कम प्रभावशाली माना गया है।

दूसरे दिन प्रातः ९ बजे केतु-मण्डप बनावे तथा ध्वजाकार केतु का स्थंडिल बनावे, सात तोले के रजत-पत्र पर केतु-यन्त्र खुदवावे तथा उस पर लहसनिया जड़ित अँगूठी रखकर प्राण-प्रतिष्ठा करे एवं षोडशोपचार पूजा करे।

तत्पश्चात् 'ॐ ह्रीं क्रीं कूं क्रूररूपिण्यै केतवै स्वाहा।।' मन्त्र की २७०० आहुतियाँ दे एवं केतु वेदोक्त मन्त्र का १७००० जप करावे।

केतु वेदोक्त मन्त्र निम्न प्रकारेण है–

ॐ केतु कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्य्या अपेशसे। समुखद्भिरजा यथाः।।

तत्पश्चात् अँगूठी धारण कर पूर्णाहुति दे एवं केतु-यन्त्र, लहसनिया रत्न, तिल, कंबल, कस्तूरी, शस्त्र, कृष्ण-वस्त्र, तेल, कृष्ण-पुष्प आदि का दान करे। इस प्रकार विधिपूर्वक केतु-रत्न धारण करने से अभीष्ट सिद्धि प्राप्त होती है। इस प्रकार करने से तेज-वृद्धि एवं शत्रुओं का संहार होता है।

लहसनिया का वजन–

पहिनने के दिन से तीन वर्षों तक लहसनिया का प्रभाव रहता है, तत्पश्चात् वह व्यर्थ हो जाता है, अतः फिर दूसरा लहसनिया धारण करना चाहिए।

◆◆◆

१३. नवग्रह यन्त्र

नव-रत्नों पर विचार करते समय कहा जा चुका है कि रत्न से सम्बन्धित ग्रह के यन्त्र को खुदवाकर उस पर रत्न की प्राण-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। ये मन्त्र नीचे दिये जा रहे हैं।

इन यन्त्रों की पूजा करते रहने से भी सम्बन्धित ग्रह के शुभ फल प्राप्त होकर धन-धान्य, मान-सम्मानादि की वृद्धि होती है। पीछे बताई गई विधि से ही इनका पूजन करना चाहिए।

सूर्य यन्त्र–

'वृत मण्डलमादित्ये।'
दान–माणिक्य, स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, घी, गुड़, रक्त, वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन आदि।
जप-संख्या ७०००
जप-मन्त्र (तन्त्रीय)
ॐ ह्रां ह्रीं सः सूर्याय स्वाहा।।

चन्द्र यन्त्र–
'चतुरस्त्रं निशाकरे'
दान– मोती, स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दही, श्वेत पुष्प, शंख, कपूर।
जप-संख्या ११०००
जप-मन्त्र (तन्त्रीय)
ॐ श्राँ श्रीं श्रूं सः सोमायः स्वाहा।

भौम यन्त्र–

'महीपुत्रे-त्रिकोणस्यात्'
दान– मूँगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र, मसूर, गुड़, घी, रक्त-वस्त्र, केसर।
जप-संख्या १००००
जप-मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ
क्रां क्रीं क्रूं सः भौमाय स्वाहा।

बुध यन्त्र–

'बुधे वै बाणसन्निभम्'
दान–पन्ना, स्वर्ण, मूँगा, काँस्य, घृत, शक्कर, कपूर, हरित, हाथी दाँत।
जप-संख्या ८०००
जप-मन्त्र (तन्त्रीय) *ॐ ब्रां ब्रीं ब्रूं सः बुधाय स्वाहा ।।*

गुरु यन्त्र

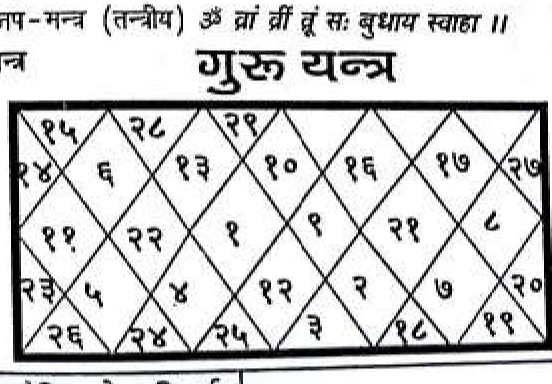

'गुरौ च पटिट्शाकार'
दान—पुखराज, स्वर्ण, काँस्य, दाल, चीनी, शक्कर, घृत, पीत वस्त्र।
जप-संख्या १९०००
जप-मन्त्र (तन्त्रीय) ॐ ज्ञां ज्ञीं ज्ञूं सः गुरुवे स्वाहा।

शुक्र यंत्र—

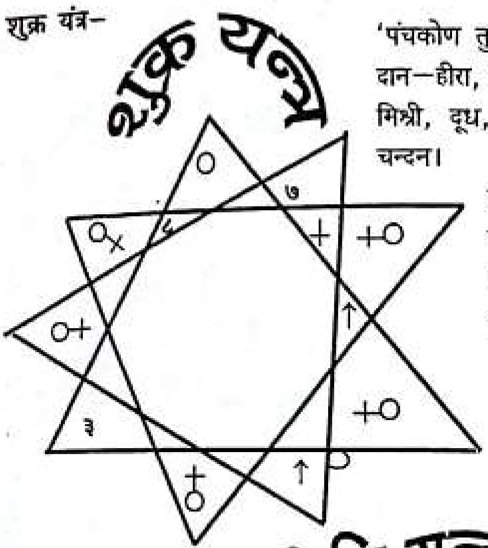

'पंचकोण तु भार्गवे'
दान—हीरा, स्वर्ण, रजत चावल, मिश्री, दूध, श्वेत वस्त्र, दही, चन्दन।
जप-संख्या १६०००
जप-मन्त्र (तंत्रीय)
ॐ ऑं ईं ऊं सः शुक्राय स्वाहा ॥

शनि यन्त्र

शनि यंत्र—
दान— नीलम, लोहा, उड़द, तेल, कृष्ण वस्त्र, भैंस, उपानह।
जप-संख्या २६०००
जप-मंत्र (तन्त्रीय)
ॐ षां षीं षूं सः शनये स्वाहा ॥

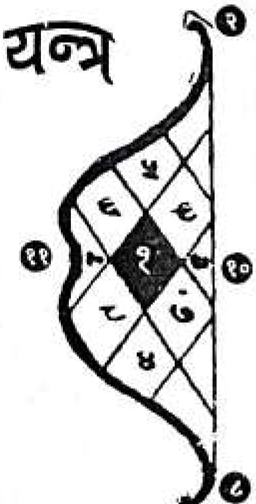

राहू यन्त्र

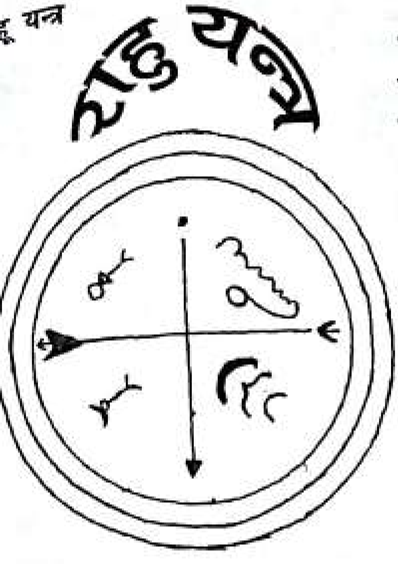

'सुप्पाकार तु राहवे'
दान—गोमेदक, सीसा, तिल, सरसों का तेल, नील वस्त्र, कम्बल।
जप-मंत्र (तन्त्रीय)
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं सः राहवे स्वाहा।।

केतु यन्त्र

केतु यंत्र—
केतवे तु ध्वजाकार'
दान— लहसनिया, लोह, तिल, सप्त धान्य, तेल, धूम्र-वस्त्र।
जप-संख्या २७०००
जप-संख्या (तन्त्रीय)
जप-मन्त्र (तन्त्रीय)
ॐ क्लां क्लीं क्लूं सः केतवे स्वाहा।

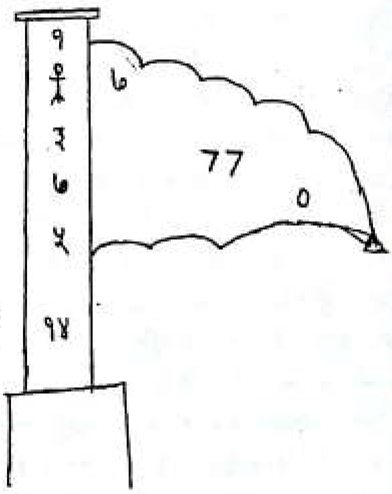

१४. प्राण-प्रतिष्ठा

किसी भी ग्रह के रत्न में जब तक उस ग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं की जाती वह रत्न व्यर्थ-सा होता है तथा उसके पहिनने से कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं होता, क्योंकि केवल पत्थर तो पत्थर ही है, अत: रत्न धारण करने वाले को चाहिए कि शुभ मुहूर्त में यज्ञ के साथ प्राण-प्रतिष्ठा करा देनी चाहिए। अन्य बातें यथास्थान लिखी जा चुकी हैं, यहाँ केवल प्राण-प्रतिष्ठा की विधि दी जा रही है।

सर्वप्रथम रत्न धारण करने वाला स्नान कर, पूर्व की तरफ मुँह कर काम, क्रोध, लोभादि को छोड़ बैठ जावे एवं दाहिने हाथ में जल, कुंकम, अक्षत, दूर्वा एवं दक्षिणा लेकर संकल्प करे—

ॐ विष्णु विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे सप्तमे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति में कलियुगे कलिप्रथमचरणे भारतवर्षे भरतखंडे जम्बू द्वीपे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तेक देशे कन्याकुमारिका क्षेत्रे श्री महानद्योगंगा यमुनयो: पश्चिमे तटे नर्मदायां उत्तरे तटे विक्रम शके बौद्धावतारे देव ब्राह्मणानां सन्निधो प्रभवादि अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुक नक्षत्रे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुक राशिस्थिते सूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरो शेषेसु ग्रहेषु यथायथा स्थान स्थितितेषु सत्सु एवं ग्रह गुण विशेषण विशिष्टतायां पुण्यतिथौ अमुक गौत्रोऽमुकशर्माहं ममात्मन श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलवाप्तये ममकलत्रादिभि: सह सकलाधि व्यादि निरसन पूर्वक दीर्घायुष्य बलपुष्टि नेरुज्यादि अमुक ग्रह संबंधे अमुक रत्ने प्राण-प्रतिष्ठा सिध्यर्थ करिष्ये।

इसके पश्चात् हाथ में जल-अक्षत लेकर प्राण-प्रतिष्ठा मंत्र पढ़े—

ततो जलेन प्रक्षाल्य प्राण-प्रतिष्ठा कुर्यात् ।। प्रतिमाया: कपलौ दक्षिण पाणिना स्पष्ट्वा मंत्रा: पठनीया: ।। अस्य श्री प्राण-प्रतिष्ठा मंत्रस्य विष्णुरुद्रौ ऋषी ऋृग्यजु: सामानिच्छदांसि प्राणख्या देवता ।। ॐ आं बीजं ह्रीं शक्ति: क्रां

कीलकं यं रं लं वं शं षं सं हं हं स: एत: शक्तय: मूर्ति प्रतिष्ठापन विनियोग: ।। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं हं स: देवस्य प्राणा: इह प्राणा: पुनरुच्चार्य देवस्य सर्वेनिन्द्रयाणी इह:। पुनरुच्चार्य देवस्य त्वक्पाणि पाद पायु पस्थादीनि इह:। पुनरुच्चार्य देवस्य वाङ् मनश्चक्षु: श्रोत्र घ्राणानि इहागत्य सुखेन चिरं तिष्ठतु स्वाहा ।। प्राण-प्रतिष्ठा विधाय ध्यायेत ।। एवं प्राण-प्रतिष्ठा कृत्वा षोडशोचारै: पूजयेत् ।।

इस प्रकार प्राण-प्रतिष्ठा कर विधिपूर्वक ग्रह-रत्न की पूजा कर एवं ग्रह-यन्त्र का अभिषेक करके मुद्रिका धारण करे।

◆◆◆

१५. राशि-दर्पण

फलित ज्योतिष का आधार राशियाँ हैं, तो राशियों का आधार नक्षत्र, क्योंकि नक्षत्र ही वे मूल बिन्दु हैं जिनसे राशियों का निर्माण होता है।

भारतीय ज्योतिष में सत्ताईस मान्य नक्षत्र हैं। कुछ विद्वानों ने 'अभिजित्' को भी नक्षत्र मानकर कुल नक्षत्रों की संख्या अट्ठाईस मान्य की है, पर आकाशमण्डल का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करने पर अभिजित् की स्वतंत्र सत्ता दिखाई नहीं देती, उसका पूर्वार्द्ध उत्तराषाढ़ा में तथा उत्तरार्द्ध श्रवण में ही विलीन है, अतः इस प्रकार उन विद्वानों का अट्ठाईस नक्षत्रों का सिद्धांत स्वतः ही खण्डित हो जाता है तथा सत्ताईस नक्षत्र ही मान्य ठहरते हैं।

परन्तु मेरी राय में मूलतः चौबीस नक्षत्र ही थे, परन्तु बाद में पंडितों ने 'फाल्गुनी' नक्षत्र के दो भाग कर एक भाग को पूर्वाफाल्गुनी तथा दूसरे भाग को उत्तराफाल्गुनी नाम की संज्ञा दी, इसी प्रकार 'षाढ़ा' नक्षत्र के भी पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा दो भाग एवं भाद्रपद नक्षत्र के भी दो भाग पूर्वभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद कर सत्ताईस नक्षत्रों की कल्पना की।

गगनमण्डल का भी सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करने पर अन्य नक्षत्रों की अपेक्षा 'फाल्गुनी', 'षाढ़ा' तथा 'भाद्रपद' नक्षत्र ज्यादा परिधि घेरते हैं तथा उनका वृत्त सर्पाकार रहने से गणितीय बाधा को शुद्ध करने हेतु उपर्युक्त तीनों नक्षत्रों के दो-दो भाग कर सत्ताईस नक्षत्रों की कल्पना की, जो निम्नरूपेण हैं–

क्रम संख्या	*नक्षत्र नाम*	*ग्रह स्वामी*
१	अश्विनी	केतु
२	भरणी	शुक्र
३	कृत्तिका	सूर्य
४	रोहिणी	चन्द्र
५	मृगशिरा	मंगल

क्रम संख्या	*नक्षत्र नाम*	*ग्रह स्वामी*
६	आर्द्रा	राहू
७	पुनर्वसु	बृह०
८	पुष्य	शनि
९	आश्लेषा	बुध
१०	मघा	केतु
११	पूर्वाफाल्गुनी	शुक्र
१२	उत्तराफाल्गुनी	सूर्य
१३	हस्त	चन्द्र
१४	चित्रा	मंगल
१५	स्वाती	राहू
१६	विशाखा	बृह०
१७	अनुराधा	शनि
१८	ज्येष्ठा	बुध
१९	मूल	केतु
२०	पूर्वाषाढ़ा	शुक्र
२१	उत्तराषाढ़ा	सूर्य
२२	श्रवण	चन्द्र
२३	घनिष्ठा	मंगल
२४	शतभिषा	राहु
२५	पूर्वाभाद्रपद	बृह०
२६	उत्तरभाद्रपद	शनि
२७	रेवती	बुध

उपर्युक्त सत्ताईस नक्षत्रों में प्रत्येक नक्षत्र के चार भाग किये जा सकते हैं, जिन्हें चरण कहा जाता है तथा प्रत्येक चरण से संबंधित एक अक्षर है। इस अक्षर का अत्यन्त महत्त्व है।

किसी भी बालक का जन्म होने पर यह ज्ञात किया जाता है कि वह किस नक्षत्र में पैदा हुआ है तथा मूलतः वह उस नक्षत्र के किस चरण में उत्पन्न हुआ है। उस चरण से संबंधित जो अक्षर होता है, वही अक्षर उस

बालक के जन्म-नाम का पहला अक्षर होता है।

उदाहरणार्थ किसी बालक का जन्म 'पुष्य' नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है तो पुष्य नक्षत्र के द्वितीय चरण का संबंधित अक्षर 'हे' है अत: उस बालक का नाम इसी 'हे' अक्षर से प्रारम्भ होकर हेमराज, हेरतसिंह, हेतसिंह, हेकाराम आदि हो सकते हैं अत: पाठक अनुमान लगा सकते हैं कि नक्षत्रों के चरण और उनसे संबंधित अक्षरों का कितना महत्त्व है।

नीचे पाठकों की जानकारी के लिये मैं नक्षत्र तथा उसके आगे चार अक्षर लिख रहा हूँ जिसमें पहला अक्षर उस नक्षत्र के पहले चरण का, दूसरा अक्षर दूसरे चरण का, तीसरा अक्षर तीसरे चरण का तथा चौथा अक्षर चौथे चरण का प्रतिनिधित्व करता है—

क्रम संख्या	नक्षत्र नाम	संबंधित अक्षर
१	अश्विनी	चू चे चो ला
२	भरणी	ली लू ले लो
३	कृत्तिका	आ ई उ ए
४	रोहिणी	ओ वा वी वू
५	मृगशिरा	वे वो का की
६	आर्द्रा	कू घ ड़ छ
७	पुनर्वसु	के को हा ही
८	पुष्य	हू हे हो डा
९	आश्लेषा	डी डू डे डो
१०	मघा	मा मी मू मे
११	पूर्वाफाल्गुनी	मो टा टी टू
१२	उत्तराफाल्गुनी	टे टो पा पी
१३	हस्त	पू ष ण ठ
१४	चित्रा	पे पो रा री
१५	स्वाती	रू रे रो ता
१६	विशाखा	ती तू ते तो
१७	अनुराधा	ना नी नू ने
१८	ज्येष्ठा	नो या यी यू
१९	मूल	ये यो भा भी

क्रम संख्या	नक्षत्र नाम	संबंधित अक्षर
२०	पूर्वाषाढ़ा	भू धा फा ढ़ा
२१	उत्तराषाढ़ा	भे भो जा जी
२२	श्रवण	खी खू खे खो
२३	घनिष्ठा	गा गी गू गे
२४	शतभिषा	गो सा सी सू
२५	पूर्वाभाद्रपद	से सो दा दी
२६	उत्तरभाद्रपद	दू थ झ ञ
२७	रेवती	दे दो चा ची

उपरोक्त सत्ताईस नक्षत्रों के प्रत्येक चरण से संबंधित अक्षर स्पष्ट कर दिये हैं जिससे पाठक किसी भी व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर जानकर उससे संबंधित नक्षत्र ज्ञात कर सकता है तथा यह बता सकता है कि उस व्यक्ति का जन्म अमुक नक्षत्र के अमुक चरण में हुआ है।

उदाहरणार्थ राधेश्याम नाम को ही लें, तो इस नाम का पहला अक्षर 'रा' है। पीछे नक्षत्र-नामावली तथा संबंधित अक्षर देखने पर पता चला कि 'र' अक्षर चित्रा नक्षत्र में है तथा अक्षर-क्रम में 'रा' अक्षर तीसरा है अत: यह स्पष्टता से कहा जा सकता है कि राधेश्याम का जन्म चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में हुआ है।

पर इतने से ही बात स्पष्ट नहीं होती, क्योंकि राशियों की जानकारी जरूरी है अत: आगे यह स्पष्ट किया जा रहा है कि किस राशि से संबंधित कौन-कौन से नक्षत्र हैं। नक्षत्र सत्ताईस हैं तथा राशियाँ बारह हैं; अत: गणितीय नियमानुसार प्रत्येक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं अर्थात् दो पूरे नक्षत्र तथा तीसरे नक्षत्र का पहला चरण लेकर सवा दो नक्षत्र मान एक राशि का निर्माण होता है।

।। राशि बोधक चक्र ।।

क्रम संख्या	राशियाँ	नक्षत्र व चरण		
1	मेष	अश्विनी (4 चरण)	भरणी (4 चरण)	कृतिका (1 चरण)
2	वृष	कृतिका (3 ")	रोहिणी (4 ")	मृग (2 ")
3	मिथुन	मृगशिरा (2 ")	आर्द्रा (4 ")	पुनर्वसु (3 ")
4	कर्क	पुनर्वसु (1 ")	पुष्य (4")	आश्लेषा (4")
5	सिंह	मघा (4 ")	पू० फा० (4 ")	उ० फा० (1 ")
6	कन्या	उ० फा० (3 ")	हस्त (4 ")	चित्रा (2 ")
7	तुला	चित्रा (2 ")	स्वाती (4 ")	विशाखा (3 ")
8	वृश्चिक	विशाखा (1 ")	अनुराधा (4 ")	ज्येष्ठा (4 ")
9	धनु	मूल (4 ")	पूर्वाषाढ़ा (4 ")	उ० षा० (1 ")
10	मकर	उ० षा० (3 ")	श्रवण (4 ")	घनिष्ठा (2 ")
11	कुंभ	घनिष्ठा (2 ")	शतभिषा (4 ")	पू० भा० (3 ")
12	मीन	पू० भा० (1 ")	उ० भा० (4 ")	रेवती (4 ")

पूर्व उदाहरण में हमने राधेश्याम का जन्म चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में सिद्ध किया था, उपर्युक्त 'राशि बोधक चक्र' में चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण को देखा तो वह तुला राशि की पंक्ति में आया, अतः यह स्वतः ही सिद्ध हो गया कि राधेश्याम की राशि तुला है।

पर इन नक्षत्र चरणों की भी कितनी सूक्ष्मता एवं महत्ता है कि आप ध्यानपूर्वक देखेंगे, तो आप पायेंगे कि यदि किसी का जन्म चित्रा नक्षत्र के दूसरे चरण में होता है, तो उसकी राशि 'कन्या' सिद्ध होती है, पर यदि उसका जन्म चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में होता है, तो उसकी राशि कन्या न होकर 'तुला' सिद्ध होगी।

अतः पाठकों को चाहिए कि वे इन नक्षत्रों तथा उनके चरणों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन करें।

पाठकों की सुविधा के लिए प्रत्येक राशि से संबंधित अक्षर स्पष्ट किये जा रहें हैं, जिससे तुरन्त राशि ज्ञात हो सके—

।। राशि स्पष्ट चक्र ।।

क्रम संख्या	राशियाँ	संबंधित अक्षर
१	मेष	चू चे चो ला ली लू ले लो आ
२	वृष	ई ऊ ए ओ वा वी वू वे वो
३	मिथुन	का की कू घ ङ छ के को ह
४	कर्क	ही हू हे हो डा डी डू डे डो
५	सिंह	मा मी मू मे मो टा टी टू टे
६	कन्या	टो पा पी पू ष ण ठ पे पो
७	तुला	रा री रू रे रो ता ती तू ते
८	वृश्चिक	तो ना नी नू ने नो या यी यू
९	धनु	ये यो भा भी भू धा फा ढ़ा भे
१०	मकर	भो जा जी खी खे खू खो गा गी
११	कुंभ	गू गे गो सा सी सू से सो दा
१२	मीन	दी दू थ झ ञ दे दो चा ची

पूर्व उदाहरण को यहाँ भी लागू करें और राधेश्याम का पहला अक्षर 'रा' देखें, तो वह तुला राशि के सामने की पंक्ति में दिखाई देगा, अतः इस चक्र से स्पष्ट और सरल तरीके से ज्ञात हो सकता है कि राधेश्याम की जन्मराशि 'तुला' है।

अब तक तो वे तथ्य स्पष्ट किये, जो प्रत्येक व्यक्ति को जानने जरूरी हैं, पर आगे मैं वे तथ्य स्पष्ट कर रहा हूँ, जो अभी तक अज्ञात एवं गोपनीय थे और किसी भी प्रकार की ज्योतिष की पुस्तक में वर्णित नहीं हैं।

जब व्यक्ति को यह ज्ञात हो जाय कि उसका जन्म किस नक्षत्र के किस चरण में है तब उसकी यह भी स्वाभाविक जिज्ञासा होती है कि उसके जीवन पर सर्वाधिक किस ग्रह का प्रभाव है तथा वह किस ग्रह की पूजा करे, किस ग्रह से सम्बन्धित रत्न धारण करे (रत्नों की जानकारी एवं उनसे संबंधित विस्तृत विवरण की जानकारी के लिए इसी लेखक की पुस्तक 'ज्योतिष रत्न–प्रकाशक खत्री राधेश्याम बुकसेलर, मेहता मार्केट, जोधपुर, राजस्थान), किस दिन व्रत करे तथा जीवन में किसकी आराधना रक्खे जिससे उसका जीवन समृद्ध, सुखी एवम् उन्नत हो सके।

इसी की जानकारी के लिए ज्योतिष जगत् में पहली बार 'नक्षत्र-चरण आधिपत्य' स्पष्ट किया जा रहा है—

क्र. सं.	नक्षत्र व चरण	डिग्री प्रारंभ	डिग्री अन्त	स्वामी
१	अश्विनी	१ चरण_००-००_	३-२०	मं।के।के
२		२ " _ ३-२०_	६-४०	मं।के।सू
३		३ " _६-४०_	१०-००	मं।के।श
४		४ "_१०-००_	१३-२०	मं।के।श
५	भरणी	१ "_१३-२०_	१६-४०	मं।शु।शु
६		२ "_१६-४०_	२०-००	मं।शु।चं
७		३ "_२०-००_	२३-२०	मं।शु।रा
८		४ "_२३-२०_	२६-४०	मं।शु।श
९	कृत्तिका	१ "_२६-४०_	३०-००	मं।यू।सू
१०		२ "_३०-००_	३३-२०	शु।सू।रा
११		३ "_३०-२०_	३६-४०	शु।सू।श
१२		४ "_३६-४०_	४०-००	शु।सू।बृ
१३	रोहिणी	१ "_४०-००_	४३-२०	शु।चं।चं
१४		२ "_४३-२०_	४६-४०	शु।चं।रा
१५		३ "_४६-४०_	५०-००	शु।चं।श
१६		४ "_५०-००_	५३-२०	शु।चं।के
१७	मृगशिरा	१ "_५३-२०_	५६-४०	शु।मं।मं
१८		२ "_५६-४०_	६०-००	शु।मं।बृ
१९		३ "_६०-००_	६३-२०	क।मं।बु
२०		४ "_६३-४०_	६६-४०	बु।मं।शु
२१	आर्द्रा	१ "_६६-२०_	७०-००	बु।रा।रा
२२		२ "_७०-००_	७३-२०	बु।रा।बृ
२३		३ "_७३-२०_	७६-४०	बु।रा।बु
२४		४ "_७६-४०_	८०-००	बु।रा।शु
२५	पुनर्वसु	१ "_८०-००_	८३-२०	बु।बृ।बृ
२६		२ "_८३-२०_	८६-४०	बु।बृ।शु
२७		३ "_८६-४०_	९०-००	बु।बृ।शु
२८		४ "_९०-००_	९३-२०	चं।बृ।चं
२९	पुष्य	१ "_९३-२०_	९६-४०	चं।श।श
३०		२ "_९६-४०_	१००-००	चं।श।बु
३१		३ "_१००-००_	१०३-२०	चं।श।शु
३२		४ "_१०३-२०_	१०६-४०	चं।श।रा
३३	आश्लेषा	१ "_१०६-४०_	११०-००	चं।बु।बु
३४		२ "_११०-००_	११३-२०	चं।बु।शु
३५		३ "_११३-२०_	११६-४०	चं।बु।मं
३६		४ "_११६-४०_	१२०-००	चं।बु।बृ
३७	मघा	१ "_१२०-००_	१२३-२०	सू।के।के
३८		२ "_१२३-२०_	१२६-४०	सू।के।सू
३९		३ "_१२६-४०_	१३०-००	सू।के।रा
४०		४ "_१३०-००_	१३३-२०	सू।के।श
४१	पूर्वा० फा०	१ "_१३३-२०_	१३६-४०	सु।शु।शु
४२		२ "_१३६-४०_	१४०-००	सू।शु।रा
४३		३ "_१४०-००_	१४३-२०	सू।शु।रां
४४		४ "_१४३-२०_	१४६-४०	सू।शु।श
४५	उ० फा०	१ "_१४६-४०_	१५०-००	सू।सू।सू
४६		२ "_१५०-००_	१५३-२०	बु।सू।रा

४७		३ "_१५३-२०_	१५६-४०	बु।सू।श
४८		४ "_१५६-४०_	१६०-००	बु।सू।बु
४९	हस्त	१ "_१६०-००_	१६३-२०	बु।चं।चं
५०		२ "_१६३-२०_	१६६-४०	बु।चं।रा
५१	हस्त	३ हस्त_१६६-४०_	१७०-००	बु।चं।श
५२		४ "_१७०-००_	१७३-२०	बु।चं।के
५३	चित्रा	१ "_१७३-२०_	१७६-४०	बु।मं।मं
५४		२ "_१७६-००_	१८०-००	बु।मं।बु
५५		३ "_१८०-००_	१८३-२०	शु।मं।बु
५६		४ "_१८३-२०_	१८६-४०	शु।मं।शु
५७	स्वाती	१ "_१८६-४०_	१९०-००	शु।रा।रा
५८		२ "_१९०-००_	१९३-२०	शु।रा।बृ
५९		३ "_१९३-२०_	१९६-४०	शु।रा।बु
६०		४ "_१९६-४०_	२००-००	शु।रा।शु
६१	विशाखा	१ "_२००-००_	२०३-२०	शु।बृ।बृ
६२		२ "_२०३-२०_	२०६-४०	शु।बृ।श
६३		३ "_२०६-४०_	२१०-००	शु।बृ।शु
६४		४ "_२१०-००_	२१३-२०	मं।बृ।चं
६५	अनुराधा	१ "_२१३-२०_	२१६-४०	मं।श।श
६६		२ "_२१६-४०_	२२०-००	मं।श।बु
६७		३ "_२२०-००_	२२३-२०	मं।श।शु
६८		४ "_२२३-२०_	२२६-४०	मं।श।रा
६९	ज्येष्ठा	१ "_२२६-४०_	२३०-००	मं।बु।श
७०		२ "_२३०-००_	२३३-२०	मं।बु।के
७१		३ "_२३३-२०_	२३६-४०	मं।बु।शु
७२		४ "_२३६-४०_	२४०-००	मं।बु।रा
७३	मूल	१ "_२४०-००_	२४३-२०	बृ।के।के
७४		२ "_२४३-२०_	२४६-४०	बृ।के।सू
७५		३ "_२४६-४०_	२५०-००	बृ।के।रा
७६		४ "_२५०-००_	२५३-२०	बृ।के।श

७७	पूर्वाषाढ़ा	१ "_२५३-२०_	२५६-४०	बृ।शु।शु
७८		२ "_२५६-४०_	२६०-००	बृ।शु।चं
७९		३ "_२६०-००_	२६३-२०	बृ।शु।रा
८०		४ "_२६३-२०_	२६६-४०	बृ।शु।बु
८१	उ० षाढ़ा	१ "_२६६-४०_	२७०-००	बृ।सू।सू
८२		२ "_२७०-००_	२७३-२०	श।सू।रा
८३		३ "_२७३-२०_	२७६-४०	श।सू।[illegible]
८४		४ "_२७६-४०_	२८०-००	श।सू।बु
८५	श्रवण	१ "_२८०-००_	२८३-२०	श।चं।चं
८६		२ "_२८३-२०_	२८६-४०	श।चं।रा
८७		३ "_२८६-४०_	२९०-००	श।चं।श
८८		४ "_२९०-००_	२९३-२०	श।चं।के
८९	धनिष्ठा	१ "_२९३-२०_	२९६-४०	श।मं।मं
९०		२ "_२९६-४०_	३००-००	श।मं।बृ
९१		३ "_३००-००_	३०३-२०	श।मं।बु
९२		४ "_३०३-२०_	३०६-४०	श।मं।शु
९३	शतभिषा	१ "_३०६-४०_	३१०-००	श।रा।रा
९४		२ "_३१०-००_	३१३-२०	श।रा।बृ
९५		३ "_३१३-२०_	३१६-४०	श।रा।बु
९६		४ "_३१६-४०_	३२०-००	श।रा।शु
९७	पू०भाद्रपद	१ "_३२०-००_	३२३-२०	श।बृ।बृ
९८		२ "_३२३-२०_	३२६-४०	श।बृ।श
९९		३ "_३२६-४०_	३३०-००	श।बृ।शु
१००		४ "_३३०-००_	३३३-२०	बृ।बृ।चं
१०१	उ० भाद्रपद	१ "_३३३-२०_	३३६-४०	बृ।श।श
१०२		२ "_३३६-४०_	३४०-००	बृ।श।शु
१०३		३ "_३४०-००_	३४३-२०	बृ।श।शु
१०४		४ "_३४३-२०_	३४६-४०	बृ।श।रा
१०५	रेवती	१ "_३४६-४०_	३५०-००	बृ।बु।बु
१०६		२ "_३५०-००_	३५३-२०	बृ।बु।शु

१०७	३ "_३५३-२०...	३५६-४०	बृ।बु।मुं
१०८	४ "_३५६-४०...	३६०-००	बृ।बु।बृ

उपर्युक्त विवरण ज्योतिष-प्रेमियों के कंठस्थ करने योग्य है। पूर्व उदाहरण में हमने राधेश्याम को चित्रा नक्षत्र के तीसरे चरण में स्थिर करके तुला राशि स्पष्ट की थी। उपर्युक्त विवरण में हम देखें, तो चित्रा नक्षत्र का तीसरा चरण १८०-०० डिग्री प्रारम्भ होकर १८३-२० डिग्री पर समाप्त होता है तथा इस चरण पर आधिपत्य शु।मं।बु अर्थात् शुक्र। मंगल।बुध का है।

इससे यह स्पष्ट हुआ कि राधेश्याम के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव शुक्र का है, अतः शुक्र से संबंधित रत्न 'हीरक खण्ड' पहिनना चाहिये, फिर यदि सुविधा और संभव हो तो मंगल का रत्न तथा बुध का रत्न भी धारण करना चाहिए।

जब-जब भी आकाशमण्डल में शुक्र, मंगल एवं बुध प्रबल, पराक्रमी एवं उच्च के होंगे, तब-तब इनका समय श्रेष्ठ रूप से व्यतीत होगा, व्यापार में वृद्धि या आर्थिक सम्पन्नता रहेगी, साथ ही प्रत्येक दशा में शुक्र, मंगल एवं बुध की अन्तर्दशाएँ-प्रत्यन्तर्दशाएँ श्रेष्ठ रहेंगी।

इस प्रकार से पाठक भली-भाँति समझ गये होंगे कि किसी भी व्यक्ति के जीवन पर किन-किन ग्रहों का मुख्य प्रभाव रहता है, तथा उपर्युक्त सारिणी कितनी महत्वपूर्ण है।

अब तक पाठकों को अपने नाम से राशि की जानकारी ज्ञात करने का तरीका भली-भाँति आ गया होगा, अब आगे यह जानकारी दी जा रही है कि प्रत्येक राशि का स्वामी कौन-सा ग्रह है—

॥ राशि-स्वामी-बोधक-चक्र ॥

क्रम संख्या	राशि	स्वामी
१	मेष	मंगल
२	वृष	शुक्र
३	मिथुन	बुध
४	कर्क	चंद्रमा
५	सिंह	सूर्य
६	कन्या	बुध
७	तुला	शुक्र
८	वृश्चिक	मंगल
९	धनु	बृहस्पति
१०	मकर	शनि
११	कुंभ	शनि
१२	मीन	बृहस्पति

उपर्युक्त बाहर राशियों में सूर्य तथा चन्द्रमा एक राशि के स्वामी हैं तथा बाकी सभी ग्रह दो-दो राशियों के स्वामी हैं। पूर्व उदाहरण में राधेश्याम की तुला राशि निश्चित हुई थी तथा उपर्युक्त चक्र में तुला राशि का स्वामी शुक्र है, अतः राधेश्याम के जीवन पर शुक्र का प्रभाव रहा। पाठकों को स्मरण होगा कि पीछे नक्षत्र-चरण आधिपत्य में भी हम राधेश्याम के जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव शुक्र ग्रह का सिद्ध कर चुके हैं।

अंक ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक ग्रह के निश्चित अंक हैं, जो इस प्रकार से हैं—

सूर्य	१,	शुक्र	६,
चंद्र	२,	शनि	८,
मंगल	९,	हर्षल	४,
बुध	५,	नेपच्यून	७,
बृहस्पति	३,		

इसमें राहू-केतु की गणना नहीं होती। पूर्व उदाहरण में राधेश्याम का स्वामी शुक्र है तथा शुक्र के अंक ६ हैं, अतः राधेश्याम के लिए ६ का अंक उन्नतिदायक व श्रेष्ठ एवं भाग्यवर्धक समझना चाहिए।

मेष राशि—

जिस व्यक्ति की मेष राशि होती है, वह मँझले कद का, रक्तिम चेहरा, गौर वर्ण, चंचल एवं सुन्दर नेत्रों वाला, तीक्ष्ण तथा पैनी दृष्टि से युक्त तथा दूसरों के मन की तुरन्त थाह पा लेने वाला व्यक्ति होता है। इसका चेहरा चौड़ाई की अपेक्षा कुछ लम्बाई लिये हुए होता है। भूरा रंग, मन में वैर पालने वाला, क्रोधी स्वभाव तथा चतुर ऐसा व्यक्ति जिस कार्य में भी लग जाता है, उसे पूरा करके ही छोड़ता है। संकटों से यह घबराता नहीं, परन्तु मुस्कराता हुआ उनका सामना कर सफलता प्राप्त करता है।

धार्मिक मामलों में यह लचीला होता है, धार्मिक रूढ़ियों को तोड़कर

उन्नति की ओर अग्रसर होते रहना इसका स्वभाव होता है। नौकरी में यह शीघ्र प्रगति करता है और ह्रदय से उदार होता है। हाथ में पैसा आ जाने पर यह दान देने में हिचकिचाता नहीं । साधारण कुल में भी जन्म लेकर ऐसे व्यक्ति उन्नति के द्वार खटखटाते देखे गये हैं। इनका प्रत्येक कार्य योजनाबद्ध होता है, परन्तु जरा भी अव्यवस्था देखने पर ये शीघ्र ही क्रोधित भी हो उठते हैं। जितनी तीव्रता से इन्हें क्रोध आता है, उतनी ही तीव्रता से उतरता भी देखा गया है। धार्मिक कार्यों के अतिरिक्त कला, विज्ञान, संगीत आदि विषयों में भी ये रुचि रखते हैं। इनके जीवन में निरन्तर उत्थान-पतन होते देखे गये हैं।

घातक समय–

ज्योतिष में प्रत्येक राशि के लिए घातक समय स्पष्ट किया गया है। ऐसे समय में व्यक्ति को चाहिए कि वह कोई भी शुभ कार्य प्रारम्भ न करे, न किसी अधिकारी से मिलने जावे और न व्यापारिक सौदा ही करे।

घातक तिथि–

१, ६, ११ (एकम्, छठ तथा ग्यारस–दोनों पक्षों की)

वार–रविवार। महीना–कार्तिक। प्रहर–पहला।

चन्द्रमा–१(स्त्री के लिये भी १ चन्द्रमा)।

शुभ समय–

शुभ समय प्रत्येक राशि वालों को ध्यान में रखना चाहिए तथा लेन-देन, व्यापार, उच्चाधिकारियों से मिलना, मुहूर्त आदि शुभ समय में ही करें।

शुभ तारीखें–

९, १८, २७ (प्रत्येक महीने की)

तिथियाँ–३, १२ (तृतीया, द्वादशी)

वार–मंगलवार। प्रहर–३

लाभ–पूर्व दिशा में।

मित्र–मिथुन, कन्या तथा मीन राशि वाले।

शत्रु–कर्क, वृश्चिक राशि वाले।

जब समय ठीक नहीं हो, मानसिक परेशानियाँ बढ़ जाएँ या कार्यों में सफलता प्राप्त न हो तो उन्हें मंगलवार का व्रत करना चाहिए अथवा हनुमानजी के नित्य दर्शन करने चाहिए।

यदि संभव हो तो निम्न तांत्रीय मंत्र का जप भी करे या योग्य ब्राह्मण

से करावे–

तांत्रीय मंत्र–

ॐ हूँ श्री मंगलाय नमः।।

मंत्र जप-संख्या–१०,०००

दान–मूँगा, स्वर्ण, गेहूँ, ताम्र-कलश, घी, रक्त-वस्त्र आदि।

मेष राशि वाले व्यक्तियों को चाहिए कि वे नित्य अपनी अँगूठी में पहिने मूँगे के दर्शन करके नैमित्तिक कार्य प्रारम्भ करें तो उनके जीवन में सर्वार्थ सिद्धि बनी रहेगी, यह निश्चित है।

वृष राशि–

जिस व्यक्ति की वृषभ राशि होती है, स्वास्थ्य की दृष्टि से वह सुदृढ़, कसी हुई माँसपेशियाँ, सुडौल व्यक्तित्व, सम्पन्न जातक होता है। कठिन रोगों का सामना भी यह हँसते हुए करता है तथा कठिन से कठिन संघर्षों के क्षणों में भी यह अपने पथ से विचलित नहीं होता।

ऐसे व्यक्ति में दूसरे के मन को ताड़ लेने की अपूर्व क्षमता होती है। सामने खड़े व्यक्ति को देखते ही यह एक क्षण में उसके बारे में काफी अधिक जान लेता है, यह कैसा है ? इसका चरित्र कैसा है ? यह यहाँ किस काम से आया है ? यह मुझे क्या कहना चाहता है ? तथा मुझे इसके प्रश्न के उत्तर में क्या कहना है ? आदि बातें पहले से ही अपने मस्तिष्क में स्थिर कर लेता है। जीवन-संग्राम में ये व्यक्ति निश्चय ही सफलता प्राप्त करते हैं।

धार्मिक क्षेत्र में ये व्यक्ति रूढ़ियों के दास न होते हुए भी धर्मभीरु होते हैं। मन में अपने इष्टदेव के प्रति श्रद्धा रखते हैं तथा कोई भी शुभ कार्य अथवा महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व उनकी पूजा-अर्चना करना अपना ध्येय समझते हैं। इनकी सन्तान में भी धार्मिक श्रद्धा घर के वातावरण से स्वतः ही बनी होती है।

ये कोई भी कार्य अस्त-व्यस्त रूप से न करके योजनाबद्ध कार्य करने में विश्वास रखते हैं। किस समय कौन-सा कार्य करना है तथा उसे किस प्रकार से सम्पन्न करना है यह इनके मस्तिष्क में सुनियोजित होता है, वस्तुतः व्यवहार-कार्य में ये कुशल एवं दक्ष होते हैं।

घातक समय–

ज्योतिष एक प्रकार से जीवन का प्रकाश-स्तंभ है, जिसके प्रकाश में

जीवन सावधानी एवं सुरक्षात्मक रूप से व्यतीत किया जा सकता है, अतः जातक को चाहिए कि वह घातक समय का ध्यान रक्खे तथा इस अवधि में कोई महत्त्वपूर्ण कार्य न तो आरम्भ करे और न उसके सम्बन्ध में योजना ही बनावे।

घातक तिथियाँ–

५, १०, १५ (पूर्णिमा और अमावस्या)

वार–शनिवार महीना–मार्गशीर्ष प्रहर–४

चन्द्रमा–५वाँ तथा स्त्रियों के लिये ८वाँ।

शुभ समय–

शुभ समय में किया गया प्रत्येक कार्य सम्पन्न होता है–

शुभ तारीखें–६, १५, २४ (प्रत्येक महीने की)

शुभ तिथियाँ–६, १२ (षष्ठी, द्वादशी)

वार–शुक्र प्रहर–तीसरा लाभ–उत्तर दिशा में

मित्र–कन्या तथा मकर राशि वाले।

शत्रु–सिंह, धनु तथा मेष राशि वाले।

निर्देश–

जब समय ठीक महसूस न हो रहा हो या मानसिक परेशानियाँ बढ़ी हुई प्रतीत हों, तब पुरुषों को शुक्रवार का व्रत करना चाहिये तथा स्त्रियों को संतोषी माता का व्रत करना चाहिए।

यदि संभव हो तो निम्न तांत्रीय-मन्त्र का जप भी करे या योग्य ब्राह्मण से करावे–

तांत्रीय मन्त्र–

'ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः'

मन्त्र जप-संख्या–२०,०००

दान–श्वेत वस्त्र, शहद, धान्य, गुड़ आदि।

वृष राशि वाले स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि वे अपनी कनिष्ठिका अँगुली में स्वर्णनिर्मित मुद्रिका में हीरक खंड जड़वाकर प्रातः उसके दर्शन कर नित्य नैमित्तिक कार्य प्रारम्भ करें तो उन्हें प्रत्येक कार्य में निश्चय ही सफलता प्राप्त हो सकती है।

मिथुन राशि–

मिथुन राशि से सम्पन्न व्यक्ति लम्बे कद, उभरे और चौड़े स्कंध,

हृष्ट-पुष्ट शरीर, गौर रक्तिम वर्ण तथा ऊँचे कद-काठ का धनी होता है। शारीरिक रोग जीवन में कम ही होते हैं, परन्तु रोगों पर सफलतापूर्वक नियंत्रण रखना इनके वश की बात नहीं होती। ये शीघ्र ही घबरा जाते हैं या रोग को खूब बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं तथा ऐसा प्रदर्शन करते हैं मानो ये भयंकर रोग से ग्रस्त और दुःखी हों।

परन्तु इसके साथ ही साथ इनमें आत्म-विश्वास कूट-कूटकर भरा होता है। जो भी निश्चय कर लेते हैं उस पर अन्त तक डटे रहते हैं और उस कार्य को पूरा करके ही छोड़ते हैं। यद्यपि अधिकतर देखने में यही आया है कि इनके जीवन में एक न एक समस्या बनी ही रहती है और इनका पूरा जीवन इन संघर्षों से लड़ने में ही व्यतीत होता है।

शिक्षा की दृष्टि से यद्यपि ये अन्ततः अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेते हैं परन्तु मार्ग में निरन्तर बाधाएँ आते रहने के कारण इनकी शिक्षा व्यवस्थित नहीं हो पाती, फलस्वरूप ये इतनी तेजी से मंजिल नहीं प्राप्त कर सकते जितनी तेजी से अन्य लोग कर लेते हैं।

स्वभाव से ये रसिकमिजाज होते हैं और हर समय प्रेम का नशा इनके दिमाग में छाया ही रहता है। यद्यपि इन्हें प्रेम के क्षेत्र में सफल नहीं कहा जा सकता परन्तु फिर भी इनकी प्रवृत्ति उधर बनी ही रहती है। विपरीत योनि के प्रति इनका आकर्षण अन्य प्राणियों की अपेक्षा ज्यादा ही देखा जाता है।

ऐसा व्यक्ति सजावट प्रिय, अपने आपको सजा-सँवारकर रखने वाला तथा संगीत-कला आदि में रुचि रखने वाला होता है।

घातक समय–

इन राशि वालों को चाहिए कि वे घातक समय का पूरी तरह ध्यान रक्खें–

घातक तिथि–

१, ७, १२ (प्रत्येक महीने की)

वार–सोमवार । महीना–आषाढ़। प्रहर–तीसरा।

चन्द्रमा–९वाँ (स्त्री के लिए ७वाँ)

शुभ समय तथा शुभ तारीखें–

५, १४, २३ (प्रत्येक महीने की)

तिथियाँ–५, १४ (पंचमी, चतुर्दशी)

वार—बुधवार। प्रहर—पहला। लाभ—उत्तर दिशा में।

मित्र—तुला तथा कुंभ राशि वाले।

शत्रु—कन्या तथा मकर राशि वाले।

निर्देश—

जब परेशानियाँ महसूस हों या कार्य में अड़चनें दिखाई दें, तो ऐसे व्यक्तियों को चाहिए कि वे बुधवार का व्रत करें अथवा चतुर्थी का व्रत करें, प्रातः सायं गणपति के दर्शन अवश्य करें। यदि संभव हो तो निम्न तंत्रोक्त मंत्र के १७००० जप करें या किसी योग्य ब्राह्मण से करावें।

तंतोक्त मंत्र —

।। ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः ।।

जप-संख्या—१७,०००

दान—घृत, पीला वस्त्र, गेहूँ, चावल तथा शक्कर आदि।

मिथुन राशि वाले स्त्री-पुरुषों को चाहिए कि वे स्वर्ण-अँगूठी में पन्ना जड़वाकर कनिष्ठिका अँगुली में धारण करें और प्रातः उसके दर्शन करें तो सभी मनोवांछित कार्य सिद्ध होते देखे गये हैं।

कर्क राशि—

जिन पुरुषों या स्त्रियों की कर्क राशि होती है वे शरीर से दुबले-पतले, कोमलकाय, भावुक हृदय, सरल प्रकृति के होते हैं। इनके जीवन में न तो छल-छद्म होता है और न किसी को धोखा देने की प्रवृत्ति। जो भी बात कहेंगे, सरल मन से, सीधे-सादे ढंग से, निष्कपट भाव से। यह इनके स्वभाव में ही नहीं होता कि किसी को धोखा दें, या किसी से छल करें इसलिए इन्हें भावुक-प्रकृति सम्पन्न व्यक्ति कहा जाता है।

परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि ये धोखा देने वाले को पहिचानते नहीं, जानते अवश्य हैं और यह भी महसूस करते हैं कि सामने वाला व्यक्ति धोखा देने की कोशिश कर रहा है परन्तु जानते-बूझते हुए भी ये धोखा खा लेते हैं, व्यर्थ में न तो प्रतिवाद करते हैं और न ही किसी प्रकार का विरोध भी।

सांसारिक जीवन इनका सामान्य ही कहा जा सकता है। अधिकतर यह देखा गया है कि पति-पत्नी में मतभेद बना रहता है। चूँकि दोनों शिक्षित होते हैं अथवा दोनों अपने आपको विशेष बुद्धिमान मानते हैं, अतः दोनों ही अपने-अपने हठ के पक्के होते हैं। झुकना ये जानते नहीं। फलस्वरूप

पारस्परिक मनमुटाव बढ़ता जाता है और सांसारिक सुख नगण्य-सा रह जाता है।

इनमें एक कमी यह होती है कि ये अपने आपका प्रदर्शन बहुत चढ़कर करते हैं, फलस्वरूप लोगों में इनके बारे में गलतफहमियाँ पैदा हो जाती हैं। ये निर्धन होने पर धनी होने का ढोंग रचते हैं, कुरूप होने पर अपने आपको तड़क-भडक में ग्रस्त कर ज्यादा-से-ज्यादा सुन्दर दिखाने की चेष्टा करते हैं।

विपत्तियों एवं संघर्षों के सामने ये टिक नहीं पाते और शीघ्र ही घुटने टेक देते हैं। ऐसी स्थिति में या तो ये समझौता कर लेते हैं अथवा पलायनवादी प्रवृत्ति अपना लेते हैं और इनकी यह प्रवृत्ति कविता अथवा चित्रों के द्वारा व्यक्त होती है।

घातक समय—

चूँकि कर्क राशि वाले व्यक्ति भावुक प्रकृति सम्पन्न होते हैं, अतः इन्हें घातक समय का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

घातक तिथि—

२, ७, १२ (प्रत्येक महीने की)

वार—बुधवार। महीना—पौष। प्रहर—पहला।

चन्द्रमा—२ तथा स्त्रियों के लिए ९वाँ।

शुभ समय—

तारीखें—२, १०, २० तथा २९

तिथियाँ—२, ११

वार—सोमवार। प्रहर—दूसरा।

लाभ—ईशान कोण में।

मित्र—वृश्चिक तथा मीन राशियाँ।

शत्रु—तुला, धनु तथा कुंभ राशियाँ।

निर्देश—

जब समय ठीक न चल रहा हो, या दशा कमजोर चल रही हो तो सोमवार का व्रत करना चाहिए। स्त्रियों को 'मंछा महादेव' का व्रत करना चाहिए तथा पुरुषों को चाहिए कि वे शंकर का इष्ट रक्खें तथा उन्हें नित्य बिल्व-पत्र चढ़ावें।

तंत्रोक्त मंत्र–

।। ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः।।

जप-संख्या–१०,०००

दान–सफेद वस्त्र, मोती तथा चाँदी।

कर्क राशि वाले स्त्री-पुरुष को चाहिए कि वे पुष्य नक्षत्र में निर्मित रजत मुद्रिका में उत्तम मोती जड़वा कर धारण करें तथा प्रातः उसके दर्शन करें तो निश्चय ही उनके मनोरथ सिद्ध होंगे, इसमें सन्देह नहीं।

सिंह–

सिंह राशि में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्वभाव से क्रोधी परन्तु हृदय से उदार होता है। उसका क्रोध किसी का अहित नहीं करता परन्तु संयम, मर्यादा, सुव्यवस्था और अनुशासन रखने के लिए यह स्वभाव सहायक होता है। कठिनता से गुस्सा आता है पर गुस्सा आने पर एकदम से शांत भी नहीं होता।

यह व्यक्ति संगीत-कलादि के मर्म को पहिचानने वाला होता है। लम्बी यात्राएँ करना इसका स्वभाव होता है। शारीरिक रूप से देखा जाए तो ऐसा व्यक्ति ऊँचे कद-काठ का, सुडौल सबल व्यक्तित्व सम्पन्न गोल और चौड़ा मुँह, ऊँचा उठा हुआ प्रशस्त ललाट और भव्य व्यक्तित्व सम्पन्न होता है। कमर से नीचे के भाग की अपेक्षा ऊपर का अर्द्धांग ज्यादा पुष्ट और सबल होता है।

अधिकतर देखा गया है कि इनके जीवन में विपरीत परिस्थितियाँ छायी ही रहती हैं परन्तु इनमें इतना दम-खम होता है कि ये विपरीत परिस्थितियों को भी अपने अनुकूल ढाल लेते हैं। अधिकारियों के प्रति इनकी भावना वफादारी से पूर्ण होती हैं। इन्हें जो भी कार्य दिया जाता है, वह पूरी तरह से सम्पन्न करते हैं, आत्म-विश्वास तो इनमें कूट-कूटकर भरा होता है।

धार्मिक मामलों में ये सहिष्णु होते हैं और अगर यह कह दिया जाए कि यह लचीले होते हैं तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। यथासंभव अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं तथा हृद्गत विचारों को सहजतः चेहरे पर आने नहीं देते।

इनके विचार मौलिक होते हैं तथा इनके कार्य समाचार बन जाते हैं। जीवन का एक निश्चित लक्ष्य इनके सामने होता है जिसे ये पूरा करने में कृत संकल्प रहते हैं।

अशुभ समय–

यदि ये जातक अशुभ समय को टालकर कार्य करें तो सहज ही लक्ष्य प्राप्ति में सफल हो सकते हैं।

अशुभ तिथि–

३, ८, १३

मास–ज्येष्ठ वार–शनि प्रहर–पहला।

चन्द्रमा–छठा तथा स्त्रियों के लिए ४था।

शुभ समय–

तारीखें–१, १०, १९, २८ (प्रत्येक महीने की)

मिति–१, १०, १५ (दोनों पक्षों की)

वार–रविवार। प्रहर–तीसरा।

मित्र राशियाँ–वृश्चिक, मकर, मीन।

इष्ट–

इनके जीवन में इष्ट का सर्वोपरि महत्त्व है क्योंकि 'इष्ट बिना भ्रष्ट' कहावत के अनुसार यदि ये सूर्य की उपासना रक्खें अथवा नित्य प्रातः उठकर सूर्य को अर्घ्य देकर बाद में नित्य नैमित्तिक कार्य प्रारम्भ करें तो इनके जीवन में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है।

निर्देश–

जब-जब गगनमण्डल में सूर्य की स्थिति क्षीण होगी अथवा सूर्य नीच राशि पर गोचर करेगा तब-तब इनके जीवन में भी परेशानियाँ, चिन्ताएँ एवं समस्याएँ बढ़ जायेंगी। ऐसी स्थिति में इन्हें निम्न तंत्रोक्त मन्त्र का जप करना चाहिए।

तन्त्रोक्त मन्त्र–

'ॐ ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः'

दान–

सूर्य के दान में स्वर्ण, ताम्र, गेहूँ, घी, गुड़, रक्त-वस्त्र, रक्त पुष्पादि हैं।

जप-संख्या–७०००

इस राशि वालों को चाहिए कि ये अनामिका उँगली में स्वर्ण मुद्रिका में माणिक्य धारण करें तथा प्रातः उसके दर्शन करें तो सभी मनोरथ निश्चय ही सिद्ध होंगे।

कन्या–

कन्या राशि में जन्म लेने वाला जातक उत्साहपूर्ण, सरल हृदय एवं संवेदनशील होता है। उसका हृदय बिल्लौरी काँच की तरह होता है, जो जरा-सी ठेस लगते ही टूट जाता है। इनके जीवन में भावुकता, कोमलता, स्त्रैणता एवं माधुर्य विशेष होता है।

ऐसे जातक प्रत्येक कार्य करने में उतावली करते हैं, फिर वह कार्य चाहे इनके लिए हितकर हो अथवा न हो। अपनी भावनाओं पर यह सहज ही नियंत्रण नहीं कर पाते, फलस्वरूप जो भी इनसे मित्रता दर्शाते हैं ये उन्हीं के होकर रह जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति मस्तिष्क की दृष्टि से उर्वर एवं सहज क्रियाशील होते हैं। बासी सोचना इनके वश की बात नहीं, अपितु ये हर समय कुछ-न-कुछ नया सोचते ही रहते हैं। संगीत, चित्रकलादि में इनकी रुचि सहज ही देखी जा सकती है।

शारीरिक दृष्टि से ये व्यक्ति मध्यम डीलडौल के गौरवर्ण, तीखी और ऊँची उठी हुई नासिका तथा सम्मोहन सम्पन्न होते हैं। इनकी बातचीत में गंभीरता एवं धीरज होता है। इनका सीना सागरवत् चौड़ा, उभरा हुआ एवं गम्भीर दिखाई देता है। काली सघन केशराशि, उभरा हुआ ललाट और देदीप्यमान चेहरा इनके व्यक्तित्व की विशेषता होती है।

बाल्यावस्था में इनकी शिक्षा में व्यवधान पड़ते रहते हैं, परन्तु यौवनावस्था इनकी सर्वाधिक सुखी एवं श्रेष्ठ होती है। पठन-पाठन की अपेक्षा श्रृंगार सौन्दर्यादि की ओर इनकी रुचि विशेष होती है। भाषण कला में ये निपुण होते हैं तथा दूसरों को अपने अनुकूल बना लेना इनके बाएँ हाथ का खेल होता है।

अशुभ समय–

इस राशि वालों को अशुभ समय का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

अशुभ तिथियाँ–

५, १०, १५ (तथा अमावस्या भी)

मास–भाद्रपद। वार–शनिवार। प्रहर–पहला।

चन्द्र–१०वाँ (स्त्री के लिए तीसरा)

शुभ समय–

तारीखें–५, १४, २३ (प्रत्येक मास की)

तिथियाँ–३, १२ (दोनों पक्षों की)

वार–बुधवार प्रहर–पहला।

मित्र–मकर, वृष राशियाँ।

शत्रु–धनु, कुंभ, मेष राशियाँ।

इष्ट–

इनके जीवन पर प्रधान आधिपत्य-देव गणपति हैं जो कि विघ्नहर्ता एवं सर्व मंगलकर्ता हैं। इन्हें चाहिए कि ये गणेश चतुर्थी का व्रत करें तथा नित्य प्रातः गणेशजी का दर्शन कर फिर नित्य नैमित्तिक कार्य प्रारम्भ करें।

निर्देश–

जब-जब भी गगनमण्डल में बुध ग्रह अस्त, वक्री या व्यभिचारी मान में होगा तब-तब इनके जीवन में परेशानियाँ, चिन्ताएँ एवं समस्याएँ बढ़ जाएँगी, फलस्वरूप इन्हें निम्न तन्त्रोक्त मन्त्र का जाप करना चाहिए या श्रेष्ठ ब्राह्मण से करावें।

तन्त्रोक्त मंत्र–

॥ ॐ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः ॥

दान–यथासंभव इन्हें काँसा, घृत, शक्कर, कपूर आदि का दान करना चाहिए।

जप-संख्या–८०००

इस राशि वालों को चाहिए कि वे कनिष्ठिका उँगली में स्वर्णमुद्रिका में पन्ना धारण करें तो विशेष लाभदायक रहेगा।

तुला–

तुला राशि में जन्म लेने वाला व्यक्ति आदर्श और उच्च भावना रखने वाला, किसी भी कार्य में शीघ्र और सही निर्णय लेने वाला, अपने व्यक्तित्व, प्रभाव एवं वाणी से दूसरों को मित्र बनाने तथा ठोस कार्य करने वाला होता है। यह जो भी योजना बनाता है सब सोच-विचारकर उस योजना को अंतिम रूप देता है तथा पूरी योजना बन जाने पर उस पर शीघ्र ही अमल करने लग जाता है और उस कार्य को पूरा करके ही छोड़ता है।

तुला का प्रतीक है तराजू जो कि न्याय का संकेतक है। यह व्यक्ति जीवन में न्यायप्रिय व्यक्ति होता है, न तो किसी पर अन्याय होते देख सकता है और न किसी के साथ अन्याय करता है। इस न्यायप्रियता के फलस्वरूप ही

यह मुँह पर खरी-खरी बात कहने में समर्थ होता है जिससे सामने वाला कुछ समय के लिए तो अप्रसन्न हो सकता है, परन्तु मन-ही-मन उसकी न्यायप्रियता की प्रशंसा करता हुआ कुछ समय के बाद उसका परम मित्र बन जाता है।

शारीरिक दृष्टि से ऐसा जातक मध्यम कद का, खुलता हुआ गोरा रंग, न अधिक लम्बा और न अधिक ठिगना, कफ प्रधान प्रकृति, चतुर, सदा मुस्कराते रहने वाला, चौड़ा चेहरा, तीखी नाक, सुन्दर सम्मोहक आँखें, चौड़ी छाती और सुन्दर आकृति का धनी ऐसा व्यक्ति जीवन-क्षेत्र में अन्ततः सफल होता है।

सामने वाले व्यक्ति के मन की थाह पाने में ये दक्ष होते हैं और अवसर के अनुकूल अपने आपको बना लेने में ये दक्ष होते हैं। न्याय, दया, क्षमा, शाँति एवं अनुशासन की ओर इनका झुकाव होता है। कल्पनाशक्ति इनमें प्रबल होती है तथा साधनविहीन होने पर भी इनका लक्ष्य ऊँचा होता है।

मित्रों के सहयोग से ही ये जातक जीवन में सफल होते देखे गये हैं।

अशुभ समय–

तिथि—४, ९, १० (दोनों पक्षों की)

मास—माघ मास बार—गुरुवार प्रहर—चौथा

चन्द्रमा—तीसरा (स्त्रियों के लिये छठा)

शुभ समय–

तरीखें—६, १५, २४ (प्रत्येक महीने की)

तिथियाँ—३, ६, ९, १२ तथा १५ (पूर्णिमा)

वार—शुक्रवार प्रहर—दूसरा, तीसरा।

मित्र राशियाँ—वृश्चिक, कुंभ, मिथुन।

शत्रु राशियाँ—मकर, मीन, वृष।

इष्ट–

इष्ट का यदि ये ध्यान रक्खें और उसका नियमित पूजन कर सकें तो इस राशि वाले व्यक्ति निश्चय ही सफलता के हाथ चूम सकते हैं। इन राशि वालों का इष्ट 'लक्ष्मी' है। नित्य प्रातःकाल उठकर इन्हें निम्न मन्त्र की एक माला(१०८ बार) फेरनी चाहिए।

'ॐ महालक्ष्मयै च विद्महे, महाश्रिचै च धीमहि तन्नो श्री प्रचोदयात्'

यह मन्त्र अमोघ गोपनीय एवं सर्वश्रेष्ठ धनदाता मंत्र कहा जाता है।

निर्देश–

विपरीत परिस्थितियाँ महसूस होने पर इन्हें निम्न तंत्रोक्त मंत्र के जप करने चाहिए या श्रेष्ठ ब्राह्मण से कराने चाहिए।

तंत्रोक्त मंत्र–

।। ॐ ऐं जं ग्रीं ग्रहेश्वराय शुक्राय नमः ।।

जप-संख्या—१६,०००

दान—स्वर्ण, रजत, चावल, मिश्री, दूध, श्वेत वस्त्र, चंदन आदि।

इन राशि वालों को चाहिए कि वे स्वर्ण मुद्रिका में हीरक खंड जड़वाकर कनिष्ठिका अँगुली में धारण करें तथा नित्य प्रातः उसके दर्शन करें।

वृश्चिक–

जिन व्यक्तियों की राशि वृश्चिक होती है वह बलिष्ठ, सुगठित शरीर, मांसल भुजाएँ, उदार हृदय, लम्बा डीलडौल, भरी हुई काठी, गठीला व्यक्तित्व, विशाल मस्तिष्क, दीप्त ललाट एवम् चमकती हुई आँखें लिये हुए होता है।

ऐसा व्यक्ति पुरुषत्व प्रधान मजाकप्रिय होता है। दूसरों को छेड़ने में इसे आनन्द आता है। इनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी सम्मोहक शक्ति होती है कि वह बरबस दूसरों को अपनी ओर आकृष्ट ही नहीं करती अपितु अपना बना लेती है। चुम्बकीय और सम्मोहक व्यक्तित्व के धनी ऐसे जातक जाति, समाज और मित्रों में सहज ही लोकप्रिय होते हैं।

प्रेम के क्षेत्र में ऐसे स्त्री-पुरुष अग्रणी होते हैं तथा विपरीत योनि के प्रति सहज ही आकर्षण रखते हैं परन्तु प्रेम के मामले में इतने अधिक चौकन्ने एवं सावधान रहते हैं कि इनका प्रेम एकांतिक और गोपनीय बनकर रह जाता है, चर्चा का विषय नहीं बन पाता।

व्यवहार के क्षेत्र में ये निष्कपट होते हैं तथा लेन-देन के मामले में निष्पक्षता बरतने का प्रयत्न करते हैं। ये जिस पर भी विश्वास करते हैं, पूरी तरह से करते हैं तथा उसके लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं, परन्तु शत्रु बन जाने पर इनके अंह को इतनी चोट लगती है कि वह उसका सर्वस्व मिटा देने के लिए भी किंचित् नहीं हिचकिचाता। वस्तुतः ऐसे व्यक्ति मित्रों के सर्वस्व और शत्रुओं के लिए काल होते हैं।

अपने कार्य के प्रति ये ईमानदार होते हैं तथा काव्य, संगीतादि कला में

इनकी रुचि सहज ही देखी जा सकती है। लेखन के प्रति ईमानदार रहते हैं तथा मौलिकता इनका प्रधान गुण होता है, झूठा, बासी, कूड़ा-करकट ये नहीं लिखते अपितु जो कुछ भी लिखते हैं उसमें कुछ ऐसी नवीनता ला देते हैं कि वह कृति अलग-थलग ही देदीप्यमान दृष्टिगोचर होने लगती है।

इनकी जान-पहचान विस्तृत होती है तथा किसी भी क्षेत्र में कैसा भी कार्य निकालना इनके बायें हाथ का खेल होता है।

अशुभ समय–

तिथियाँ–१, ६, ११

मास–आश्विन वार–शुक्रवार प्रहर–पहला

चंद्रमा–७वाँ (स्त्रियों के लिए दूसरा)

शुभ समय–

तारीखें–९, १८, २७ (प्रत्येक मास की)

तिथियाँ–३, ६, ९, १२ (दोनों पक्षों की)

वार–गुरुवार, सोमवार प्रहर–चौथा

मित्र–मिथुन, कर्क राशियाँ।

शत्रु–कुंभ, मेष, मिथुन राशियां।

इष्ट–

इन्हें चाहिए कि ये शिव का इष्ट रक्खें क्योंकि शिव ही इनके आधिपत्य देवता हैं। यदि संभव हो तो प्रत्येक सोमवार को रुद्राभिषेक द्वारा शिवार्चन करें, बिल्वपत्र चढ़ावें तथा नित्य उनके दर्शन करें। यदि हो सके तो 'नमः शिवाय' की माला भी फेरें।

निर्देश–

जब-जब भी आकाशमण्डल में मंगल की स्थिति क्षीण होगी या वह वक्री, अस्त तथा व्यभिचारगत भाव में होगा तब-तब इनके जीवन में कठिनाइयाँ बढ़ जाएँगी। मानसिक चिन्ताओं से व्यथा बढ़ेगी तथा कार्य में रुकावटें अनुभव होंगी। ऐसी स्थिति में इन्हें निम्न तंत्रोक्त मंत्र का जप करना या करवाना ठीक रहेगा।

तंत्रोक्त मंत्र–

।। ॐ हुं श्रीं मंगलाय नमः ।।

जप-संख्या–७०००

दान–रक्त वस्त्र, मूँगा, धान्य आदि।

इस राशि वालों को चाहिए वे स्वर्ण मुद्रिका में मूँगा रत्न जड़वाकर नित्य प्रातः उसके दर्शन कर फिर नित्य नैमित्तिक कार्य प्रारम्भ करें तो इन्हें अपूर्व सिद्धि प्राप्त होगी, इसमें सन्देह नहीं।

धनु–

धनु राशि दर्शन प्रधान राशि है, अतः यह स्वाभाविक है कि जिन लोगों की राशि धनु होती है वे प्रकृत्या दर्शन प्रधान व्यक्ति होते हैं। धार्मिक मामलों में इनकी श्रद्धा अपूर्व होती है तथा इनका प्रत्येक कार्य ईश्वर को साक्षी रखकर होता है।

ऐसे व्यक्ति अधिकतर धर्मभीरु देखे गये हैं। धार्मिक कार्यों का ये परम्परागत रीति से पालन करते हैं तथा सामाजिक रूढ़ियों का भी दृढ़ता से पालन करते हैं । इनके जीवन का प्रारम्भ और समापन ईश्वर के साथ ही होता है।

शारीरिक गठन सुन्दर एवं सजीली होती है। गोल और आकर्षक चेहरा, श्याम पीत केशराशि, घुँघराले बाल, पैनी तथा तीक्ष्ण आँखें, सम्मोहक व्यक्तित्व एवं खिलती हुई मुस्कराहट इनके जीवन की विशेषता कही जा सकती है। साधारणतः ये शारीरिक दृष्टि से स्थूलकाय कहे जा सकते हैं।

ऐसे जातक प्रमुखतः वणिक् प्रधान प्रवृत्ति वाले कहे जा सकते हैं तथा प्रत्येक कार्य में अपना भला-बुरा पहले सोच लेते हैं। यहाँ तक कि अपने निकटतम सम्बन्धियों, स्वजनों एवं मित्रों से भी व्यवहार करते समय इनकी यह वणिक् वृत्ति जाग्रत् रहती है तथा अपना लाभ पहले सोच लेते हैं।

जीवन में सात्विक गुण प्रधान होने से ये बहुत ही कम क्रोधित होते हैं। क्षमाशीलता इनका प्रधान गुण होता है तथा अपना अहित करने वाले को भी ये उदारतापूर्वक क्षमा कर देते हैं। इनके जीवन में न तो व्यर्थ का दिखावा होता है और न प्रदर्शनप्रियता ही। फैशन तथा ऐश-आराम की वस्तुओं पर ये व्यर्थ ही व्यय नहीं करते हैं। यदि सही अर्थों में कहा जाय तो इनका जीवन आदर्श और सादगीपूर्ण होता है।

बन्धन तथा परतन्त्रता इन्हें प्रिय नहीं। ये खरी-खरी बातें मुँह पर कहने में विश्वास रखते हैं।

अशुभ समय–

इन्हें अपने अशुभ समय का पूरा ध्यान रखना चाहिए।

अशुभ तिथियाँ–

तिथियाँ–३, ८, १३

मास–श्रावण वार–शुक्रवार प्रहर–पहला।

चन्द्रमा–४था (स्त्रियों के लिए १०वाँ)

शुभ समय–

तारीखें–३, १२, २१ तथा ३०

तिथियाँ–३, ६, ९, १२, १५ (पूर्णिमा)

वार–गुरुवार प्रहर–तीसरा

मित्र–मेष, सिंह राशियाँ।

शत्रु–मीन, वृष, कर्क राशियाँ।

इष्ट–

इनका प्रधान इष्ट हनुमान है अतः इन्हें श्री हनुमान की मूर्ति घर में रखनी चाहिए। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान को भोग चढ़ाना चाहिए तथा हमेशा निम्न मन्त्र की एक माला (१०८ बार) फेरनी चाहिए। यह दुर्लभ एवं सिद्धिप्रद मन्त्र है–

।। ॐ ह्रीं ह् स्फ्रें ख्फ्रें ह् स्त्रौं ह् स्ख्फ्रें हसौं हनुमते नमः ।।

निर्देश–

जब-जब भी 'नक्षत्र मण्डल' में बृहस्पति की स्थिति कमजोर होगी या वह अस्त या वक्री होगा तब-तब इनके जीवन में परेशानियाँ, दुःख तथा चिन्ताएँ बढ़नी स्वाभाविक हैं। ऐसी स्थिति में इन्हें निम्न तंत्रोक्त मंत्र का जप करना या शुद्ध ब्राह्मण से करवाना चाहिए।

तंत्रोक्त मन्त्र–

।। ॐ ऐं क्लीं बृहसतये नमः।।

जप-संख्या– १६०००

दान– पीत वस्त्र, स्वर्ण, चने की दाल, शहद, गुड़ आदि।

इन्हें चाहिए कि ये स्वर्ण मुद्रिका में पुखराज रत्न धारण करें जिससे सभी मनोरथ सिद्ध हो सकें।

धनु–

स्वभाव से ये उग्र होते हैं, जरा-जरा-सी बात पर ये भड़क उठते हैं और ऊलजलूल बकने लग जाते हैं। यदि इन्हें तुनकमिजाज कहें तो भी

अनुपयुक्त न होगा। उग्र स्वभाव होते हुए भी जहाँ ये अपना पक्ष कमजोर होता देखते हैं वहीं ये नम्र भी बन जाते हैं।

पैसा ये कमाते हैं। दीखने में ये फिजूलखर्च भी नहीं होते, फिर भी इनके पास पैसा टिकता नहीं है और जिस समय काम पड़ता है ये इधर उधर परेशान से द्रव्य संचय करने में लगे दिखाई देते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन भी मधुर नहीं कहा जा सकता। हीन भावना से ये ग्रस्त रहते हैं तथा पति-पत्नी के विचारों में जमीन-आसमान का अन्तर होता है। बोलते ये बहुत हैं तथा क्षण-क्षण में रूप बदलने में ये माहिर होते हैं।

अशुभ समय–

तिथि–४, ९, १४

मास–वैसाख वार–मंगलवार प्रहर–चौथा

चन्द्रमा–८वाँ (स्त्रियों के लिए ११वाँ)

शुभ समय–

तारीखें–८, १७, २६, (प्रत्येक महीने की)

तिथियाँ–४, ८, ११, १२ (दोनों पक्षों की)

वार–शनिवार प्रहर–चौथा

शुभ राशियाँ–वृष, कन्या।

अशुभ राशियाँ–मेष, मिथुन, सिंह।

इष्ट–

इनके प्रधान इष्ट नृसिंह हैं, जिनका इनके जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव है, अतः इन्हें अपने घर में नृसिंह की मूर्ति या चित्र रखना चाहिए तथा नित्य उसके दर्शन करने चाहिए। हो सके तो निम्न अमोघ मंत्र की माला भी फेरे–

'ॐ नृं नृं नृं नृसिंहाय नमः।

मकर–

जिन व्यक्तियों का जन्म मकर राशि में होता है, वे व्यक्ति अधिकतर रहस्यमय ही देखे गये हैं। यहाँ तक कि वे रहस्यमय प्रवृत्तियों में ही संलग्न रहते हैं। यही नहीं अपितु अनुभव में भी ऐसा आया है कि ये व्यक्ति जान-बूझकर रहस्यमय बन जाते हैं या इनकी प्रकृति ही रहस्यमय बन जाती है। ये जो भी बात करेंगे फुसफुसाहट के रूप में धीरे-धीरे, फिर भले ही वह

बात कितनी ही साधारण क्यों न हो।

ये व्यक्ति योजना बनाने में निपुण होते हैं। लम्बी-लम्बी योजनाएँ बनाना इनका स्वभाव होता है। कई बार तो यदि कार्य एवं योजना का समय आनुपातिक करें तो कार्य की अपेक्षा योजना पर ज्यादा समय व्यतीत होता दिखाई देता है। परन्तु इनकी योजनाएँ मात्र योजनाएँ ही रह जाती हैं, कार्यरूप में परिणत होती कम ही दिखाई देती हैं।

ऐसे जातक लम्बे, पतले, छरहरे, गौर वर्ण तथा कड़े केशों वाले होते हैं। इनकी नाक चपटी, बड़ा सिर तथा पैनी आँखें बता देती हैं कि ये फुर्तीले होते हुए भी अपने अधिकारों के प्रति लापरवाह हैं।

निर्देश–

जब-जब भी आकाशमण्डल में शनि की स्थिति क्षीण होगी या वह वक्री, अस्त या व्यभिचारगत होगा, तब-तब इनके जीवन में परेशानियाँ, बाधाएँ, रुकावटें एवं तकलीफें बढ़ती हुई दिखाई देंगी, अतः ऐसी स्थिति में इन्हें निम्न तंत्रोक्त मंत्र का जप करना या कराना चाहिए—

तंत्रोक्त मंत्र–

।।ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ।।

जप-संख्या—१९,०००

दान—तिल, कम्बल, तेल, चर्म पादुका, छत्र आदि।

यदि संभव हो सके तो इन्हें पंचधातु की अँगूठी में नीलम जड़वाकर मध्यमा उँगली में पहिनना चाहिए।

कुम्भ–

कुंभ राशि वाले व्यक्ति गोपनीय प्रकृति प्रधान पुरुष होते हैं। हर समय गंभीर बने रहेंगे, मित्रों के सामने खुलेंगे भी तो गोपनीय ढंग से। यदि कोई बात साधारण भी होगी, तब भी ये बात को कहेंगे नहीं। यदि ज्यादा दबाव डाला जायगा तब भी बात को घुमा-फिराकर कहेंगे, जिससे कि सामने वाला व्यक्ति बात की तह तक न पहुँच सके।

ये दूसरों से ही नहीं अपनी पत्नी से भी बात छुपायेंगे, उदाहरणार्थ मासिक वेतन कितना है ? इसको भी वे स्पष्टतः नहीं बतायेंगे। किस समय ये क्या कर बैठेंगे इसका कुछ भी पता नहीं चलता। उत्तर की ओर जाने का कहेंगे तो निश्चय ही ये पूर्व की ओर जायेंगे। किसी से मिलने का समय तय

करके ठीक उस समय न पहुँचकर या तो पन्द्रह मिनट पहले पहुँचेंगे या पन्द्रह-बीस मिनट देरी से पहुँचेंगे।

परन्तु ऐसे जातक शिक्षित, सूझ-बूझ के धनी, दूसरों के मन की थाह पाने वाले, सभ्यतापूर्वक व्यवहार करने वाले एवम् कुलीन विचारों के धनी होते हैं। जहाँ तक शारीरिक प्रश्न है ये दूसरों की सहायता करने को प्रस्तुत रहते हैं परन्तु आर्थिक पक्ष से न तो किसी की सहायता करेंगे और न किसी की हामी ही भरेंगे। मस्तिष्क इनका उर्वर होता है तथा स्मरणशक्ति इनमें गजब की होती है।

शारीरिक दृष्टि से ये व्यक्ति लम्बे, हृष्ट-पुष्ट, स्वस्थ, सबल, सुदृढ़ गोल और भरा हुआ चेहरा, कुछ-कुछ स्थूलकाय, छोटे-छोटे बाल, प्रसन्न-बदन तथा आकर्षक व्यक्तित्व सम्पन्न होते हैं।

इनकी उन्नति तथा अवनति अप्रत्याशित रूप से ही होती है। जीवन में निरन्तर इन्हें बाधाओं का सामना करते रहना पड़ता है, कठिन से कठिन संघर्षों में उलझकर भी ये हिम्मत नहीं हारते। दाम्पत्य जीवन इनका साधारण ही कहा जा सकता है।

अशुभ समय–

तिथियाँ—२, ८, १२

मास—चैत्र वार—गुरुवार प्रहर—तीसरा।

चन्द्र—११वाँ (स्त्री के लिए ५वाँ)

शुभ समय–

तारीखें—८, १७, २६ (प्रत्येक मास की)

तिथियाँ—४, ८, ११, १२ (प्रत्येक मास की)

वार—शनि प्रहर—चौथा।

शुभ राशियाँ—मिथुन, तुला।

शत्रु राशियाँ—वृष, कर्क।

इष्ट–

इनका इष्ट कुबेर है, अतः इन्हें नित्य ही कुबेर की उपासना करनी चाहिए तथा यदि संभव हो तो निम्न अमोघ मंत्र की एक माला नित्य फेरें तो निश्चय ही इनका जीवन सुख-सुविधापूर्ण एवं श्रीसम्पन्न होगा। मंत्र है—

।। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं धन-धान्य समृद्धि देहि दापय स्वाहा।।

निर्देश–

जल-जब भी नक्षत्र मण्डल में शनि की स्थिति क्षीण होगी या शनि अस्त अथवा वक्री होगा, तब-तब इनके जीवन में परेशानियाँ बढ़ जाएँगी। ऐसे समय में इन्हें निम्न तंत्रोक्त मंत्र का जप करना या करवाना चाहिए।

तंत्रोक्त मन्त्र–

॥ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः॥

जप-संख्या–१९,०००

दान–तिल, कम्बल, तेल, चर्मपादुका, छत्र आदि।

इन्हें मध्यमा अँगुली में पंचधातु की अँगूठी में नीलम रत्न धारण करना चाहिए, जो कि सर्व सुखप्रद है।

मीन–

जिन व्यक्तियों का जन्म मीन राशि में होता है वे ईश्वर के प्रति श्रद्धावान, धार्मिक कार्यों में बढ़-चढ़कर रुचि लेने वाले, मेहमानों का प्रेम से स्वागत-सत्कार करने वाले, सामाजिक रीति-रिवाजों का कड़ाई के साथ पालन करने वाले तथा बातचीत में प्रवीण एवं समझदार होते हैं।

मीन राशि वाले व्यक्तियों का मध्यम कद होता है। इनके सुन्दर काले तथा घुँघराले केश होते हैं, उन्नत नासिका, छोटे-छोटे सुन्दर चमकदार दाँत, पैनी एवं तीक्ष्ण आँखें तथा चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी ये अपने जीवन में सफल होते देखे गये हैं।

स्वभाव से ये सहिष्णु होते हैं। सामने वाला अहित भी कर ले फिर भी ये उदारतापूर्वक सहन कर लेते हैं तथा मन में किसी भी प्रकार की गाँठ नहीं रखते। यहाँ तक देखा गया है कि ये विरोधी तथा शत्रु का भी हित ही करते हैं, उनके प्रति किसी भी प्रकार की दुर्भावना नहीं रखते।

ऐसे जातक अधिकतर आत्मकेन्द्रित ही देखे गये हैं। ये अपने आप में मस्त रहते हैं तथा जब काम में तल्लीन हो जाते हैं तो इन्हें आस-पास की कोई सुध नहीं रहती । पारिवारिक जीवन इनका पूर्णतः सुखी होता है तथा सभी से निभाकर चलने में ये विश्वास रखते हैं।

लेखन, संगीत, चित्र आदि कलाओं में ये सहज ही जिज्ञासु देखे गये हैं तथा इन्हें सीखने की ओर इनका झुकाव बना रहता है। आर्थिक मामलों में ये पिछड़े रहते हैं। इनके पास धन आता अवश्य है पर ये सँजोकर नहीं रख पाते

अपितु बाँट देते हैं या शीघ्रातिशीघ्र व्यय कर डालते हैं।

आत्मविश्वास के ये धनी होते हैं तथा जीवन के प्रारम्भ में ये-जो लक्ष्य स्थिर करते हैं उस पर पहुँचकर ही दम लेते हैं।

अशुभ समय–

तिथियाँ–५, १०, १५ (दोनों पक्षों की)

वार–शुक्रवार मास–फाल्गुनप्रहर–चौथा

चन्द्रमा–१२वाँ (स्त्रियों के लिये भी १२ वाँ)

शुभ समय–

तारीखें–३, १२, २१, ३०(प्रत्येक मास की)

तिथियाँ–३, ६, ९, १२, १५ (पूर्णिमा)

वार–बृहस्पतिवार प्रहर–तीसरा

शुभ राशियाँ–कर्क, वृश्चिक।

शत्रु राशियाँ–मिथुन, सिंह, तुला।

इष्ट–

श्री जगदम्बा इनकी आराध्य मानी गई हैं। ज्योतिष सिद्धान्तों के अनुसार इनके जीवन पर जगदम्बा का सर्वाधिक प्रभाव रहता है। इन्हें चाहिए कि ये अपने घर में देवी की मूर्ति या तस्वीर रक्खें और नित्य उसकी रक्त पुष्पों से पूजा करें। यदि संभव हो सके तो निम्न मन्त्र की एक माला (१०८ बार) अवश्य फेरे जो कि सर्वसिद्धिदायिनी मंत्र है–

॥ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं हुँ फट् स्वाहा॥

निर्देश–

जब-जब भी आकाशमण्डल में बृहस्पति की स्थिति क्षीण होगी या वह वक्री अथवा अस्त होगा तब-तब परेशानियाँ तथा कष्ट बढ़ जायेंगे। ऐसे समय निम्न तंत्रोक्त मंत्र का जप करना या श्रेष्ठ ब्राह्मण से जप करवाना चाहिए।

तंत्रोक्त-मंत्र–

॥ ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः॥

जप-संख्या–१६,०००

दान–चने की दाल, पीत वस्त्र, स्वर्ण, गुड़ आदि।

इन्हें चाहिए कि ये स्वर्ण अँगूठी में पीत पुखराज तर्जनी उँगली में धारण करें जिससे कि सभी मनोरथ सिद्ध हो सकें।

◆◆◆

१६. मोतियों के आभूषण खरीदने से पहले जानिए

सुनने में तो कवि की यह कल्पना बहुत सुन्दर लगती है कि अमुक समय में बादलों से सीपी के मुख में गिरी बूँद मोती बन जाती है। लेकिन कहाँ बादलों के आंचल से गिरती हुई बूँद, कहाँ समुद्र के तल में पड़ी सीप। दोनों में हजारों फुट का फासला होता है, उस बूँद का सीप तक पहुंच पाना असंभव ही है। लेकिन सीप में बंद मोती हजारों मील का फासला तय करता हुआ नारी सौन्दर्य के साथ जुड़ जाता है। लोग तो सुन्दर दांतों की उपमा भी मोतियों से ही देते हैं।

स्वर्ण आभूषणों की लूटपाट ने स्त्रियों का झुकाव मोती के आभूषणों की तरफ मोड़ दिया है। दावतों में सोने के आभूषणों की जगह वे मोती के आभूषण पहनकर जाना ही ज्यादा पसंद करती हैं, मोती के इन आभूषणों में नारी सौन्दर्य और भी कमनीय लगने लगता है।

प्रकृति के हर जीव को यह अधिकार है कि वह अपनी रक्षा करे, होता यह है कि समुद्र के तल में पड़ी सीप में बालू कण, कोई तिनका या कोई छोटा पत्थर चला जाने पर सीप में रहने वाला कीड़ा डरकर अपनी लार उगलना शुरू कर देता है और उसे अपने घेरे में चारों ओर से लपेटने लगता है और इस तरह मोती बनने की प्रक्रिया अपने-आप आरंभ हो जाती है। इन्हीं मोतियों की तलाश में गोताखोर समुद्र तल में जा पहुँचते हैं। अब यह संयोग की बात है कि गोताखोरों द्वारा लाई गई सीपियों में से कितनी में मोती निकलता है।

'सीप में से निकाला गया सच्चा मोती कभी भी एकदम गोल नहीं होता।' यह कथन है विदेश व्यापार विकास की निदेशिका मंजू गुगलानी का। वह आभूषणों का निर्यात करती हैं, जिनमें मोतियों के आभूषण भी शामिल हैं। वह कहती हैं, 'मोती के एकदम गोल न होने के कारण भी हैं क्योंकि सीप का कीड़ा किसी योजनाबद्ध तरीके से तो इसे बनाता नहीं।'

प्रस्तुत हैं मंजू गुगलानी से मोतियों के विषय में हुई बातचीत के कुछ

अंश—

कौन-से देश सच्चे मोती के व्यापार में अग्रणी हैं ?

'बसरा, चीन, जापान व थाईलैंड।'

यदि एक आम महिला बाजार में सच्चे मोती खरीदना चाहे तो क्या वह उन्हें पहचान पाएगी ?

'किसी भी आम महिला के लिए सच्चे मोती पहचानना एक बेहद कठिन काम है। फिर भी वह जवाहरात की दुकान पर जाकर बहुत आत्मविश्वास के साथ कहे कि मुझे बसरा के सच्चे मोती दिखाइए तो दुकानदार पर उसका प्रभाव पड़ेगा और वह सोचेगा कि उस महिला को मोतियों के बारे में जानकारी है तब वह उसे धोखा देने में हिचकेगा।'

बसरा वाले मोतियों का आजकल क्या भाव है ?

'वे लगभग ४००० रुपये प्रति तोला की दर से आते हैं। चीन के सच्चे मोतियों के भाव लगभग २००० रुपये प्रति तोला है। बसरा के मोती के साथ-साथ चीन के मोती भी देखने चाहिए। दोनों में फर्क अपने आप नजर आएगा। जापान के सच्चे मोती भी क्वालिटी में बसरा के मोती जैसे ही होते हैं।'

यदि इन सच्चे मोतियों को बाजार में दोबारा बेचा जाए तो क्या इनका मूल्य वापस मिल सकता है ?

'बसरा के मोतियों के उतने ही दाम मिल सकते हैं, जबकि चीन के मोतियों के नहीं।'

सच्चे मोतियों को खरीदते समय और किन-किन बातों की जानकारी आवश्यक है ?

'कल्चर्ड मोतियों व सेमीकल्चर्ड मोतियों को भी लोग सच्चे मोती बताकर बेच देते हैं। जबकि कल्चर्ड मोती बिल्कुल गोल होते हैं और उनकी सतह एकदम चिकनी होती है। सभी कल्चर्ड मोतियों में सच्चे मोतियों से अधिक चमक होती है।'

क्या इनका मूल्य कम होता है ?

'हां, कल्चर्ड मोतियों की माला आप १५००-२००० रुपये में खरीद सकते हैं सेमीकल्चर्ड मोतियों की मला ३००-४०० रुपये में आ जाती हैं इसलिए जब भी सच्चे मोती खरीदने जाएँ तो बहुत ध्यान रखें, नहीं तो लोग

सस्ते मोतियों को ही असली मोती बताकर बेवकूफ बना देते हैं।'

मोतियों को खरीदकर किस धातु के आभूषणों में जड़वाना चाहिए ?

'जरूरी नहीं कि आप मोतियों को २२ कैरेट सोने में जड़वाकर आभूषण बनवाएं। आप १४ कैरेट का सोना लेकर आभूषण बनवाइए व उस पर २२ कैरेट सोने की पालिश करवाइए। और भी कम खर्च करना चाहती हैं तो सिर्फ चाँदी के आभूषण बनवाकर उन पर सोने की पालिश करवा लें।

कल्चर्ड मोती सच्चे मोतियों से सस्ते क्यों होते हैं ? इसका उत्तर भी जान लीजिए, दरअसल एक तालाव बनाकर उसमें मीठे पानी की सीपियाँ पाली जाती हैं। जिस साइज के मोती बनाने हों उस साइज की प्लास्टिक की छोटी-छोटी गोलियाँ सीप में डाल दी जाती हैं। अपनी सुरक्षा के लिए सीप का कीड़ा उस पर अपनी लार चढ़ाना शुरू कर देता है और आपके लिए सुन्दर गोल आकृति के मोती तैयार हो जाते हैं। अधिकतर प्लास्टिक की सफेद छोटी गोलियाँ डाली जाती हैं जिनसे सफेद चमकदार मोती मिलते हैं। रंगीन गोली डालने से मोती का रंग कुछ मटमैला हो जाता है। समुद्र के नमकीन पानी में रहने वाली सीपियों से प्राकृतिक मोती निकालना महँगा पड़ता है इसलिए कल्चर्ड व सेमीकल्चर्ड मोती बनाने की यह आसान प्रक्रिया ढूंढी गई है। भारत के दक्षिणी भाग में भी इस तरह के मोती बनाए जाते हैं।

फैक्टरियों में भी वर्षों से सिंथेटिक मोती बनने आरंभ हो चुके हैं, सिंथेटिक मोतियों की माला १५-२० रुपये में मिल जाती है। लेकिन कल्चर्ड मोतियों की माला के दाम १००० रुपये से आरंभ होकर कुछ भी हो सकते हैं। ऐसी मालाओं के भाव अनेक दुकानों पर पता करने चाहिए जहाँ पर एक ही तरह की माला सबसे सस्ती मिले, वहीं से खरीदनी चाहिए।'

मधुसूदन पटवर्द्धन बड़ोदरा में मोतियों के बहुत बड़े व्यापारी हैं। वह बताते हैं 'संस्कृत के कवियों ने यह कल्पना की थी कि वर्षा ऋतु में स्वाति नक्षत्र में सीप में पड़ी बारिश की बूँद मोती बन जाती है लेकिन इस बात का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है। होता यह है कि स्वाति नक्षत्र में समुद्र के पानी में उथल-पुथल ज्यादा ही होती है।'

इस उथल-पुथल से बालू के कण या वनस्पति के महीन तिनके सीप के अंदर चले जाते हैं, जिससे सीप के कीड़े को परेशानी होती है और वह उस पर अपना चिकना पदार्थ चढ़ाने लगता है और वह कण मोती बन जाता है।

जब तक सीप बाहर नहीं आती तब तक उस पर परतें चढ़ती जाती हैं।

प्रस्तुत हैं मधुसूदन पटवर्द्धन से मोतियों के विषय में हुई बातचीत के कुछ अंश :

क्या मोती में परतें दिखाई देती हैं ?

'आप यदि नकली मोती व सच्चे मोती को कैंची से काटें तो सच्चे मोती में परतें दिखाई देंगी तभी तो तीन-चार हजार वर्ष पुराने मोती में बहुत-सी परतें होती हैं, इसलिए वह बहुत कीमती होता है उसकी चमक भी लाजवाब होती है।'

कल्चर्ड मोती की शुरुआत किस देश में हुई ?

'इसकी शुरुआत जापान में हुई। वहाँ के एक वैज्ञानिक मिकीमोटो ने यह खोज की कि सीप में कोई गोल आकृति रखने से वैसा ही मोती प्राप्त होता है। अब तो एक सीप को खोलकर उसमें ६-७ गोलियां रखकर उसे बंद करके मोती बनाए जाते हैं। मोती जितना बड़ा होता है उतना सस्ता मिलता है, इसके विपरीत छोटा मोती महंगा मिलता है।'

कल्चर्ड मोती को लोकप्रियता कैसे मिली ?

'फ्रांस के एक व्यापारी ने कल्चर्ड मोती को सच्चा मोती बताकर बेच दिया। किसी तरह खरीददार को पता लग गया कि मोती कल्चर्ड है। उसने कोर्ट में मुकदमा दायर कर दिया। लेकिन वहाँ भी दोनों में अंतर प्रमाणित नहीं हो पाया। तब से कल्चर्ड मोती लोकप्रिय हो गए।'

मधुसूदन पटवर्द्धन का कहना है कि जिस तरह लोग पारिवारिक डाक्टर रखते हैं और उससे समय-समय पर सलाह लेते हैं उसी तरह उन्हें एक पारिवारिक जौहरी भी रखना चाहिए, जो उन्हें समय-समय पर सच्चे मोतियों के बारे में सलाह दे सके।

◆◆◆

१७. रत्नों का ऐतिहासिक विवरण

रत्नों की उत्पत्ति के बारे में विविध मत प्रचलित हैं। आचार्य वराहमिहिर ने पुराण-परम्परा का आश्रय लेकर अपनी वृहत्संहिता में रत्नाध्याय में रत्नोत्पत्ति के कारणों को वर्णन किया है—

रत्नानि बलाद्दैत्याद्दधिचितेऽन्ये वदन्ति जातानि।
केचिद्भुव स्वभावद्वैचित्र्यं प्राहुरूपला नाम।।

वराहमिहिर के अनुसार बलि दैत्य और दधीचि की हड्डियों से रत्नों की उत्पत्ति हुई। जब बलि दैत्य की अस्थियां इधर-उधर उड़कर गिरीं, तब वह जहां गिरी, उस प्रदेश में इन्द्रधनुष को चकाचौंध कर देने वाले विचित्र हीरे उत्पन्न हुए।

उनकी दंत पंक्तियां नक्षत्रों की तरह आकाश में छिटककर जहां गिरीं, वे मोतियों के रूप में परिवर्तित हो गईं। उस दैत्य का रक्त धरती पर छिटककर गिरा, वह सूर्य किरणों से सूखकर पद्मराग माणिक्य के रूप में परिवर्तित हुआ, उसके पित्त को जब नागराज वासुकि लेकर आकाश पथ से जा रहे थे तो मार्ग में उन पर गरुड़ ने हमला किया। फलस्वरूप नागराज के मुंह से वे मार्ग में ही छिटक पन्नों के रूप में परिवर्तित हुए। सिंहल सुन्दरियों के करपल्लव के अग्रभाग की तरह विस्तार पाने वाली सागर की तटवर्ती भूमि पर असुर के नील नयन गिर गए, जो नीलम में परिवर्तित हुए और मरने के समय असुर की घनघेर गर्जना से कई रंगों के वैदूर्य (लहसुनिया) उत्पन्न हुए।

चर्म के हिमालय पर गिरने से पुखराज की उत्पत्ति हुई और नाखूनों के कमलवन में पड़ जाने से वेक्रान्त का जन्म हुआ। राक्षस का वीर्य जो हिमपर्वत के उत्तर भाग में गिरा, उससे गोमेदक रत्न का जन्म हुआ और उसके अन्य अंगों के यत्र-तत्र गिरने से गुंजा, सुरमा, मधु, कमलनाल दिप्रिमय आदि रत्नों की उत्पत्ति हुई। अग्नि ने असुर के रूप को नर्मदा में ले जाकर डाला जिसमें रुधिराक्ष (अकोल) पैदा हुआ अंतड़ियों से प्रवाल विद्रुम (मूंगे) की उत्पत्ति

हुई। असुर की चर्बी जहां-जहां गिरी वहां स्फटिकादि की खानें बन गईं।

रत्नों की उत्पत्ति के संबंध में एक अन्य कथा भी प्राप्त होती है।

एक बार राजा अम्बरीष ने अपनी राजसभा में उपस्थित पंडितों एवं सभासदों से जिज्ञासा प्रकट की कि ईश्वर ने इन रत्नों को किस प्रकार उत्पन्न किया ? परन्तु उनमें से कोई भी समाधान प्रस्तुत न कर सका। तभी दरबार में महर्षि पाराशर पधारे राजा की उपर्युक्त जिज्ञासा करने पर महर्षि ने कहा राजन् ! रत्नों की महिमा पुराणों में एवं वेदों में भली प्रकार वर्णित है, मैं तुम्हें संक्षेप में रत्नों की कथा सुनाता हूं।

एक बार पार्वती ने शिवजी से प्रश्न किया कि हे प्रभो ! मणिरत्न वगैरह किस प्रकार उत्पन्न हुए तथा इन पर ग्रहों का प्रभाव किस प्रकार से है ? शिवजी ने प्रसन्न होकर पार्वती को जो कथा कही थी, हे राजन ! वही कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं।

स्वर्ग लोक के रत्न–

स्वर्ग लोग में चार मणियां हैं, जो कि निम्नरूपेण हैं—

१. *चिन्तामणि :* यह सफेद रंग की होती है। इसे स्वयं ब्रह्मा धारण करते हैं। यह सभी वांछित कार्य शीघ्र ही सम्पन्न कर देती है।

२. *कौस्तुभ मणि :* इसका रंग पद्म के समान है तथा यह स्वयं में सैकड़ों सूर्यों का प्रकाश लिए हुए है। यह रत्न सागर मंथन के समय लक्ष्मी के साथ ही निकला था, जिसे भगवान विष्णु स्वयं धारण किए रहते हैं।

३. *रुद्र मणि :* यह स्वर्णवत्, प्रकाशमान तीन रेखाओं से युक्त चमकीली मणि है, जिसे स्वयं शिव धारण करते हैं।

४. *स्यमन्तक मणि :* यह नीले रंग की, इन्द्रधनुष के समान चमकीली तथा तेजवान है। इसे सूर्य स्वयं धारण किए रहते हैं।

पाताल लोक के रत्न

विश्वस में प्रमुखत: नौ जाति के सर्प है, जिनके रंग भी अलग-अगल हैं। उदाहरणार्थ काला, नीला, हर, मटिया, श्वेत, लाल, गुलाबी, दूधिया। इन सर्पों के पास स्वयं के रंग के समान ही मणियां हैं, जो कि पाताल लोक में वासुकि नाग के संरक्षण में हैं तथा इन्हीं मणियों के जाज्वल्यमान प्रकाश में सर्प अपना समस्त कार्य करते हैं।

मृत्यु लोक के रत्न

शिव ने कहा, 'हे पार्वती ! अब मैं तुम्हें मृत्यु लोक के बारे में बताता हूं। राजा बलि की कथा से तुम भली-भांति परिचित हो। भगवान विष्णु ने वामन अवतार धारण कर उससे साढ़े तीन पैर पृथ्वी मांगी। प्रभु ने तीन पैरों से तीन लोक नाप लिए, तब आधे पैर के लिए उसके शरीर की मांग की। राजा बलि ने अपना पूरा शरीर वामन को समर्पित कर दिया। भगवान विष्णु के पद-स्पर्श से वह रत्नमय वज्रवत हो गया। तत्पश्चात् इन्द्र ने उसे अपने वज्र से पृथ्वी पर गिराया। पृथ्वी पर टुकड़े-टुकड़े होकर गिरते ही शरीर के सभी तत्वों से अलग-अलग रंग के रत्न प्रकट हुए, तब मैंने उस शरीर के अंग-प्रत्यंगों को अपने चार त्रिशूलों पर स्थित कर लिया और उस पर नवग्रहों एवं बारह राशियों का प्रभुत्व स्थापित किया। वे ही नवग्रहों के रत्न-उपरत्न आदि पृथ्वी की खानों में पाए जाते हैं तथा ग्रहों के अनुसार मृत्यु लोक में समस्त प्राणियों को शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं।

राजा बलि के शरीर से मुख्यतः इक्कीस रत्न प्रकट हुए जिनक विवरण इस प्रकार से है—

१. *माणिक :* यह बलि के रक्त से उत्पन्न हुआ।

२. *मोती :* यह बलि के मन से प्रकट हुआ।

३. *प्रबाल :* यह बलि के कपाल में शस्त्र प्रहार से जो रुधिर निकला, वह बहकर समुद्र में गिरा और उससे इस रत्न की उत्पत्ति हुई।

४. *पन्ना :* राजा बलि के पित्त से पृथ्वी पर पन्ने की खानें प्रकट हुईं।

५. *पुखराज :* यह रत्न राजा बलि के मांस से उत्पन्न हुआ।

६. *हीरा :* बलि के सिर के टुकड़ों से यह रत्न बना, जो सभी रत्नों में श्रेष्ठ रत्न कहा जाता है।

७. *नीलम :* इस रत्न का प्रादुर्भाव बलि के नेत्रों से हुआ।

८. *गोमेदक :* बलि के यज्ञोपवीत के टुकड़े हुए तो वो सूत्र मिलकर इस रत्न के रूप में प्रकट हुए।

९. *फिरोजा :* बलि की नसों से इस रत्न की उत्पत्ति हुई।

१०. *चन्द्रकांत मणि :* यह बलि के नेत्रों के आकाश से उत्पन्न हुई।

११. *धृतमणि :* यह असुर की कांख से बनी।

१२. *तैलमणि :* बलि की त्वचा से इसकी उत्पत्ति हुई।

१३. *भीष्मक :* बलि का सिर कटकर जमीन पर गिरने से इस मणि की उत्पत्ति हुई।

१४. *उपलक मणि :* दैत्यराज के कफ से इसका जन्म हुआ।

१५. *स्फटिक मणि :* बलि के पसीने से इसका प्रादुर्भाव हुआ।

१६. *पावस :* बलि के फटे हुए हृदय से इसका जन्म हुआ।

१७. *उलूक मणि :* बलि की जीभ से इसकी उत्पत्ति हुई।

१८. *लाजावर्त मणि :* असुर के केशपुंज से यह मणि बनी।

१९. *मासर मणि :* बलि के मल से इसका जन्म हुआ।

२०. *ईसब संग :* बलि के वीर्य से इस मणि की उत्पत्ति हुई।

इस तरह मृत्यु लोक में २० रत्न और ८४ मणियों का बलि के शरीरांगों, तत्त्वों आदि से प्रादुर्भाव हुआ।

◆◆◆

१८. मोती एवं स्वर्ण की जानकारी

हीरे को पहले कई प्रकार की काटों में (भागों में) तराशा जाता था। आजकल इसे ज्वलंत काट में तराशा जाता है। इस काट से हीरे में अनोखी चमक-दमक आ जाती है। प्राचीन काल में स्वर्ण आभूषणों का सर्वाधिक इस्तेमाल फराहों के काल में हुआ। उस समय मिश्रवासी सोने-चाँदी के गहने बहुलता से पहनते थे। देवालय आभूषणों की कला अत्यंत श्रम बहुल होती है। एक आभूषण बनाने के लिए दस कारीगरों और पन्द्रह दिन की आवश्यकता होती है। लिहाजा आभूषणों में प्रयुक्त होने वाली धातु की कीमत के बराबर ही उसकी बनाई की लागत बैठती है। मगर इस तरह के आभूषणों की लोकप्रियता देखते हुए उनके दामों से मांग पर ज्यादा असर नहीं पड़ता।

मोतियों का अपेक्षित घनत्व जीरो प्वाइंट से लेकर दो प्वाइंट आठ तक होता है। गुलाबी मोतियों का अपेक्षित घनत्व अधिक होता है।

मोतियों की कठोरता तीन प्वाइंट से चार के बीच होती है।

प्राचीन काल में स्वर्ण आभूषणों का इस्तेमाल अत्यधिक महत्वपूर्ण था। सोने को शुभ सतिया, ओइम, लक्ष्मी की प्राप्ति मानकर अंगीकार किया जाता था। जिससे लाभ मार्ग प्रशस्त होता था।

पुखराज को गुरु रत्न कहा जाता है।

असली पुखराज एल्यूमीनियम का फ्लूओ सिलीकेट है। फ्लोरिन तत्त्व से बने थोड़े से रत्न खनिजों में पुखराज की गिनती होती है।

♦♦♦

१९. रत्न विविध पहलू

१.	मेष	लाल तामड़ा और सभी लाल नग
२.	वृष	माणिक्य, मोती, मूंगा
३.	मिथुन	पन्ना, पुखराज, हीरा
४.	कर्क	नीलम, गोमेदक
५.	सिंह	वैदूर्य (लहसुनिया)
६.	कन्या	हीरा, नीलम और अम्बर
७.	तुला	जेड मोती, लहसुनिया
८.	वृश्चिक	काला मोती, काला हीरा
९.	धनु	हीरा, पुखराज, काला मोती
१०.	मकर	हीरा और चमकीले नग
११.	कुम्भ	फिरोजा या नीले रंग के नग
१२.	मीन	पुखराज, नीलम, फिरोजा

राशियों के हिसाब से जनवरी-फरवरी माह के लिए यह रत्न शुभ हैं। शंका होने पर किसी ज्योतिषी से सलाह ले सकते हैं।

♦♦♦

२०. रत्नों की उपयोगिता

प्राचीन काल में मुगल बादशाह अकबर को रत्नों का बड़ा ही शौक था। उसके दरबार में नवरत्न थे। यह सभी दरबारी थे। लेकिन अकबर इन्हें रत्नों से कम नहीं मानता था।

भांति-भांति के रत्न एकत्रित करना, उनके विषय में जानना, समझना-सोचना, उसकी प्रवृत्ति में शामिल था।

एक बार एक बहुत बड़े ज्योतिषी प्रभासागर अकबर के दरबार में पधारे।

'पधारिये ज्योतिषी महाराज।' अकबर ने प्रभासागर का भली-भांति आदर-सत्कार किया। उन्हें बैठने के लिए आसन दिया और फिर पूछा—'रत्नों के विषय में कोई नई चीज लाए हों तो बताइए।'

प्रभासागर बेहद गंभीर थे।

चंद पलों तक शांत रहे।

फिर बोले—'महाराज ! मैं आपके लिए एक अद्‌भुत रत्न लाया हूं।'

'दिखाइए।' अकबर ने कहा।

प्रभासागर ने रत्न दिखाया।

वह रत्न नहीं बल्कि पत्थर का एक टुकड़ा था।

अकबर को रत्नों की काफी पहचान थी।

वह क्रोधित लहजे में बोले—'प्रभासागर जी, यह तो कोई रत्न नहीं बल्कि पत्थर का टुकड़ा है। हम ऐसे मजाक की क्या सजा देते हैं ? जानते हैं ना आप।'

प्रभासागर शांत लहजे में बोले—'आपने बिल्कुल ठीक फरमाया महाराज! वास्तव में ही यह पत्थर का टुकड़ा है। लेकिन किसी रत्न से कम नहीं है।'

'ज्योतिषी जी। वह कैसे ?' अकबर ने शांत लहजे में पूछा।

प्रभासागर बोले—'महाराज ! मंदिर में रखी हुई मूर्ति भी पत्थर की ही होती है लेकिन फिर भी उसकी पूजा की जाती है। इसी प्रकार मानो तो पत्थर

भी रत्न हो जाता है। ना मानो तो रत्न भी कांच का एक टुकड़ा है।

प्रभासागर की बात सुनकर अकबर को बीरबल के साथ हुआ एक दृष्टान्त याद हो आया।

एक बार की बात है। अकबर ने बीरबल से पूछा—'फटे जूते का क्या इस्तेमाल किया जाता है ?'

बीरबल ने सोचकर जवाब देने के लिए कहा।

और बीरबल ने ऐसा कुछ कर दिखाया कि जूते की पूजा होने लगी।

अकबर को सोच में डूबा देख प्रभासागर ने पूछा—'क्या सोचने लगे महाराज—क्या अब भी मुझे और कुछ समझाना बाकी रह गया है।''

'नहीं प्रभासागर जी! आपने आज हमारी आंखें खोल दीं। आज हम जान गए। जिस पर विश्वास किया जाए वही सच्चा रत्न होता है।' कहकर अकबर ने गले में से मोतियों की माला उतारकर ज्योतिषी प्रभासागर को भेंट स्वरूप दे दी।

(इस प्रसंग का मतलब यही है कि कभी-कभी पत्थर का एक मामूली-सा टुकड़ा भी किसी रत्न से कम नहीं होता।)

◆◆◆

हमारे अन्य प्रकाशन :

कौटिल्य अर्थशास्त्र
बोध कथाएं
मनु स्मृति
हितोपदेश
पचतंत्र
लोक व्यवहार, मैत्री कला और भाषण
विदुर नीति
सिंहासन बत्तीसी
चाणक्य सूत्र
चाणक्य नीति
बेताल कथाएं
भतृहरि शतक
जातक कथाएं-1
जातक कथाएं-2
तेनालीराम की कहानियां
नीति संग्रह
सर्वोत्तम सूक्तियां
लतीफ-ए-अकबर-बीरबल
लतीफ-ए-शेखचिल्ली
दास्तान-ए-तोता मैना

हमारे अन्य प्रकाशन :

साई रामायण
लाल किताब और कष्ट निवारण (उपाय, टोटकों सहित)
रुद्राक्ष और रत्नमाला
सम्पूर्ण नक्षत्र ज्योतिष शास्त्र
सम्पूर्ण नवग्रह ज्योतिष शास्त्र
शनि देव महिमा
क्रिकेट सीखिए
पथिकोद्गार एवं संत वचन
श्री वैभव लक्ष्मी
गायत्री महात्य और साधना
ऋग्वेद
सामवेद
यजुर्वेद
अथर्ववेद
भारतीय वास्तुकला
लाल किताब प्रथम (पेपर बैक)
लाल किताब द्वितीय (पेपर बैक)
भृगु संहिता
चमत्कारिक शक्तियां
तावीज और मंत्र शक्ति
स्वर्ण मंजूषा और रत्न शास्त्र
होम टेलरिंग कोर्स
अपटूडेट स्माल स्केल इंडस्ट्रीज

स्वेट मार्डन

* सुखी जीवन
* संकल्प शक्ति
* सुख का आधार मेहनत
* व्यक्तित्व का विकास
* आप क्या नहीं कर सकते
* भागो नहीं, दुनिया को बदलो
* उठो महान बनो
* उन्नति कैसे करें
* अपने को पहचानो
* अलौकिक शक्तियां
* चिन्ता हटाओ सुख पाओ
* जीना सीखो
* सफलता की कुंजी
* आरोग्य की कुंजी
* करोड़पति कैसे बनें ?
* जो चाहें सो पायें
* आत्मविश्वास का चमत्कार
* जिन्दगी जीने के लिए
* नई राहें
* समय को पहचानो

A.H.W.
SAHNI SERIES

रत्न ज्योतिष

रत्नों का मनुष्य जीवन पर प्रभाव पड़ता है। रत्न ग्रहों के अनुचित को टालने और उचित प्रभाव को बढ़ावा देते हैं। जिस प्रकार किसी रत्न की परीक्षा कोई जौहरी ही कर सकता है, उसी प्रकार किस ग्रह के लिये कौन सा रत्न उपयोगी होगा, उसी रत्न का क्या प्रभाव है, यह कोई विद्वान ज्योतिषि ही बता सकता है। श्री नारायण दत्त 'श्रीमाली' इनके विज्ञ जानकार है। उनकी ही रचित यह अनमोल पुस्तक प्रस्तुत है।

60/-

एकमात्र वितरक.
साहनी पब्लिकेशन्स
E-mail : sahni@sahnipublications.com
Website : www.sahnipublications.com